भोजपुरी ग्राम्य गीत

संग्रह कर्त्ता

डब्लू० जी० आरचर, आई० सी० एस०

तथा

संकटा प्रसाद

सम्पादक

संकटा प्रसाद



मुद्रक—

पटना लॉ प्रेस

पटना।

सदाशिव प्रसाद

को

सहायक—

श्रीमती फुलझारी देवी
श्रीमती सुधरा देवी
श्रीमती नन्द कुमारी देवी
श्रीमती सुन्दर देवी
श्रीमती रुक्मिणी देवी
श्रीमती जानकी दासी
श्रीमती रामानुज दासी
श्रीमती हिरामन देवी
श्रीमती कमला देवी
श्रीमती बुचुन देवी
श्रीमती सरस्वती देवी
श्रीमती रूना देवी
श्रीमती सरस्वती देवी
श्रीमती श्यामा देवी
श्रीमती सुशीला देवी

उपर्युक्त महिलाओं ने गीतों को एकत्रित करने में हमें पूर्ण सहायता दी हैं। अतएव हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

संग्रह-स्थान .... शाहाबाद

संग्रह-क्षेत्र .... कायस्थ-परिवार

संग्रह-काल १९३९–१९४१

विषय-सूची

सगुन

सगुन

१

पहीला सगुन दही माछर रे
उपरा डन्टाईल पान सगुनवा
भल पावल लगनीया अकुताईल
ताही सगुने अईहे राम चन्दर दुलहा
हे सीता देई सुहईश्रा केरा गांव
सगुनवा भल पावल लगनीया अगुताईल

२

ए हाटे जाहु वाटे जाहु राम चन्द्र दुलहा रानी रउतिन पूछेले
ए के तोरा हृदया सवांरल अगर चन्दन लिये दवना मरुआ लिए
बाबा जे हमरा राजा दसरथ अम्मा कौशल्या देई
उन्हीं मोरा हृदया सवांरल अगर चन्दन लिए दवना मरुआ लिए—

३

आगे आगे आवेले श्री राम चन्दर, पीछे पीछे लछमण रे
तेकरा पीछे आवेले राजा दसरथ हाथ चवर लिए—
शिर चवंर ढुराई दसरथ नग्र बाहर किजीए
उ जे वायें दहिने शिर म्स्त खरई सगुन उत्तम पाईए
उ जे वाजु वाजु वधाव बहुविधी घन्ट घुघुरु घनरेवे
उ जे रथ उपर राम चढ़ले दांत विजुली चमके—
ए आगे आगे आवेले कवन दुलहा पीछे पीछे कवन भईआ ए
तेकरा पीछे आवेले कवन लाल शिर छत्र चवंर लिए

[२]

तिलक

तिलक

४

आजु जनकपुर से तिलक आयो, तिलक लेहु ना चढ़ाई ए माई
आजु जनकपुर से तिलक आयो, तिलक लेहु ना चढ़ाई ए माई
तड़पी के बोले ले बाबा हो कवन बाबा, तीलक है बड़ा थोर ए माई
आज जनकपुर से तिलक आयो, तिलक लेहु ना चढ़ाई ए माई
तिलक हटावहु जल्दी उठावहु मोरे बाबू रही हें कुआर ए माई
आजु जनकपुर से तिलक आयो, तिलक लेहु ना चढ़ाई ए माई
आज जनकपुर से तिलक आयो ॥

शिव विवाह

शिव विवाह

५

बाजत आवेला ढोल ढमारा हो हनईत आवेला नीशान
ए कहवां के ए दईया झूमत आवेला ई वर तेजलो ना जाए
गउरी ले मैं उड़व गौरी ले मैं बुड़व गौरी ले मैं खिलवो पाताल
ए अईसन तपसीश्रा के गउरी नाही देईवो
बलु गौरी रही हें कुआंर ए–
जटा देखी डेरइबु ए बेटी भभुती देखी जर छाई
ए सवती देखी मनही झुरईबु कवना विधि भुभुतबु राज ऐ
जटा मोरे लेखे अगर चन्दन भभुती मोरा अहीवात ए
सब तो मोरा लेखे सखीया सलेहर एही विधि भुभुतव राज ए
जनी अम्मा उड़हु जनी अम्मा बुड़हू जनी अम्मा खीलहु पाताल ए
पुरवो जन्म केरा लिखल महादेव से कईसे मेटन हार ए–
उठहु मदागिन पहीरु पिताम्बर तपसी के लेहुना परीछु ए
तीनों लोक के ई ठाकुर महादेव इनके से होई विवाह ए

६

शिवजी चलले बिआहन रे धईले बावन रूप।
अब नाहीं शंकर बिअहब मोरी गौरी नादान ॥ अब०
माथे मौरी ना देखो रे देखो जटा फहराई।
अब नाहीं शंकर बिअहब मोरी गौरी नादान ॥ अब०
काने मोती वो ना देखो रे देखो कारी कारी बिछी। अब०
गले कंठ वो ना देखो सर्प के हार। अब०
अंगे जोड़वो ना देखो रे देखो भभुती चढ़ाई। अब०
पावें मोजवो न ना देखो रे देखो फटली बेवाए। अब०
साथे बजवो ना देखो रे देखो देखो डमरू बजाए। अब०
लेई चढ़ावे चित्र मन्दील रे लावे वज्र केवाड़। अब०
मुनि जे चलले बुझावन रे सुनु हे पती नारि।
इहे वर त्रिभुवन नाथ मिलले बड़ी भाग। अब०
मोरी गौरा नादान अब नाहीं शंकर बिअहब।

७

बरहा बरीस पर शिवजी जे अइलन गउरा से मांगेले बीचार हो।
जब हो गउरा देई सूरुज माथ नावली सुरुज भइले अलोप हो।
सूरुज बीचरवा गउरा हम नाहीं मानबी तुलसी बीचरवा मोही देहुँ हो।
जब हो गउरा देई तुलसी हाथ दीहलनी तुलसी गइली पता झारी हो।
तुलसी बीचरवा गउरा हम नाहीं मानबी गंगा बीचरवा मोही देहुँ हो।
जब हो गउरा देई गंगा हाथ दीहलीनी गंगा परीय गैले रेत हो।
गंगा बीचरवा गउरा हम नाहीं मानबी अगीनी बीचरवा मोही देहुँ हो।
जब हो गउरा देई अगीनी हाथ दीहलीनी अगीनी गइली मुरुझाई हो।
अगीनी बीचरवा गउरा हम नाहीं मानवी सरप बीचार मोही देहुँ हो।
जब हो गउरा देई सरप हाथ लीहलीनी सरप बइठेले फेटा मारी हो।

फाठहु धरती समाइ बलु जइतों हे शिवजी के बोली नाहीं सोहाइ हो।

भगींश्रा धतुरवा गउरा हम पोसी पीहीला माती के मागीला बीचर हो।

८

फूल लोढ़े चलली गौरा देई वोही फुलवारी।
बसहां चढ़ल महादेव लावेले गोहारी।
केकरी बारी रे भोरी केकरी दुलारी।
केकरे दरश के गउरा देई अइलू फुलवारी।
बाबा के बारी रे भोरी अम्मा के दुलारी।
भैया के दरपवे महादेव अइली फुलवारी।
तोड़ी देबो डाल रे दउरा फुल छीतराई।
रोवत कनत गउरा देइ घरे चली जाई।
उहवां से अइले गउरा देइ बैठी मन मारी
अम्मा जे पूछे गउरा देइ काहे मन मारी।
फूल लोढ़े गैली हो अम्मा बाबा फुलवारी।
बसहा चढ़ल महादेव लावेले गोहारी।
तोड़ी देले डाल रे दउरा फुल छीतराइ।
रोवत कनत ए अम्मा घरे चली आई।
जरो तोरा अकीली हे गउरा जरो तोरा ज्ञान।
अपन तपसिया हो गउरा तुहुं नाही चीन्हलू।

९

हाथ ले लोटिया काँधेला धोतिया अैले गउरा देइ के बाप ए।
अगना बहारत चेरिया लउड़ीश्रा, ऐले गउरा देइ के बाप ए॥
झूठ ही चेरिया रे झूठ लउड़ीया झूठ सहरवा के लोग ए।
असी ही कोस मोरा नइहर बसे, से कैसे आवेले आजु ए॥
झाड़ा रे झरोखा चढ़ी गउरा नीरखे दुअरा जनइया रीखे ठाढ़ हो।

साच ही चेरिया रे साचे लउड़िया साच सहरवा के लोग ए ॥
आवहुँ बेटी हो जांघ चढ़ी बैठहुँ दुख सुख कह समुझाइ ए ।
कवन कवन दुख तोहरा हे बेटी से दुख कह समुझाई ए ॥
खाए के थारी नाहीं अचवे के झारी नाहीं एक सहस्र मुख गारी ए ।
सुतही के बेरिया बीरही मोही मारेले से बीरह सहलो न जाइ ए ॥
उहवा से अइले रीखे शिव भीरी ठाढ़भइले सुनी शिव अरज हमार हो ।
दीन दश हे शिव गउरा बिदा करहुँ रोवे मंदागिनी हीअरा फार हो ॥
उठहुं गउरा रे साजहुँ दउरा आठो अंग गउरा नेतवे ।
बोहरीह जस गउरा सासुर जासु ॥

१०

ऊंच लीलटवा गउरा देइ आंखी रतनारी ।
कैसे कैसे रहबु ए बेटी तपसिया के साथे ॥
तब तो बीअहलू ए अम्मा तपसिया के साथे ।
अब का पूछेलू ए अम्मा गउरा भेद लाई ॥
भउजी जे रहीतू ए अम्मा कही तो समुझाई ।
लाज की बतिया ए अम्मा कहलो न जाई ॥
भउजी से कहबू ए बेटी ठठवा उड़ई हैं ।
हमरा से कहबू ए बेटी हृदया लगाइबो ॥
भंगिया पीसत ए अम्मा हथवा खीअइले ।
धतूरा पीसत हो अम्मा घूमे आठो अंग ॥
जटवन जटवन अम्मा बीछूवा बीअइले ।
पटीअन पटीआ हो अम्मा सरप फुफकारे ॥
अइसे अइसे रहली हो अम्मा तपसीया के साथे ।
खईबो मों माहुर बीरवा लेसबो मो आगी ॥
जोगिनी होइबो ए लोगे एही धीअवा लागी ।
जनी अम्मा माहर खाहुँ जनी लेस आगी ॥
पूरुब लीखलका ए अम्मा मेटलो ना जाई ।

११

काच ही बांस कटाइला मड़वा छवाइला ऐ।
आरे शिव रउरा चलली दुसर विवाह करे हमरा के काई सँउपी ऐ।
माई के सँउपीला एकली बहीनी सँउपी ऐ
आरे गउरा सभ अभरनवा सउपी जाइला एजा छत्री राज नाही ऐ—।
माई रउरी बुढ़िया बहीनी ससुरारी बाड़ी—ऐ
आरे शिव भार झोकइबो अभरनवा त हमहुँ जवरे जइबो—ऐ
जउ तुहुँ आहो गउरा तुहउं जवरे जैबु ऐ।
आरे गउरा सभ अभरनवा धरी देहुँ लोकनी बनी के चलीचल हो।
आरे आरे काला बादल तोके देबो लाल चादर ऐ।
आरे माई शिव चलले दोसर बीआह करे आंधी पानी घेरी आवे ऐ।
आंधी अंधकाल एले पानी छछकाल अइले शिव मोरे भीजत अइले रे।
आरे गउरा खोली देहुँ सोबरन केवड़िया त हम रउरानींदी सोइब हो।
दीया नाहीं तेलवा बोरसी नाहीं आगी बाड़े ऐ।
आरे शिव खींची लेहु भरी मुट्ठी खरइत वोरी तर शिव सोइ रह ऐ—
दीया बाड़े तेलवा बोरसी बाड़े आगीआ हुँ ऐ—
आरे गउरा खोली देहुं सोबरन केवड़िया त हम रउरा नीदी सोइब हो

१२

चन्दन काट कटाईला पीड़ई गढ़ाईला—ऐ
हे तेही चढ़ी बइठेले महादेव घुरुमी घुरुमी गीरे ऐ
नहाइ धोवाइ शिवजी अइले अंगनआ बीचे ठाढ़ भैले ऐ
हे कँहवा बाड़ी गउरा देइ भोजनी बनावसु ऐ
अदहन दीहली गउरा देई पइचा खोजे चलेली ऐ
हे सगरे नगर घुमी अइली पइचवो ना मिलेला ऐ
अदहन देल ढ़रकवली ए चउकठ चढ़ वैठेली ऐ
हे आग लगहु एही नगरी पइचवोना मीलेला ऐ
रोवेले माई मदागिनी लट धुनीय धुनी ऐ

हे गउरा ही धीआ के अभाग भीछुक वर मीलेला ऐ।
सोने खड़उआ महादेव चटर चटर करे ऐ।
हे कहवा ही बाड़ी गउरा देइ कोठीलवा आन खोलसु ऐ।
हे भभकी भभकी चउरा गीरेला वीपती पराइल ऐ।

१३

मथवा जे अइले महादेव बड़े बड़े जाटा।
कंधवाले अइले महादेव बघीनी के छाला।
सुन ए शिव आजु हम अइबो गउरा देई बाबाजी के चोरी।
काल्हु हम आइब गउरा देई साजन लोग बटोरी।
सुन हो शिव जब रउरा आईब महादेव साजन लोग बटोरी।
हमके ले आइब महादेव पाट केरा चोली।
सुन ए शिव पाट केरा चोलिया गौरी देई।
कवनो बुनियाद हमहुँ ले आइब गौरा घुंघरू लगाई।
सुनि हो शिव जब रउरा ले आइब महादेव घुंघरू लगाई।
बाबा मोरा निरधन दहेज नाहो दीहें।
भइया मोरे निरधन दहेज कहां पईहें, सुन ए शिव।
बाबा तोरे निरधन दहेज कहां पइहें।
नईहर लागी गउरा देई रोव जनी।
सुन ए शिव नईहर लागी महादेव रोवे सब कोई।
विरहा के बतिया महादेव बोले जनी कोइ सुनी ए शिव।
नईहर लागी गौरा देइ रोवे सब कोई।
विरहा के बतिया गौरा बोले सब कोई सुनी ए शिव।
लतरी के दलिया ए शिव कोदई के भात।
लाजे ना परोसस गउरा देइ रउरो महतारो सुनी ए शिव।
हमहुँ उघटबी महादेव भंगीआ के झोरी सुनी ए शिव।
खाये के ना थारी महादेव अचवेके झझरी।
सुते के ना पलंगरी महादेव ठेस जनी बोली सुनी ए शिव।

१४

ऊँच मड़उआ महादेव नीची रे दुआरी।
तनी एक नीहुर महादेव परीछो मो तोहीं।
सुन हो शिव परीछे बाहर रे भइली सासु हो मंदागिनी।
गोहुमन सपवाँ छोड़ेला फुफकारी।
सुनी हो शिव भले सासु भले हो सासु गैलु डेराई।
आगे के बसतआ हो सासु से हो ना संभाल।
सुन हो शिव मड़वाही बैठल महादेव गैले अलसाई।
अगुठनी मारी गउरा देई लीहली जगाई।
सुन हो शिव अंगूठा के मरले महादेव गैले रीसाई।
बहीआं लफाई गउरा देई लीहली मनाई।
सुन हो शिव बीअहे की बेरिया महादेव कुछउ ना पाई।
गवना के बेरिया महादेव सभ कुछ पाई।
सुन हो शिव बाबा दी—हें हाथी रे घोड़ा भईया धेनु गाई।
अम्मा कन्हावर दीहें भौजी बहलोला।
सुन हो शिव जेंवे के थारी महादेव अचवेके भारी।
सुते के पलंगरी महादेव ओढ़े के रजाई।

१५

केकरा ही खोइछा अछत चन्दन और बेल पतर ए।
हे केकरा ही हथवा नीरंजन शिवजी के पूजन ए।
गउरा के हाथ अछत चन्दन और बेल पतर ए।
शिवजी के हथवा नीरंजन शिवजी के पूजन हो।
भाँग धतूर शिव के भोजन मृगछाला डासन ए।
हे बसहा बैल असवार त शिवजी के पूजन ए।
रोवेली माई मंदागिनी लट धुनीय धुनीय हो।
हे गउरा ही धीआ के अभाग भीछुक वर मीलेला ए।
चुप रहुँ माई मंदागिनी जनी रोइ मरहुँ हो ए।
पुरुब जनम केरा लीखल से हो नाहीं मेटेला ए।

१६

कहंबा से अइले ए जोगी कहाँ कइल जाले, केकरा दुअरवाए
जोगीडाले मृगछाला ।
पूरव से अइली मंदागिनी पच्छीम मुहले जाली रीखे दुअरवा
महादेव जी से मृगछाला ।
कहां हम जाइब महादेव कहां ले बइठाइब कहां ले भोजन मैं जोगी
के कराइब ।
मन्दील बइठाइब मंदागिनी अमृत भोजनीआ मंदागिनी धीआ
के कराइब ।

१७

तनी एक काजर लिखलो मैं कोहबर शिव लीखलो मन लाइ ए ।
ताही पइसी सुतेले महादेव शिव जवरे गौरा देइ रानी ए ।
अगूसूर ओलरी ससूर जी के धिअवा शिव रउरा पीठी गरभी बहुत ए ।
एतना बचन जब सुनली गौरा देई रानी शिव खाट छोड़ी भुइआ लोटी ए ।
अगना बहारत चेरिआ लखी गइली शिव सरहज पहुना हंकार ए ।
आवहु सरहज हाथ लेले बीड़वा शिव ननद चरित्र देखी आयी ए ।
अइलीनी सरहज हाथ लेले बीरवा शिव भइली केकर बन ठाढ़ ए ।
उठहु ननद हो नाथ पसारहु शिवि अपने बजाइ ए ।
कइसे मो उठों भउजी नाच पसारहु शिव वेरी वेरी बोलेला कुबोली ए ।

१८

कांच ही बांस के डगरिया ए गौरा तोरा बुधि ए ।
फुल लोढ़े चललू ए गौरा ओही फुलवाड़ी ।
बसहां चढ़ल महादेव लावेल गोहारी ।
लोढ़ल फुलवा महादेव देले छितराई ।

रोअत कानत गौरा देई घरे चली आई।
माइ जे पूछेली ए बेटी काहे मन मारी ए।
लोढ़ल फुलवा ए अम्मा योगी देले छितराई ए।
कांच तोरी उमीरीआ ए गौरा कांच तोरी बुधि ए।
कोठली अटरिया ए गौरा मन ही न भावे।
योगी के मड़इया ए गौरा कैसे मन भावे।
तब त बिअहलु ए अम्मा योगिआ भिखारी ए।
अब का पूछेलू ए अम्मा गौरा भेद लायी ए।
पर पकवान गौरा मन ही न भावे।
योगिया के भिक्षवा गौरा कैसे मन भाई।
पर पकवनवा ए अम्मा दिन दुई चारी।
योगिआ के भिखिआ ए अम्मा जनम सनेही।
लहगा पटोरवा ए गौरा मनही न भावे।
योगिया जेखवा ए गौरा कइसे मन भाई।
लहगा पटोरवा ए अम्मा दिन दुई चारी।
योगिआ के गेरुअवा ए अम्मा जनम सनेही।
तब त बिअहलु ए अम्मा योगिआ भिखारी।
अब का पूछेलू ए अम्मा गौरा भेद ए।

१६

बसहा चढ़ल शिव घुरुमत आवेले झोरिन आवेला भभूत ए।
सरप अनेक शिव के कर पर लोटेला लोग देखहूँ बरीआत ए।
परीछे बाहर भेली सासु मंदागिनी सरप छोड़ेला फुफकार ए।
लोढ़ा पटक लीनी सूप पेबर लीनी पाछा पराइल जाइ ए।
कलसा के वोते होके गउरा बिनती करे शिवजो से अरज हमार ए।
तनी एक ए शिव भेख उतार हुँ नैहर लोग पतीआसु ए।
चन्दन चढ़वलनी भभुती उतरलन जल से कइले असनान ए।
तीनु भुअन मह इहो शिव शंकर इ वर मिले बड़ी भाग ए।

कहवा जे गैलिनी माइ मंदागिनी अब रूप देखसु हमार ए ।
गाइ के गोबर अगना लीपाइला गज मोती चउका पुराइ ए ।
ताही चउका बइठेले इशर महादेव जाटा दीहले वारे मार ए ।

२०

पुरइनी पात पर सुतेली गउरा देइ सपना देखेली अद्‌भुत हो ।
पाव परोसिन तुहु मोरी गोतिनी सपना के करना बिचार हो ।
मोरय देश बजन एक बाजेला केकर होला बीआह हो ।
तु हउ सेआनी गौरा तु हउ सेआनी तु हउ पंडीतवा के धीअवा हो ।
मोरय देश बजन एक बाजेला शिवजी के होला बीआह हो ।
उठहुँ गउरा देइ पहीर पटोरवा सब त परीछी वलु लेहुँ हो ।
कीया हर बहीनी रे दर रे देआदिनी कीया हर पुत बहुआर हो ।
हड़ीआ उघारी जब देखली गउरा देइ इत हइ बहीनी हमार हो ।
तोहरा के बहीनी हो वर नाहीं मिलेला भइलु तु सवती हमार हो ।
नीमन असीस मोही दोह हो बहीनी जुग जुग बाढ़ो हो एहवात हो ।
मंगीआ के जुड़तुहुँ रहीह ए बहीनी कोखिआ के होखिह वी हुन हो ।
सार पर सी बहीनी गोबर कढ़ीह करीह रसोइया मन लाय हो ।
हमरा लड़ीकवा खेलइह हो बहीनी शिवजी के सेज जनी जाहुँ हो ।

२१

योगी एक वर सुन्दर माथे तीलक शोभे ए ।
आरे हाथे लंवगिया के बटू त भस्म चढ़ावेला ए ।
कंचन थार भरी मोतिआ छीपा भरी चन्दन ।
आरे लेहू योगी भीख छोड़ मोर आंगन ए ।
का करबो थार भरी मोतिआ का करबो छीपा भर चन्दन ए ।
आरे रउरा घरे गौरा कुअंर तो हमसे बिआहहू ए ।
चुप रह ए जोगी चुप रह बचन संभाल ए ।
सुने पइहें बाबा जनइआ रीखे गड़ुआ गड़ा दीहें ।
का करीहें बाबा जनइआ रीखे गड़ुआ गड़ाइ दीहें ।
रउरे गउरा गइली फुलवारी बचन हमसे हारी अइली ए ।

मचीश्रा बइठली मंदागिनी सुन बेटी गौरा रानी ए।
बेटी का करे गइलू फुलवारी बचन तुहु हारी अइलू ए।
गौरा सुन, माता रानी हमरा करमवा वर योगिया दूसर कहां पाइब ए
सभवां बैठल जनइया रीखे रानी अरज करे हो।
राजा रउरे गौरा बाड़ी कलयुगवा अपने वर मांगेली हो।
बोले ले राजा जनइया रीखे सुन मोरी रानी ए।
रानी मोरा गौरा असली भवानी योगिश्रा वर माँगेली ए।

२२

कहंवा से शिव अइले भले शिव अइले।
कहंवा लिहले बसेड़, भले शिव अइले।
पूरब से शिव अइले भले शिव आवेले।
पच्छीम लिहले वसेड़ भले शिव आवे ले।
गौरा जोगे मंगलो मैं सेनुरा से हीना ले अइलन ए।
शिव देले विभूती चढ़ाई भइले शिव अइले ए।
गौरा जोगे मंगलो मैं गहना भले शिव अइलन ए।
दे गइले रुद्र के माला भले शिव अइलन ए।
गौरा जोगे मंगलो मैं चुनरी भले शिव अइलन ए।
दे गइले मृगा के छाला भले शिव अइलन ए।
गौरा जोगे मंगलो मैं बाजा भले शिव अइलन ए।
दे गइले डमरू बजाइ भले शिव अइलन ए।
गौरा जोगे मंगलो मैं पालकी भले शिव अइलन ए।
ले गइले बसहा चढ़ाई भले शिव अइलन ए।

२३

जब हो महादेव विअहन चलले।
भूत बैताल शिव लेले संग लाइ॥
अइसन महादेव मोहे ना सोहाइ।
जब हो महादेव गैड़न अइले।

गेड़न आवत महादेव बँसीआ बजाई ।
अइसन महादेव मोहे ना सोहाइ ॥
जब हो महादेव दुअरा भीरी अइले ।
दुअरवा आवत शिव डमरू बजाई ॥
अइसन महादेव मोही न सुहाई ।
जब हो महादेव मड़वा भोरी अइले ॥
मड़वा घुमत महादेव लात्रा घुमी खाई ।
अइसन महादेव मोहे ना सोहाई ॥
जब हो महादेव कोहवर भीरी आई ।
कोहवर आवत महादेव गैले खीसीआई ॥
अइसन महादेव मोहे ना सोहाई ।

२४

गाइ के गोबर अगना लीपाइला गज मोती के चउका पुराइ ।
ताही चउका बइठेले इसर महादेव बेदीन छूटेला भोरी ॥
आहो शिव बारी बुधी रउरी ।
आहो शिव भुली ना परी गती रउरी ॥
सब सखीया मिली बोलेली काहु न लगावेला चोरी ।
गउरा के नइहर दुख दरीदर गउरा चोरावली भोरी ।
आहो शिव बारी बुधी रउरी ।
जो हम भोरी बजरी भरी देखो हमरो मुहे भरा ॥
अहो शिव बारी बुधी रउरी ।
इहो कीरिआ गउरा हम नाही मानवी ॥
अगीनी बिचार मोही देहु ।
अगीनी लेइ शिव अंगना धरावेले गउरा से ले ले बिचार ।
अहो शिव बारी बुधी रउरी ॥
जब हो गउरा देइ अगीनी हाथ लावली अगीनी गैली भोरी
अहो शिव बारी बुधी रउरी ॥

नारद के मुंह कारीख लागेला महादेव गइले लजाइ।
अहो शिव बारी बुधी रउरी ॥
इहो कीरिया गउरा मैं ना पतीआइबी धरती बिचार मोही देहु ।
जब हो गउरा देइ धरती समइलीनी लपकी धरेले शिव बाही।
अहो शिव बारी बुधी रउरी ।
भांग खइला हम बउराइला गउरा के लाइला चोरी॥
अहो शिव भुली ना परे गत रउरी।

२५

गंगा के तीरे तीरे जमुना के तीरे तीरे खुखड़ी रंगीया रे
रंगी इसर करेले बीआह।
परीछे बाहर भइली सासु मंदागिनी सरप छोड़ेला फुफकार ॥
लोढ़ा पटकली सुप पेवरली पाछा पराइल सासु।
धीआ ले मैं उड़वी धीया ले मैं बूड़बी धीया ले मैं खीलबो पताल ॥
अइसन तपसिया के धिया ना मैं देवो बलु गौरा रहीहें कुआंर।
मुअहु नउआ रे तोरी नउआइया मूअहूं ब्राह्मण पुत्र ॥
जइसन रहली हे हमरो गउरा देई खोजेला तपसी भीखार।
कलसा के ओते ओते गउरा मिनती करे शिवजी से॥
अरज हमार रखी ए शिव भेष उतारी अम्माजी के मन पतिआसु।
जाटा महादेव सुमीरी बांधले भभूती देले छितराय ॥
भइले ठाढ़ कहां गइली आई कहां गइली माई कहां गइली सासु ॥
हमार तीनो भुवन केरा हम शिव ठाकुर अब रूप देखसु हमार ॥

२६

ढीमीरी ढीमीरी डमरू बाजेला शिवजी भइले असवार ए।
कहवां के ए दइया उमत आवेला उमत तेजलो न जाइ ए।
परीछे बाहर भइली सासु मंदागिनी हाथ खरइया के सूप ए।
पहीले लोढ़ा घुमवली मंदागिनी सर्प छोड़ेला फुफकार ए।
धियाले मैं उड़वी धियाले मैं बूड़वी धियाले मैं खिलबो पताल ए।

अइसन तपसिआ के धियाना मैं देबों बलो गौरा रहीहें कुआर ए।
जनी अम्मा उड़हु जनी अम्मा बुड़हु जनु अम्मा खिलहु पताल ए।
पूरब जन्म केरा लिखल तपसिया से कैसे मेटल जाइ ए।
जटा देख डेरइबू हो बेटी विभूती देख जरी छाइ ए।
सवती देख विरह भरी जइबू कवन विधि भोगतबू राज ए।
जटा मोरा लेखे अगर चन्दन भभूत मोरा सहवांब ए।
सवती मोरा लेखे सखिया सलेहर एहि विधि भूगतबी राज ए।

२७

तोरा नैहरवा हो गउरा भैया के विआह।
हमरा के नेवता हो गौरा तोहरा के नाहीं।
हमरा नइहरवा हो शिवजी होइहें भइया के विआह।
नउआ से बभना हो शिवजी नेवत लेइ अइहें।
नउआ बभनवा हो गउरा गोभइन फिरि गइले।
हमरो के नेवता हो गौरा तोहरा के नाहीं।
हाथ के मुदरवा हो गौरा नउआ के विदाई।
इतना बतिया हो गउरा सुन ही न पइले।
बसहा बरधवा हो गौरा भइली असवारी।
भाई तोरा धाई मिलीहे बहीनी अंकवारी।
भौजी तोरा कपट करीहें भइया लुलुआई।
जाइके बइठलो शिव ओरी तर।
हम देखवो हो शिव बाबा अभिमानी।
अतना बचनिया हो गौरा सुनही न पाई।
अगीनी के कुंड हो गौरा परेली हहाई।
धरम मोरा नसलू हो बेटी कइलु कुल हानी।

प्रात काली

प्रात काली

२८

शरण गहो सीआराम पीआ हो।
सुतल रहलो स्वपन एक देखलो
स्वपन देखीली अजगूत
एजी आमृत के कुल बाग उजारे
रामचन्द्र के दूत, पीआ०—
सोने के गढ़ लंका जरावे राम
लखन के दूत, पीआ०
मेघनाथ अस बेटा जेकरा
कुम्भकरण अस भाई
रावण अस पुरूष जेकरा
काहे तीरिया गैलु डेराई, पीआ०—
आज पवन नाहीं आंगना बहारे
देव भरे ना पानी
लक्ष्मी सरस्वती धान न कूटे
सोचे मंदोदरी रानी, पीआ०—

२९

राम से करु प्रीति पिया हो राम से करु नेह (टेक)
सुतल रहलो मैं ऊँची अटरिया
सपना देखीला अजगुत पिया हो (टेक)
राम के दूत पुष्प बाटिका उजारे
लङ्का कियो विध्वंस पिया हो (टेक)
लक्ष्मण ऐसा भाइ जिन्हका
महाबीर अस दूत
उनहू से प्रीति करोना पिया हो

३०

राम से करु प्रीति पिया हो
राम से करु नेह पियाहो।
प्रात दर्शन द ए गंगा मैया (टेक)
आर गंगा पार यनुना
बीचे लागल फुलवारी
एक सौ सहस्त्र गोपी फूल लोढ़े
कृष्ण माली ठाढ़ (टेक)
गंगा के गले में हार शोभे
शिवजी गले मुण्डमाला
सुवरन साठ मदनपुर शोभे
अरे लङ्का शोभे हनुमान (टेक)
बारह कला हो भानु उगे
उनका पर सब कर दृष्टि
राजा युधिष्ठिर आनी गावे
मोरा से गोविन्द जी स प्रीति
प्रात दर्शन द ए गंगा मैया।

हलदी

हलदी

३१

सोने का कटोरवा में काँच हरदिया,
सोने का कटोरवा में काँच हरदिया।
हजमा मड़उआ धइले ठाढ़ ए॥
हरदी चढ़ावेले बेटी के बाबा,
हरदी चढ़ावेले, बेटी के बाबा।
जै जै बोली सभ लोग ए॥
सोने का कटोरवा में काँच हरदिया,
सोने का कटोरवा में कांच हरदिया।
हजमा मड़उआ धइले ठाढ़ ए॥
हरदी चढ़ावेले बेटी के चाचा,
हरदी चढ़ावेले बेटी के चाचा।
जै जै बोली सभ लोग ए॥
सोने का कटोरवा में कांच हरदिया,
सोने का कटोरवा में कांच हरदिया।
हजमा मड़उआ धइले ठाढ़ ए॥
हरदी चढ़ावेले बेटी के भइआ,
हरदी चढ़ावेले बेटी के भइआ,
जै जै करी सभ लोग ए॥

सेहला

सेहला

३२

एक डाल बाबा साजे दुसरे बहनोईश्रा,
लाल देखो लाड़ील बनरे का चलना।
श्रजब लाल देखो लाड़ील बनरे का सुरत ॥

३३

मलहोरिश्रा के गलीए निकलु मेरे लाल बने—
श्रब करो मउरी का मोल सहाना लाल बने—
मलहोरिन है मनमोहनी मोरे लाल बने—
श्रब दुलहा कमल का फुल सहाना लाल बने ॥

३४

दादा जे हमरा कवन दादा हरीवाले बने—
उहे दादा सेहला सवारत श्राजु हम दुलह बने—
दादी जे हमरा कवन दादी हरीवाले बने—
उहे दादी डाले सिर श्रांचर श्राजु हम दुलह बने—
फुफा जे हमरा कवन फुफा हरीवाले बने—
उहे फुंफा जोड़वा सवांरे त श्राज हम दुलह बने—
फुश्रा जे हमरा कवन फुश्रा हरीवाले बने—
उहे फुश्रा डाले सिर श्रांचर श्राजु हम दुलह बने—
बाबा जे हमरा कवन बाबा हरीवाले बने—
उहे बाबा साजेले बारात त श्राज हम नौसे बने—
श्रम्मा जे हमरो कवन श्रम्मा हरीवाले बने—
उहे श्रम्मा डाले सिर श्रांचर श्राजु हम दुलह बने—

३५

हाथी साजु घोड़ा साजु बाबा हो कवन बाबा
चाचा साजेला बरिश्रात हो—

भइआ हो कवन भइया चन्दन चढ़ावे ले,
फुआ आंजली दुनो आंख हो—
बहिनी कवन बहिनी केसर छीटे ली,
गमकत जाली बरियात हो—

३६

वर नवल उतरे हो कवन दुलहा वाले बने—
बंदा के मोरा पटुका सँवारे केसरिया लाल बने—
बंदा बाबा जे उन्हुका कवन बाबा लाले बने—
उन बाबा पटुका सवारे केसरिया लाले बने—
अम्मा जे उनका कवनी अम्मा लाल बने—
बंदा उन्हीं अम्मा अँचरा डोलावे केसरिया लाल बने—

३७

दुलहा के सिरे पगिया भला शोभे, दुलहिन के शोभे अनार कलीया।
फुलवरिया में डेरा गिरा दे रे, भला बगिया में डेरा गिरा दे रे—
दुलहा के मुखे बीड़ा शोभे, दुलहिन के दांते मीसीया रे—
दुलहा के अंगे जोड़ा भी शोभे, दुलहिन का शोभे चोलिया रे—
बगिया में दुलहा के सेजे दुलहिन शोभे दुलहिन के संगे लोकनिया रे—

३८

माथे तोरा टीका शोभे नैना रसीला
आज दुलहिन हंस के बोले मैं तेरा।
नाके तोरा नथीया शोभे झुलनी रसीला
आज दुलहिन हँस के बोले मैं तेरा।
गले तोरा नेकलेस शोभे मोतीया रसीला
आज दुलहिनहँस के बोले मैं तेरा।

हाथेतोरा कंगन शोभे पहुँची रसीला
आज दुलहिन हँस के बोले मैं तेरा।
पांवे तोरा छागल शोभे छाड़ा रसीला
आज दुलहिन हंस के बोले मैं तेरा।

३६

दुलहा तोरे हाथे नवरंगीया रे—
दुलहा के सिरे मउरी शोभे तेरे लरिया में लागे झुनझुनिया रे—
दुलहा के काने कुण्डल शोभे तेरे मोती में लागे झुनझुनिया रे—
दुलहा के अंगे जोड़ा शोभे तेरे नीमा में लागे झुनझुनिया रे—
दुलहा के पांवे मोजा शोभे मेहद में लागे झुनझुनिया रे—
दुलहा के सेजे लाढ़ो शोभे तेरे घुघुट में लागे झुनझुनिया रे—
दुलहा तोरे हाथ नवरंगीया रे—

४०

के वर उठावल महला दुमहला, खीड़कीन लागे चारो ओर ए
ताही चढ़ बैठेला सबुज रे सुगवा, लेला श्री कृष्ण जी के नाम ए
महल के एने वोने फिरे ले कवन दुलहा, पड़ गईले सुगवा पर दीठ ए
हमरा ससुर जी के सबुज रे सुगवा, उहे हम लेबो दहेज ए
हाथी मैं देवों दुलहा घोड़ा मैं देबों, बरहो बरध धेनुगाय ए
एक नाही देवो बाबू सबज रे सुगवा, लेला श्री कृष्णजी के नाम ए
ईतना वचन जब सुनले कवन समधी, उलटा नगारा दिआई ए
रूसे अजनीया रूसे बजनीया, रूसे सजन सब लोग ए।
घोड़वन रूसेले कवन दुलहा, चन्दन शोभेला लिलार ए
धावहु नउआ रे धावहु वरीआरे, समधी के पकड़ ले आउ ए
जेठ वैसखवा के ठीक दुपहरीआ, समधी मोर रूसल जाई ए
सोने के पीजड़ा बनाउ मोर समधी, सबुज ही सुगवा बझाई ए
हँसे अजनीया हंसे वजनीया, हंसे सजन सब लोग ए
घोड़वा चढ़ल जे हंसे ले कवन दुलहा, चन्दन सोभे ले लिलार ए

४१

तेरे सिर का सेहला ओलरी परी
तेरे बाबा न लीहे सवांर
दुलहा नींद नेवार न नींद नेवार
सारी रात दुलहा नींद नेवार-
तेरे कानों का सोना ओलरी परी
तेरे चाचा न लीहें सवांर
दुलहा नींद नेवार न नींद नेवार
सारी रात दुलहा नींद नेवार-
तेरे मुख के बीड़ा ओलरी परी
तेरे भईया न लीहें सवांर
दुलहा नींद नेवार न नींद नेवार
सारी रात दुलहा नींद नेवार-
तेरे अंग का जोड़ा ओलरी परी
तेरे जीजा न लीहें सवांर
दुलहा नींद नेवार न नींद नेवार
सारी रात दुलहा नींद नेवार-
तेरे सेज की दुलहीन ओलरी परी
तेरे भाभी न लीहे जगाय
दुलहा नींद नेवार न नींद नेवार
सारी रात दुलहा नींद नेवार-
नींद नेवार सारी रात दुलहा नींद नेवार

४२

मलहोरीन गलिया होके निकलु कवन दुलहा अब करो,
मउरीया के मोल सहाना लाल बने।
मलहोरीन है मन मोहनी अब दुलहा कमल के फुल,
सहाना लाल बने।

सोनरवा गली होके निकलु ए दुलहा,
अब करो सोनवा के मोल सहाना लाल बने।
सोनारीन है मन मोहनी अब दुलहा कमल के फुल,
सहाना लाल बने।
दुलहीन गली होके निकलु कवन दुलहा,
अब देख दुलहिनीया के रूप सहाना लाल बने।

४३

देबो रे मालीनीया सोने केरा सुईया,
अब गुथी न लाउ रे मालीनीया सोने केरा मौरी।
सेहला ले के ठाढ़ भईली रे मउरीया,
अब के तोरा करीहें सेहलवा के मोल ए।
बाबा जे हमरो कवन लाल,
अब उहे बाबा करीहें सेहलवा के मोल ए।
भैया जे हमरो कवन भईया,
अब उहे भईया करीहें सेहलवा के मोल ए।

४४

दुलहा नादान उ त मेरो हाल न जाने
नवसे गवांर उ त मेरो हाल न जाने
पहीरो कुसुम रंग सारी
दुलहा नादान घुघुट खोल ही न जाने
दुलहा नादान घुघुट खोलही न जाने
पहीरो रेशम की चोली नवसे गवांर
चोली बंद खोलही न जाने
दुलहा नादान घुघुट खोलही न जाने
पहीरों मयनवा की बीछीया
दुलहा गवांर झमका सुनही न जाने
दुलहा नदान उ त मेरो हाल न जाने

जोग

जोग

४५

सीकीआ के डलवा बीना द हो कवन बाबा
बाबा कवरू रे रहीआ बतलाव जोगीन मोर जोगवा।
कवरु के रहीआ बेटी तीन ए पएतवा अरे तीन ए पएतवा
एक आवेला दुई जाला जोगीन मोर जोगवा।
मचीआ बईठल तुहुं अम्बा हो कवन देई अम्बा हो कवन देई
जोगवा बेसाही मोही देहु जोगीन मोर जोगवा।
अगते जो अइतु बेटी खोइछां भरी दीहतीं फुफुन्दीआ भरी दीहीतों
अरे सब जोग गईले बिकाए जोगीन मोर जोगवा।
अरे तनीयसा जोगवारे ओरीआ खोसी दिहलो बड़ेरीआ खोसी दिहलो
कवन दुलहा ले गईले चोराई अनजानु दुलहा जोगीन मोर जोगवा।

४६

सहु बाबु सहु बाबु आजु के रे रतीया
होत प्रात रे बबुआ जैबो बड़ी दूरीया।
हमना जनली गे बाबू जोगीनीआ के रे देशवा
हम त जनली ए बबुआ कवन लाल के धीअवा।

४७

जोगके दिनरे माई कवन बिटिया
घोंघवनी भात बनवलीरे माई कवन बिटीया।
ईमली के पात पर खीअवली रे माई कवन बिटीया
जोग के दिनरे माई कवन बिटीया।

आपन गलीया देखवली रे माई कवन बिटीया।
हमार गलीया छोड़वली रे माई कवन बिटीया।
हमरा माई के गोदीआ छोड़वली रे माई कवन बिटीया।
आपन माई के गोदीआ देखवली रे माई कवन बिटीया।

४८

कहवां ही के उजे मछली अपने चली आवे रे मैआ मै तो जोगवा।
कहवां ही के उजे दुलहा जीनी जाल लगाए रे मैआ मै तो टोनवा।
कवन लाल अईसा बेटवा जीनी जाल लगाये रे मैका मैतो जोगवा।
कवन लाल अइसी बिटीया जीनी लाल बसाए रे मैया मैतो जोगवा।
दादी मोरी जोगीनी जीनी जोग कीए जीनी टोना कीआ रे मइया मै तो जोगवा।
ऐसा जोग करो मेरी दीदी घर बैठी दुलहा चली आवरे मईआ मैतो जोगवा।

४९

जाहां मोरी वारी भोरी माथवा खोलन लागे
माई तहंवा छीनारी के बेटा तेलवा लगावन लागे।
माई मैं ना जानों जोगवा की कैसे होके लागा
माई जहंवा मोरी वारी भोरी पटीआ संवारन लागे।
माई तहंवा छीनारी के बेटा केस सवांरन लागे
माई जहवां मोरी वारी भोरी मांग टीकन लागे।
माई तहंवा छीनारी के बेटा चमकी साटन लागे
माई मैना जानो जोगवा की कैसे हो के लागे।

५०

जोग सीखे चलेली बेटी दादी जीका टोला
दादी जी के जोग से कवन दुलहा माता।
सब कर जोगवा रे अउरा से बउरा
अरे माई! दादी जीके जोगवा भरल आवे दउर।
अरे माई! मात गैले मात गैले कवन देई के कंता।

५१

टीकवा पर उगो मोतीआ पर उगो हो
आज सुहानीरात चन्दा तुम उगो हो।
आज नवेलीरात चन्दा तुम उगो हो
आज दुलहवा के रात चन्दा तुम उगो हो।

५२

कोरी ही नदीआ में दहीआ जमवलीं
से लेले जोगवा दमाद के देखवलीं
देख ए दमाद मैंतो कुछवो ना जानी
कुकुरा के चान पर दीअरा बरवली
से लेके जोगवा दमाद के देखली
देख ए दमाद मैंतो कुछुवो नाजानी
कालारे कउआ के पखीआ मंगवलो
बीलरा बीलईआ के पोछीआ मंगवलो
से लेके जोगवा दमाद के देखलो
देख ए दमाद म कुछुओ नाजानी।

५३

कामरु जईह कमरु से जोग ले अइह
कमरु से टीकवा ले अईह रे मोर टोना।
से टीकवा पेन्हेली लाढ़ो कवन बेटी
मुंह देखत वर रही हें रे मोरा टोना।
पटीआ लगल वर रहीहे रे मोर टोना
आपन मईआ छोड़ दीहें रे मोर टोना
ससुरारी के दूब बनी रही हें रे मोर टोना

५४

गोरा वरध चितकावर ए माई
कि राहेबाटे चलेला दुलकीआ ए माई—

बीटीआ के माई बड़ा जोगीनी रे माई
कि अपना दमाद के भोरवली गे माई
कि बिटीआ के अम्बा बड़ा जोगीनी ए माई
कि अपना दमाद के भोरवली ए माई।

५५

सेर भरी सरीसो सवा सेर राई
माई तेलवा अरे माई जोगवा।
तेलवा पेरावन चलेली कवन बेटी
अपना अम्बा जी के देश
माई जोगवा अपना बाबाजी के देश
माई टोनवा अपना बाबाजी के देश
तेलवा पेरावत भईले भीनुसरवा
माई जोगवा जोगवा के मातल दुलहा, कवन दुलहा
नैए नैए करेले सलाम, माई जोगवा, अरे माई टोनवा।

५६

करीए करीए धतूर के चकले चकले पाता
माई करीए धतूर के चकले चकले पाता।
अपना सासुजी के जोग से कवन दुलहा माता
माई मातल आवेले कवन देह के कंता।

टोना

टोना

५७

अरे मचीया बैठल अम्बा जोग कोअ।
की सुनु बीटिआ जोग लेल हमार
सुनु बीटिआ टोना लेल हमार।
अरे एही जोग से कवन दुलहा माते
सुनो बेटी पैंआ पड़ी हें तोहार
सुन बीटीआ नै नै करीहें सलाम
सुनु बीटीआ जोग लेल हमार।

विवाह

विवाह

५८

खम्भवनि ओट धरी बेटी हो कवन बेटी बाबा से अरज हमार ए
लालही घोड़ा चितकाबर बछेड़ा सोने के जड़ल लगाम ए
सेहो घोड़वा मोरा ससुर के दिह, लीहें बावा नाम तोहार ए
एक हाथे लेले समधी दही के दहेड़िया, एक हाथे घोड़ा के लगाम ए
समधी मनावन चले ले कवन लाल, जैसे अयोध्या के राम ए
समधी मनावत छतीया लगवलन, दिहले गलईचा बिछाई ए
मोरा त समधी हो दान दहेजवा, मोरा त धन भण्डार ए
सुन्दर बाड़ी मोरा बेटी कवन बेटी, उत्तम बाड़े मोरा जान ए
ना हम चाहीं समधी दान रे दहेजवा, ना हम चाही धन भण्डार ए
सुन्दर चाहीला पतोहीआ ए समधी, उत्तम कुल धन दान ए
कुलवा बखानी ला राजा दरवरीया, बेटी मड़उआ के बीच ए

५६

जाही दिन बेटी हो तोहरा जनम भईले पेड़ुरी मोर घहराइ ए
मांस मछरिया बेटी मनही न भावेला, पेड़ुरी मोरा घहराई ए
जाही दिन बेटी हो तोहरो जनम भईले, भईली भदउआ के रात ए
सासु ननद घरे दिअरो न बारे ली, से हो प्रभु बोले ले कुबोल ए
जाहि दिन बेटी हो तोहरो विवाह होइहें, बाबा के हृदया जुड़ाई ए
धन धन बेटी हो तोहरो जनम भईले, देवतन लिहले बसेड़ ए
भईले बिआह परेला सिर सेन्दुर, नव लाख मांगे दहेज ए
घर में के भँडा आँगन देई पटकव, शत्रु के धिआ जनी होई ए
जउँ हम जनीतो कि धिआ कोखी जनमी हे, पीअतो मैं मरीची झरार ए
मरीची के झारे-झुरे धिआ मरी जईती, छुटी जईते गरेहुआ सन्ताप ए

६०

केकरा ही नदीश्रा रे झिलमिल पनिया,
अरे केकरा ही नदीया सेवार ए
केकरा ही नदीश्रा चल्हवा मछलिया,
कवन दुलहा लावे जाल ए
बाबा के नदीया रे झिलमील पनीया,
भइश्रा के नदीश्रा सेवार ए
ससुर के नदीश्रा रे चल्हवा मछलिया,
कवन दुलहा लावे महजाल ए
एक जाल लवले ए दुलहा दुई जाल लवले,
बाझी गईले घोंघवा सेवार ए
तीसर जाल जब लवले कवन दुलहा,
बाझी गईले कन्या कुंश्रार ए
दांत तोरा देखूं ए दुलहा बिजूली चमके,
और ओठ तोरा कतरल पान ए
ईतना सुरत रउरे बाड़े ए दुलहा,
कवन विधि रहलीं कुंश्रार ए
बाबा मोर करेले दरबरीश्रा,
और भैया मोर करे कुर खेत ए
चाचा मोरा करे ले जिरवा के लदनीया,
वोही विधि रहलीं कुंश्रार ए
बाबा मोरा छोड़ ले दरबरीश्रा,
भईश्रा छोड़ले कुरखेत ए
चाचा मोरा छोड़ ले जीरा के लदनीश्रा,
अब हम करबो बीश्राह ए

६१

कथिन के पलंगरी अहो सखी कथी लागेला चारू पाँव रे।
अरे कवन चरित्र बिनावल पलंगरिया कवन दुलहा सोबे नींद भरी रे।

सोनन के पलंगरीया ए सखी रूपे लागेला चारू पाव रे ।
अरे रेशम चरित्र बिनावल पलंगरिया, अरे रामचन्द्र सोवे निर्भेद ए
हाथ सिन्होरवा खोइछा पाकल पान चलली सीता देई सेज सोवे रे ।
अरवट से करवट सोइव नींद घुरूमे चारो आंख ए

६२

ओरी तर ओरी तर चन्दन उपज गैले
छछन बिछन गैले चन्दवा के रे डाढ़ ।
हाथीया से घोड़वा लिहले उतरू कवन समधी
हाथी घोड़ा बान्हू रे समधी चन्दनवा केरे डाढ़ ।
अपना महलिया से निकलेले कवन समधी
रउदीली चन्दनवा केरे डाढ़ ।
अपना रसोइआ से निकलेली कवन बेटी
काहें बाबा बोलीला रे झराझर बोल ।
सहु बाबा सहु बाबा आज के रतिया रे
बड़ा रे सबेरे हो बाबा जाइबो बड़ी दूर ।
आगन रउरा होइहें ए बाबा भादउवा केरी रात
दुअरा त होईहें ए बाबा निशि अँधियार ।
आंगना फूलीय फूली अम्मा जे रोवेली
कतहूँ ना देखो ए बेटी नेउरवा झंझकार ।
दुअरा फूलीय फूली बाबा जे रोवे ले
कतों ना देखों ए बेटी नेउरवा झंझकार ।
अपना रसोइया फूली भौजी जे रोवेली
कतहूँ ना देखो ए ननद रसोइया झंझकार ॥

६३

कहंवा ही उपजेला नारीअर बीरवा रे
कहंवा ही डटइल पान ए ।
अलबेल दुलहा नींदीया घरूमे र

ससुरा में उपजेला नरिअर बीरवा रे।
अरे नइहर डटाईल पान रे।
अलवेल दुलहा नींदिया घुरुमे रे।
सेहो पान खइले मोरा कवन दुलहा रे
विहँसत पईसे ले अवास रे।
अलबेल दुलहा नींदिया घुरुमे रे।
हंसी बोले बिहँसी बोले कवन सुहवा रे।
देखों प्रभु दंतवा के जोत रे।
अलबेल दुलहा नींदिया घुरूमे रे।
कईसे देखावों सुहवा दंतवा के जोतिय।
अरे मड़वन सासु बहुत रे।
अलवेल दुलहा नींदिया घुरुमे रे।
मड़वा के लोग प्रभु अँचरा छीपाइव।
हम रउरा जोरवी सनेह रे।
अलवेल दुलहा नींदिया घुरुमे रे।
हम रउरा जाईब कोहवर
अलबेल दुलहा नींदिया घुरुमे रे।

६४

भरी रात फूले ला बेइलिया भरीय रात नीजवला ए
मालीन हाथ पसारे ली अब हम लोढ़ब रे।
धीरे रहू ए मालिन धीरे रहु अब ही कली कांच ए
सगर रात हम फूलब तब रउरा लोढ़ब रे।
कहवां ही दुलहीन जनमली केई प्रतीपाले रे
कवन दुलहा हाथवा पसारे ले अब हम बिअहब रे।
पारे में दुलहीन जनमेली अम्मा पतीपाले ली रे
कवन दुलहा हाथ पसारे ले अब हम बीअहब रे।

धीरे रहु ए दुलहा धीरे रहु अबहीं त बाबा के रे
जब बाबा कुसवा संकलपेले तब रउरा बीअहबी रे।

६५

जाहि देश बीअहीह हो बाबा तामावा बहूत
तामे के तमहेड़िया हो बाबा तामे के भला चूल्ह।
तमवां काटीया हो बाबा महल छवाई
नीचवन नीचवन लईह हो बाबा बेईल के फूल।
तमवनी काटीया हो भइआ महल छवाई
नीचवनी नीचवनी लईह हो भइआ बेईल फूल।
तेही पड़े अइहें हो बाबा कवन समधी बरीआत
गमकती आवे हो बाबा बेइली सुवास।
थारवन लीचूई हो बाबा, बनीआवत चले भात
दनवे दनवे चले हो बाबा अनवनी चीज
दनवे दनवे चले हो भइआ अनवन चीज।

६६

कहंवा के हथीनी सिंगारल आवेले लाल जड़ेला चारु पावे रे
कहंवा के उजे लाड़ील सुन्दर बर मानीक जरेला लिलार ए।
भीतरे जे चिठीया लिखेले कवन समधी देहु समधी जी के हाथ ए
कीआ रऊरा समधी उतरी गढ़ छेंकवी कीआ रऊरा बरतर ठाढ़ ए।
भीतर जे चिठिया लिखेले कवन समधी देहु समधी जी के हाथ ए
नहीं हम समधी उतरी गढ़ छेंकवी नहीं रे बर तर ठाढ़ रे
मद्दा मड़उआ हम उतरवी समधी बिअहवी कन्या कुंआर रे।

६७

गंगा के अरार चढ़ी बैठेले कवन दुलहा
लेले गोसईंआ जी के नाम ए।
कब देना देखवी बाग बगइचा

कब हो देखवी ससुरार ए
कब देना देखवी सुहवा—
कवनी सुहवा जाही देखी नैना जुड़ाई ए।
गोइड़न देखवी बाग बगइचा
दुआरा देखवी ससुरार ए।
मँडवन देखवी साली सरहजिया
कोहवर कन्या कुंआर ए।
धीरे बोलू गंभीर बोलू दुलहा
कवन दुलहा मड़वनी सजन बहुत ए।
होखे द बियाह तब कोहवर जाये देहू
अम्मा के देबहू चीन्हाइ ए।
हमराही अम्मा के पीयर ओढ़नीया
पीअर सोरहो सिंगार ए।
उन्हू का जे आँखिया झराझर लोरवा
उहे हई अम्मा हमार ए।

६८

अमवा से मीठा इमलीया ए बाबा हो
बाबा महुअन लागी गईले कोंच।
सजन लोग घेरी अईले हो।
कोठा से ऊंच कोठरिया ए बाबा हो
अहो बाबा रुनुझुनु लागल केवारी
सजन गढ़ घेरी अईले हो।
ताही पइसी सुतेले बेटी के बाबा
कैसे सुतीला निरभेद
सजन गढ़ घेरी अईले हो
कुछु सुतीला कुछ जागीला
अहो बेटी कुछुरे दहेजवा के सोच हो।

गइआ भी दिहलीं भैंसीआ ए बेटी
अऊर बरध धेनु गाए ए।
एतना दहेज हम बेटी के देलीं
काहे लागी रुसले दमाद ए।
गइआ तू देल भैंसीआ हो बाबा
छुड़ी लागी रूसेला दमाद ए।
होखे द बिहान पह फाटे द हो बेटी
लागे देहु हाजीपुर के हाट हो।
जब रे कवन दुलहा छुरी हाथ लिहलन
विहँसि चलेले बरियात हो
साजन छोड़ेले दुआर हो।

६६

यह पार गंगा रे ओह पार जमुना
बीचवा परी गइले रेत ए।
ताही रंगरेतवा पर जोगी एक बैठेले आसन मारी ए
धावल धूपल अईली कवन बेटी ए।
जोगीआ लिहले बेलमायी ए
छोड़ छाड़ जोगिया रे हमरो अंचरवा
हम हई कन्या कुंआर ए।
धावल धूपल अइली कवन बेटी ए
बैठेली बाबा जी के जांघ ए।
कवन कवन सूख तोहरा ए बेटी
सेहो सुख कह समझाइ ए।
खाये के बाड़े बाबा सोने के थारी
अंचवे के रूपे के थारी ए।
सूते के बाड़े बाबा लाल पलंगरी
बालक रऊरे द माद ए।

बाहर देखीला गईया रे भैंसीआ
भीतर कोठवा अंटारी ए।
बड़ ही घर बेटी देख बिआहीला
ना जानो छोट न बड़ ए।
हरी हरी देखीला ककरी के बतिया
ना जानी तीत न मीठ ए।
बड़ही जान बेटी तोहे के बियाहीला
ना जानी छोट न बड़ ए।
छोट ही से बड़ होखी ए बेटी
जौ कुल रखबू हमार ए ।

७०

कहवां ही दीयरा बराईल बाबा हो
कहाँ पर होला अंजोर ए।
केकरा ही कोखिया में धीया जनम गईली
कहवां ही होला वियाह ए।
गोखूला में दीयारा बराईल बेटी हो
मथुरा में होला अंजोर ए।
अम्मा के कोखिया में धीया जनम गईली
मड़वन ही होला बियाह ए।
अपना मड़ऊआ होके बोलेले कवन बाबा
बोलिया जे बोलेले गुलाब ए।
ऐसन धियावा मैं केके सनहबी
नव लाख दहेज थोड़ ए ।
अपना बरात से बोलेले कवन दुलहा
सुनी ससुर हमरी बात ए।
ऐसन धियावा हमही के सनहबी

नव लाख दहेज थोर ए ।
गईया मैं देलों भैंसिया बेटी
बरहो बरध धेनू गाय ए।
अतना दहेज हम बेटी के देलों हो
सरब मांगेला दमाद ए ।
खम्भाही ओठंगली बोलेली कवन बेटी
बाबा से अरज हमार ए ।
जेकरा के ए बाबा धिया ऐसन देहीला
सरबर कवन बुनिआद ए।
पसवा खेलत तुहूं भईया कवन भईया
सरबर दीहीं दहेज ए ।
ऐसन दुलहा गँवार जे भाई सरबर के नाम नहीं जाने ।

७१

मोरा पिछुअरवा रे सरवर बहुत है
पुरईन हालर मारी ए ।
ताही पईसी कवन दुलहा
धोतिया कचारे ले पूछेली कवन सुहवा बात ए ।
केकर हऊवा तूहूं अलरु से दुलरु
केकर हऊवा तुहूं लाल ए ।
केकरा पोखरवा नहईला बर सुन्दर
कहांवाही करेल पयान ए।
बाबा के हंई हम अलरु से दुलरु
मईया के हंई हम लाल ए।
ससुरु पोखरवा हम नहईलीं बर कामिन
सेन्दुरा बनीजी कईले जाय ए ।
लहंगा पहिरी के निकले कवन बेटी
सुनी बाबा बचन हमार ए।

देश पईठ बाबा वर एक खोजहू
जे बर सरवर नहाय ए।
घर में के खटिया आंगन ले बिछावलन
बैठहू दुलहा दमाद ए।
दुलहा दुलहिन मिली एक मन भईले
सुन दुलहिन मोरी बात ए।
तोहरा ही बाबा के सोना के कटोरवा
सेहो लेबो हमहूं दहेज ए।
हमरा ही बाबा के सोना के कटोरवा
पीये ले कवन भईया दूध ए।
दूधवा पीयत भईया अलूरी बहुत करे
माँगे प्रभु बहिनी तोहार ए।
इतना बचन जब सुनले कवन दुलहा
बटिया में चले झकझोर ए।
जेकरी बहिनी हमही बियाही ला
से मांगे बहिनी हमार ए।

७२

चन्दा जे उगेले गिरि धवरहर जोन्हीं उगेला आकास
लगन सोचाई अईले बेटी के बाबा हो
बाबा बैठेले मन मारी ए।
कुड़वन भारी बेटी लवंग भराईव
गगरी में कांच कपूर ए।
घीव के गगरीया बेटी मंड़वन धराईव
साजन करिहें बखान ए।
मड़वा के ओते ओते बोलेले कवन दुलहा
सुनु सुहवा वचन हमार ए।
तोहरा ही बाबा के सोने के कटोरवा

से हम लेबों दहेज ए ।
कलसा के ओते ओते बोलेली कवन सुहव।
सुनी स्वामी बचन हमार ए ।
हमरा ही बाबा के सोने के कटोरवा
भईया पीयेले कच्चा दूध ए ।
दूधवा पीयत भईया अलूरी बहुत करे
मांगेले बहिनी तोहार ए ।
इतना बचन जब सुनले कवन दुलहा
घोड़ा पीठ भईले असवार ए ।
जेकरी बहिनी रे हमही बियाही ला
से मांगे बहिनी हमार ए ।

७३

कहवां के गढ़ थवई गढ़ महल उठाये
कहंवा के पतीसहवा गढ़ देखन आये ।
बाहर से गढ़ देखीला जैसे पानन छाये
भीतर से गढ़ देखीला जैसे चित्र उरेहल ।
जंघीआ बखानीला कवन लाल जिन्ही बेटा जनमायो
सोनेके छत्र चढ़ाइ के बेटा बिअहन आये ।
जंघीआ बखानीला कवन लाल जिन्ही बेटी जनमाये
लट लट भेरिया गुथाई के बेटी जांवे बैठाये ।

७४

चन्दन बीरीछ तर ठाढ़ भईले कवन दुलहा
अररी मररी पान खाए ऐ ।
उपरा से कोइलर शब्द सुनावली
धूपवा गंवाई बलु लेहु ऐ ।
कैसे में धूपवा गवांवों ए कोइलर
हमरो लगनिया अगुताईल ऐ ।

ऐसन अशीसवा कोइलर हमारा के दीह
सोने मऊरी वियाह ऐ।
दान दहेजवा बाबु बरधी लदईह
धनी लीह डड़िया चढ़ाय ऐ।
उहांवां से लौटव कोइलर चीरा पहिनाईब
सोनवा मढ़ाईबों दूनों ठोर ऐ।

७५

मरीची के पतवा झलारी हो बावा नगर में शोर होइ जाइ ए।
जेकरा ही घरे बावा धीआ कुंआर से कैसे सोवे नीरभेद ए।
एतना बचनवा सुनहु ना पवले उठले दवन झहराई ए।
पतरा वेसाही बाबा घरे चले अैले नैना झरा झरी लोर ए।
हटीआ के सेनुरा महंग भैले बेटी टीकुली भइले अनमोल ए।
टीकुली सेनुरवा के कारण बेटी हो छोड़ेलू तूं देश हमार ए।
भइआ बहीन मिली एक कोखी जामीला दुधवा मो पीअलो ढकोर ए।
तोहरो लीखल भइआ बाबा चउपड़ीआ हमरो लीखल दुर देश ए।
आवरे बजनीआ भइआ बजवा बजावहु सहनाई सबद सुनावहु ए।
बराहमन बरुआ गोतर उचारहु करबों मो धीआ के बीआह ए।
कलसा के ओट भैले बोलेले कवन दुलहा कामीन से अरज हमार ए।
जग विघनस जनी कर मोरी कामिनी खेइबों मैं नइआ तोहार ए।
कथी का तोरा नाव नवैया कथी के लागल करुआर ए।
कवन दुलहा चलीके ऐरे नाव खेवइआ कवन सुनदर उतरेली पार ए।
सोनन के मोरा नाव नवडीआ रुपही लागली करुआर ए।
दुलहा जे हमरो भइले खेवइआ सुनदर उतरेली पार ऐ।
बाबा के पिछवरवा घनी बसवरीआ वह गइले सीतल बयार ए।
ताही तरे बावा हो पलंगवा डसावले सोवेले नीर भेद ए।
नीहुरल नीहुरल अइली कवन बेटी बाबा से अरज हमार ए।

७६

जेकरा ही घरे बाबा धीअवा कुंआरी से कैसे सोवे नीर भेद ए।
कुछु रे सोइला बेटी कुछु रे जागीला बेटी कुछु रे दहेजवा के सोच ए।
जब लगी बेटी हो तोहेना संकलपबी तब लगी कइसन सुख नींद ए।
झारी झारी बेटी हो जाजीम बीछाबहु करना ससुर बेवहार ए।
हमारा तो बेटी दहेजवा के सोच कवन कवन गुन दीही ए।
कैसे के बाबा हो पलंग डसाइबी जाजीम झारी बिछाइब ए।
कैसे के बाबा बेटी हे जनवासव झक झक बाबा अजोरीआ रात
चमकेला हमरो लीलार ए।

७७

नदिया के तीरे मालिन दौना लगावे ली दौना के घनी फुलवारी ए
सांझे में छुटेला कन्हइआ के गइआ चरी गइली घनी फुलवारी ए
एइल चरी गइली वेइली चरी गइली चरी गइली चम्पा के डाढ़ ए
तीनों फूल मोरा चरी गइली गैया रे मउलेला चम्पा के डाढ़ ए
बरिज कन्हइआ रे अपन गैया चरी गइली घनी फुलवारी ए
झारा रे झरोखा चढ़ी सासु निरेखली केत दल आवे बरियाती ए
हथिआ अचास आवे घोड़वा पचास आवे कत्थक आवेला बहुत ए
कत्थक कत्थक जन करु सरहजी कत्थक राऊर बरियाती ए
मुंहे पटुक दे के बोलेले कवन दुलहा ससुर से अरज हमार ए
हाथी ही घोड़ा ससुर कुछऊ ना लेबों सरहज लेबों दहेज आई ए
अतना बचन सरहज सुनही ना पावेली चलेली ससुर दरबार ए
अइसन बर ससुर कतहीना देखीला मांगेला पुत बहुआर ए
जनी बहु हरबहु जनी झनकहु जनी मन करहु उदास ए
सोनवा ही रुप बहुआ वरधी लदाइवो पुत बहु रखबो छिपाई ए

७८

माहही बाट मालिन कुईंया रे खनावली
कुईंया के पीयर माटी ऐ।
ताहि ऊपर मालिन केवड़ा लगावली
केवड़ा के शीतल बतास ऐ।
मालिया जे सूते ले गृही घबराह
मालिनी सुतेली फुलवारी
धावल धूपल अईले कवन दुल्हा
ठाढ़ भईले केवड़ा के छांह ऐ।
मालिया जे पईठेला मालिनीं जगावेला
उठ मालिन भईल भिनसार रे
दुवारा कवन दुल्हा ठाढ़ रे
मूहवा उघार जब देखेले मालिनिया
दूवरा कवन दुल्हा ठाढ़ रे।
किया तोरा बाबु रे काज परोजन
किया तोहरा भईया के बियाह ए।
नहीं मोरा मालिन काज परोजन
नहीं मोरा भईया के बियाह ए।
अपना बाबाजी के हमही दुलरवा
हमरो लगनिया अगुताई ए।
अजब मऊरीया गुथ देहू ए।
अजब ही अजब ही जन करु बाबू
अजब मऊरीया कैसन होई ए।
अबढ़ी पवढ़ी गुथी हे मालिन
दुवना मरूवावा चारो चिड़िया जोड़ा हंस ए।
अइसन मऊरी उरेहो ऐ मालिन
मऊरी देखी रहंस लोभाय ए

राहे बाटे लोभेला राही रे बटोहिया
कुईंया लोभेले पनिहारी ए।
मड़वा में लोभेली साली सरहजिया
कोहबर कनिया कुंवार ए।
सब कोई देखेला आजन बाजन
सासू निरेखेली दमाद ए।
किया तुहूँ बाबु रे मालिया के जामल
किया मलहोरिया तोहरा बाप ए।
नहीं हम सासु हे मालिया के जामल
नहीं मलहोरिया हमरो बाप ए।
हमरो बाबाजी के मित्र मलहोरिया
सासु के हउ लगवईया ए।
दाढ़ी के बेटा छिनारी के नाती
उलटी पलटी देले गारी ए।

७९

बाबा के उँची फुलवरीआ फूल फूले ला ए,
चाचा डासे ले सुख सेजीया दहेज सोच सोवले ए,
मालीन फूल लोढ़े चलेली दवना मरुआ ऐ।
धीरे रहु ए मालीन धीर रहु फूल जनी लोढ़हु ए,
हमरा दहेजवा के सोच त फूल जनी लोढ़हु ए।
हमरा दहेजवा के सोच दहेज सोच सोइला ऐ।
आजु त मउरीआ के खोज त लगन समतुलभैले ए।
डाल भरी तुरली दवना मरुआ और बेल फूल ऐ,
मालीनि निकले महल से कवन दुलहा मोहे ले ऐ।
केकर उंची फुलवरीआ सुन्दर फूल फूलेला ए
कवन लाल डासे सुख सेजीआ दहेज सोच सोवले ए।
एतना बचन जब सुनेला कवन दुलहा सुनहीना पावेला ऐ
उठी ससुर धीआ संकलप करी बगीआ दहेज दीही ऐ।

कैसे मो देहु धनी बगीआ सुन्दर फूल फुलेला ऐ
कवन बेटा धनी फुलवरीआ मालीनीं साथ विलसेले बेलेसेल ऐ।
धीआ जोग सोभेला अंगुठीआ दमाद के रूमलीआ हु ऐ
पुत जोग सोभे धनी बगीआ सुन्दर फुल फुलेला ऐ।

८०

दुअराही चम्पवा लगाईला, अङ्गना में मानिक बरे ए—
एही चम्पा चोरवा चोरावेला, सेहो चोरवा कइसन ए—
चोरवा के पकड़ी मगांवहु चौका बैठावहु ए
मोतीयन अंजुरी भरावहु, चिरवा पेन्हावहु, धिअवा बिआहहु ए—
एक ओर बैठे ले नईहर लोग, एक ओर सासुर लोग ए—
ए बीचे ठईआ बैठे ले कवन दुलहा, कवन सरवा साखी भरे ए।
जीतले में जीतले कवन दुलहा हरले कवन भईया ए—
इतना मागे ले कवन दुलहा देहु साला बहीनी आपन ए—

८१

कहवां ही देव गरजी गईले बाबा, कहवां ही होला अंजोर ए।
कहवां के राजा धीअवा संकलपे ले, नवलाख दहेज थोर ए।
मथुरा ही देव गरज गईले बेटी हो, गोखुला ही होला अंजोर ए।
अरे राजा जनक रीखे धीअवा संकलपे ले, नवलाख दहेज थोर ए।
मड़वा के बांस धईले ठाढ़ भईले कवन बाबा नयना झराझर लोर ए।
अरे ई धीअवा हम केकरा के सौंपवी नव लाख दहेज थोर ए।
दुअरा जे बोले ले कवन दुलहा, ईतर गुलाब लगाई ए।
ई धीअवा ससुर हमरा के सौंपवी, नवलाख दहेज थोर ए।
गईया मो दिहलो भईसीआ ए-बाबा, बरहो बरध धेनुगाए ए।
अरे इतना दहेज बाबा हमरा के दिहल, सरबर मांगेला दमाद ए।
सरवर सरवर जनी करू बेटी, सरवर मोर बुनिआद ए।
अरे हंस वो हंसनी दुनो कोल्ह करतु है, पुरइन हालर लेई ए।

जब रे कवन बेटी गांव ले बाहर गईली, सरवर गईली सुखाय ए
हंस हंसीनी दुनो बन के सीधारे ली, पुरईनी गइली कुम्हीलाय ए—
कहां गइली बेटी हो कवन बेटो लेइ आव कलम दवात ए—
ले आव बेटी हो पढ़ल पंडीतवा सरवर देवहु लिखाय ए
सरवर पइसी नहई ह ए बेटी, अरार सुखई ह लम्बी केश ए—
वाट जो पुछीहे बटोहीया ए बेटी लीह बाबाजी के नाम ए—
सरवर पैठी नहईबो ए बाबा, अरार सुखईबो लम्बी केश ए
बाट जो पुछीहे बटोहीआ ए बाबा लेबो ससुर जी के नाम ए—
अईसन मन तुंहु मरलु ए बेटी, अबना लेईबी तोहार नाम ऐ—

८२

चारो चउखड़ मोरा बाबा के पोखरवा—चुनवे चुनवटल चारू घाट ऐ।
ताही पैसी कवन बेटी करे स्नानवा, अरार सुखावे लम्बी केश ए।
बाबा के सागर बेटी देखही ना पावेली, उतरी परेले श्री राम ए।
केकर हेहि तूहुं धीअवा नहनीआ, केकर हउ पतोह ए।
राजा जनक जी के धीअवा नहनीआ, राजा दशरथ के पतोह ऐ।
रघुवर कुल हम बीअहल बानी, रामचन्द्र कन्त हमार ए।
इतना बचन राम सुनही ना पावेले, देश पइसी खोजेले कहार ए।
आवरे कहरवा भइआ डोलिया-फनावहु, सीता अयोध्या पहुंचाउ ए।
रोवेली सीता देई पटुक पोछ लोरवा, कवन नक्षत्र हम घर से बाहर भईली
श्री राम हसेले मुख मोड़ ऐ।
आरे भला नक्षत्र सीता घर से बाहर भइलु रामचन्द्र भइले बटवार ऐ।

८३

बर सांवर बाटे अउरु हाथे धेनुष गुरुबान ए।
सुकुआर, सुबुधि, सेयान सुन्दर से वर सीता ही योग ए।
सगरे नगर बरीआत घुरूमें, रीखे दुआरे भइले ठाढ़ ए।
अकरोड़ घोड़ा पकरोड़ घोड़ा-बरीयात बइठे जनवास ए।

रामचन्द्र चढ़ाव भेजे ले ताग पाट मेराई ए—
सुतवाल धोती, सोने के चउकी रामचन्द्र चढ़ाई ए—
दाल पहीदा घीवइ बारा वोह पर नीमो गारी ए—
कनक जीरा मोद गमके समधी आगे परोसी ए।
तारल भंटा, सउनल अमचुर समधी आगे परोसी ए

८४

चांद उगेला चांदनी सुरज, सुरज उगही ना पाई।
वैसे उगेला बेटा के बाप, छाती चन्दन चढ़ाई चांद उ०
वैसे उगेला बेटी के बाप, छाती भसम चढ़ाई।
कोठा उपर कोठरी जहां दीअरा ना बाती,
ताही पैटी सुतेले कवन बाबा रानी बेनिआ डोलाई।
पइसी जगावेली कवन बेटी, बाबा भले नींद आई।
दुअरा पर ठाढ़ कवन समधी, बाबा भले नींद आई।
कुछ रे सुतीला बेटी कुछ रे जागीला बेटी भले नीद आई।
कुछ रे दहेजवा के सोच नींद लागे ना आई।
पइसी जगावेली कवन बहीनी भईआ भले नींद आई।
दुअरा कवन दुलहा ठाढ़ रे भले नींद आई।
कुछ रे सुतीला कुछ रे जागीला बहीनी भले नींद आई।
कुछ रे दहेजवा के सोच नींद लागे ना आई।

८५

कहवां ही देव गरज गईले बाबा हो, कहवां ही होला अंधार ए।
केकरा ही बेटा के बीअहन बाबा हो, नव लाख मांगे दहेज ए।
गोखुला में देव गरज गईले, मथुरा में होला अंधार ए।
राजा दसरथ जी के बेटा के बीअहन, नव लाख मांगे दहेज ए।
गईआ तु दीहल भइसीआ हो बाबा, बारह वरध धेनु गाय ए।
एक सरवर बाबा से होना ही संकलप, कन्ता उदासल जाए ए।

गइआ त देवो भइसीया ए बेटी, बरहो वरध धेनु गाय ए।
एक सरवर बेटी न संकलपवी, सरवर मोर बुनीआद ए।
सरवर पइसी नहइतों हो बाबा, अररे सुखइती लम्बी केश ए।
बाट जे पुछीत बटोहिया ए बाबा, लेहो बाबाही जीके नाम ए।
जब बेटी गइली ए गांव के बहरवा, सरवर गइले सुखाय ए।
चाक चकइआ कुहुंक बन गइले, पुरईनी गइली कुम्हीलाई ए।
ले आव बेटी हो कलम दुअतिया, ले आव कुसवा के डाढ़ ए।
ले आव बेटी हो पढ़ल पण्डितवा, सरवर देवहु लिखाय ए।
काहां हम पइबो बाबा कलम दुअतिया, काहां पइबो कुसवा के डाढ़ ए।
काहां हम पइबो बाबा पढ़ल पण्डितवा, सरवर रउरी बुनीआद ए।
जब बाबा सरवर कुसवा संकलपेले, सरवर भइले छछकाल ए।
चाक चकइआ दूनों केल्ह करतु हैं, पुरइनी हालरी लेइ ए।
सरवर पइसो नहइह ए बेटी, अरार सुखइह लम्बी केश ए।
बाटे जे पुछीहे बटोहीआ ए बेटी लीह ससुर जी के नाम ए।

८६

गंगा बहीए गईली यमुना ए बेटी हो, सुरसरि बहे निरधार ऐ—
ताही तर बाबा हो धिआवा संकलपे ले, कांपेला कुसवा के डाढ़ ऐ।
ब्रह्मा कांपे ले विष्णु कांपे ले, कांपेला कुसवा के डाढ़ ए—
धीआ लेले कांपे ले बाबा हो कवन बाबा—कैसे पत रहीहे हमार ए।
कीया पत राखे ले देव नरायण कीया पत राखे पंच लोग ए—
कीया पत राखे ले भइया कवन भइया—जीन्ही भइआ दाहीन बांह ए।
कवन गरहनवा हो बाबा सांझ ही लागेला—कवन गरहनवा भिनुसार ए—
कवन गरहनवा मड़वन लागेला—कबदोना उग्रह होई ए।
चन्द्र-गहणवा हो बेटी सांझ हीं लागेला सुरज ग्रहनवा भिनुसार ऐ—
धीआ ग्रहनवा हो बेटी मडवन लागे ला—कब दोना उग्रह होई ए।
लपकी लपकी दान दीहले कवन बाबा—जइसे सावनवा के बूंद ए—
उछली उछली मोटा बांधे ले कवन समधी—जइसे मोटा बांधेला बजाज ए

८७

लाल खड़ंउआ तोर कवन दुलहा चटर चटर करे रे
खोजेले गिरी धवरह मानीक दीप बरे रे।
खोजेले नवरंग सुन्दर खोजेले राजा धिअवा रे
मिली गइली गिरी धवरहरी, मिली गइले मानीक दीप रे
मिली गइले नवरंग सुन्दर, मिली गइली राजा धिअवा रे।
ताही पैठी सुतेले कवन दुलहा जबरे कवनी देई रे।
पीठी करवट देहले सुतेले मुखहू न बोलसु रे।
ओरीयन ओरीयन सासु फीरे केवड़ना आकी भोर रे।
चादर उधारी जब देखेली मोरी धीआ रे।
कीआ बाबु दान दहेज थोर कीआ बाबु जात हीन रे।
कवनी गुनहीया हम चुकली त मोरे धीआ पाटे सोवे रे।
नहीं ला दान दहेज थोर नहीं सासु जाती हीन रे।
नहीं सासु रउरा गुनहिया गइली नहीं धीआ पाटे सोवे रे।
अस्सी ही कोस चली अईली त बटीआ गइले रे।
बटिया के झकझोरल अलदे नीन्द बाउर रे।
अतना बचन सासु सुनली पइठेली धवरहर रे।
काढ़ेली तेल फुलेल कस्तूरी बासे अवटन रे।
आजु कुकुर जनी भूकस पहरुआ जनी ठनकस रे।
आजु हम हुड़बी नवरग धनी पर बाधनी रे।

८८

जइसन असाढ़े रे मास बिजुली चमके
ओईसन कवन दुलहा के दंतवा चमके।
गांव के बहर होके ब्राह्मण पुकारे
आरे आरे कवन ए दुलहा के रजवा बोलावे।
कीया राजा मरीहनि कीया गरीआवे

कीया राजा आहो ए ब्राह्मण देशवा निकाले
नहीं राजा मरीहनि नहीं गरीआवे
नहीं राजा आहो ए बबुआ देशवा निकाले
उनका जे बाड़ी ए बबुआ धिअवा कुंआरी
तोहरा के आहो ए बबुआ दिहेना बियाही
परीछे बाहर अइली सासु रे मदागिनी दुलहा के रूप रे
देखी रहेली लोभाए—
कीया तोरा अहो ए बबुआ कुदेला कुदेल कवनी दवइया
ए बबुआ मैया तोरा खइली उहे दवइया बबुआ अ ानही नाही हमरा के
अहो ए सासु कुदेला कुदेल पती दवइया ए सासु
मइया मोरा खइली उहे दवईया ए सासु बाबुजी के पास।
दाढ़ी के बेटा छीनारी के जामल उलटी पलटी देला हमरा के गारी।

८६

लीले लीले घोड़वा चेलीक असवरवा बाबा के ठकुरी बहुत ए।
राऊर ठकुरइआ बाबा मोही नाहीं भावेला हमे बेटी दुःख बहुत ए॥
आवहु बेटी हो जांघ चढ़ी बैठहु दुःख सुख कहु समझाई ए।
कवन-कवन दुःख तोहरा हो बेटी से दुःख कहु समझाई ए॥
दाल हो भात बाबा हमरो भोजनीआ करुआ ही तेल असनान ए।
लहरा पटोर बाबा मोर पहीरनवा बालक रउरा दमाद ए॥
उसर खेत बेटी कांकर बोइला ना जानी तीत ना मीठ ए।
बड़ ही घर बेटी तोह के बियाहीला ना जानो छोट न बड़ ए।
छोट ही से बड़ होखीहे ए बेटी जौ कुल रखबू हमार ए।

९०

कवन लाल के ऊँची अटरिया सुरूज मुख छाइला ए
कवन लाल के कन्या कुंआर त दुलहा चाहेली ए
कवन लाल के पुत्र तपसिया आंगन भोर तप करे ए

भीतर से निकलेली कवनि अम्मा थार भरी मोती लेले ए
लेहुना पुत्र तपसिया आंगन मोर छोड़हु ए
काकरबों थार भरी मोतिया आंगन नाहीं छोड़वि ए
रऊरा घरे कन्या कुंआर त मोही से बियाह देहु ए
बाहर से अईले कवन भईया हाथ के खड़ौंआ लीहले
मारव पुत्र तपसिया बहिन मोर मांगेला ए
भीतर से निकलेली कवन बेटी मोतियन मांग भरे ए
जनि मार पुत्र तपसिया जनम मोरा के खेयी ए
के मोरा छान छवावेला के मोरा जल भरे ए
के मोरा बहिंया पकड़ीहें कैसे पार लागबी ए ।

६१

पोखरा के पींड़ी पींड़ी पतवा लहसी गइले
चुनवे चुनवटल चारो घाट ए ।
ताही चढ़ी देखेले बेटी के बाबा हो
केते दल आवे बरिआती ए ।
हथिआ अचास आवे घोड़वा पचास आवे
रानी रौतीन आवेली बहूत ए ।
से देखी दहलेले बेटी के बाबा
दौड़ के लावेले केवार ए ।
अपना रसोइआ मे तो बोलेली कवन बेटी
काहे बाबा लाइला केवार ए ।
इ बरिअतिया बेटी केई सम्भारेला
केई करिहें कन्यादान ए ।
इ बरिअतिया बाबा चाचा सम्भाले ले
रउआ बाबा करबी कन्यादान ए ।

६२

बाबा के दुलारल बेटी कवन सुहवा ऐ
आहो बाबा देले डलवा बीनाइ त जालो बेटी फुलवा लोढ़े ऐ।
फुलवा लोढ़त बेटी धूप गइली ऐ
आहो सुते बेटी अंचरा डसाइ त ओही बनवा भीतर ऐ
घोड़वा चढ़ल अइले कवन दुलहा
आहो घोड़ा पीठी डमरू बजावे तो जागु जागु मलहोरीन बिटिया ए।
मलहोरीन होखो राउर माइ बहीनीआ
आहो हम त कवन लाल के बेटी त आईल बानी फुलवा लोढ़े ए।
जऊ तुहूं हउ कवन लाल धियवा हो
अहो हम त कवन लाल के बेटा आईल बानी तोहरा लोभे ऐ।
जऊ रउरा हईं कवन लाल बेटा
अहो मोरा आगे पोथिया बिचारू त एही बनवा भीतर ऐ।
पोथी मोरा छुटेला बनारस
आहो पढ़ल लिखल सब भोर भईले तोहरा आगे भेंड़ा भइलों ए।

६३

अरे अरे करीअहीं बादल राम जनी बरिसहु
अरे माई बीअहन जईहें कवन दुलहा सिर मौरी भींजी जइहें।
बुन्दीआ के छातवा बीनइवों की चकीलीआ के जाजीम
अरे माई अन्हरीआ के दीयरा बरईवो त सिर मौरी बांची जइहें।
मचीआ बईठल तुहुं सासु तो बाबु से मीनती करे
अरे बाबु बड़ारे जतने धीअवा पोसली त वोरहन मती देहु।
घरवा खीलइवों सासु घीव लडुआ अवरू शंकर लडुआ
अरे सासु बहरा सोरहीआ गाय के दूधवा त राउर धीअवा सुखे रही हें।
मचीआ बईठल तुहुं अम्बा त सुनील बचन मोर
अरे अम्बा सात रे उपास धनीया पवली त वोरहन जनी दीह।

नव ही मास बाबु एही कोखी एही कोखी रखली ही हो
आहो बाबु गुहे मुते सड़ले चुन्दरीआ त बोरहन नित देवों हो ।

६४

कांच ही बांस कटाईला मड़वा छवाइला
अरे माई ताहि तर बाबा निरेखेले कत दल आवे बरीआत ऐ।
हाथीआ अचास आवे घोड़वा पचास आवे
अरे भाई रानी रौतिनी आवेली बहूत ऐ।
मड़वा समधी भइले ठाढ़ ऐ
हाथीया हाथीसार देवों घोड़ा घोड़सार देवों
अरे माई रानी रौतिनी दुअरे रहीहें ठाढ़ समधी घामे घूमें रे
हाथीया के दाना देवों घोड़वा के भूसी देवों
अरे माई रानी रौतिन भोजन बनाउ मांड़वा समधी पीहेरे
ईतना वचन जब सुनले कवन दुलहा रोस से वेरोस भईले
घोड़ा से उतर गइले ए
अरे सासु कवन अवगुन मोरा बाबा कइले बाबा लोग मांड़ पिये रे
लहंगा उट्ठंग अईले चुनरी घुमिल अईले
अरे बाबु चोलिया के बन्द अइले छोट त बाबा लोगवा मांड़ पिये रे
लहंगा सिलाई देबों चुनरी रंगाई देवों
अरे सासु चोलिया के बंद जोड़वाइ देवों बाबा लोग मोरा भात खइहें रे

६५

कौनि नगरिया से आइल जोगिया।
कौनि नगरिया बजावे बारहो बजना ॥
पूरब नगरिया से आइल जोगिया।
पच्छिम नगरिया बजायो बरहो बजना ॥
जाहु तोहि जोगिय बियाहब मोरी गउरी
लेई आव आहो जोगी नवरंग बजना ॥

हमरा देश सासु बजना ना होखे।
संखवे बजाइ सासु होजइहें बीग्राह ॥
जाहु तुही जोगिया बिग्रहब मोरी गउरी।
लेइ ग्रावहु जोगी नवरंग कपड़ा ॥
हमरा ही देश सासु कपड़ो न होला।
मृगछाल लावहु सासु हो जइहे बीग्राह ॥

६६

बेटी तोरी पतरी कमर लामी केश कि हंरे बेटी
तोको कहां के सौदागर लीए जाए कि हंरे बेटी
बेटी तोको कहां के वोजीर लिये जाए।
बेटी तोरी ग्रम्बा रोवेली गले लाए
बेटी तोरी दादी रोवेली गले लाए कि हंरे बेटी
तोको कहा के सौदागर लिये जाए।
बेटी तोरी फुग्रा रोवेली गले लाए
बेटी तोरी चाची रोवेली गले लाए कि हंरे बेटी
तोको कहां के वोजीर लिए जाए।
बेटी तोरी भाभी रोवेली गले लाए
बेटी तोरी दीदी रोवेली गले लाए कि हंरे बेटी
बेटी तोको कहां के सौदागर लिए जाए कि हंरे बेटी
तोको कहां के वोजीर लिए जाए।

६७

भईग्रा समुझावहु ;
जिन्ही रे डलले सिर सेन्दुर तेकरे साथे जाए देहु
सभवा में बइठल मोर बाबा रोवे ग्रंगना में मईग्रा रोवे
लाली लाली डड़िया धरी पांचो भैया रोवे
ग्रब बहीनी पराया भइली ॥

सभवा बैठल मोरे चाचा रोवे अगना में चाची रोवे
लाली लाली डड़िआ धरी पांचो भईआ रोवे
अब बहीनी पराया भईली अब बहीनी पराया भईली ॥

९८

बेटी के बाबा चउक चढ़ि बैठे सोनवा संकल्प करे दान।
बजन बजाउ सहनइआ बजाऊ सहनइआ के शब्द सोहावन।
पंडित गोत्र उचारे जे लागेले अब हम करबो धीआ दान ।
चउंक चढ़ बैठेली बेटी कौन बेटी काहे बेटी बदन मलीन ।
कीया तोरे बेटी अन धन कम भइले कीया तोरे सरिया धुमील ।
कीया तोरे बेटी हे श्यामसुन्दर नाहीं काहे कइलु बदन मलीन हे।
बजन निवारु सहनइआ निवारु जहु बेटी बदन मलीन हे।
नाही मोरे बाबा हो अनधन कम भइले नाहीं मोरे सरिया धुमील।
नाहीं मोरे बाबा हो श्यामसुन्दर नाही यहीं कइलों बदन मलीन ।

९९

भाई बहिन बाबा एके कोख जनमल।
दूधवा मैं पीयलुं ढकोर।
भइआ के लीखल बाबा रउरी चौपरिया।
हमरो लीखल दुर देश हे।
बजन बजाऊ सहनइआ बजाऊ।
अबे हम करबो धीआ दान।

१००

गंगा यमुन नदीया आंतर अब कैसे के
दउरइब दुलहा ईही लाली रे घोड़ीया।
हमरा त बाड़ें ए सुहवा सोने मुठी रे छुरीया
कटबो खीरीकीया ए सुहवा दउरइबो लीली घोड़ीया।

बाबा मोर सुनीहें ए दुलहा मनही रे अनन्दी हें
अरे भइया मोरा सुनीहें ए दुलहा चोरइहें लीलीरे घोड़ीया
अम्मा मोरा सुनिहें ए दुलहा मनहीं रे अनन्दी हें
अरे भौजी मोरी सुनीहे ए दुलहा चोरइहें सोने मुठी छुरीया।
आजु त जे अइवो ए सुहवा बावा जी के हो चेरिया
काल्ह त अइवों ए सुहवा सजल बरीअतीया।
आजु त जे अइवों ए सुहवा भइआ जी के चेरिया
काल्ह त जे अइवों ए सुहवा सजल बरीअतीया।

१०१

बेरी हीं बेरी बाबा बरजो हो बड़ारे ठकुरवा के बाबा बिटीउआ जनी हो डाल।
बड़ारे ठकुरवा नीरमोहिया हो पर रे विटीउआ के बाबा दरद नाहीं जाने॥
दिनवा कटावे भीनी सुतवा हो रतिया दरवावे हो बाबा मुगईआ केरा हो दाल।
मीनती से बोले ले कवन समधी मीनती से बोलेले कवन भइया हमरो बिटीउआ ए समधी डवउआ केरा हो पान।
बीहसी के बोलले कवन समधी तोहरो बीटीउआ ए समधी लक्ष्मी हो हमार।
एक तेलवईआ दुइ अबटन मोती ए भरइबो हमहु पतोहीआ केरा हो माँग।

१०२

काहे बीनु सुन बैठकवा काहे रे बीनु आंगन ए।
काहे बीनु सुन कोहबरवा मड़उआ मोरा ना शोभे ए।
भैया बीनु सुन बैठकवा गोतीनि बीनु आंगन ए।
ननद बीनु सुन कोहबरवा मड़उआ मोरा ना शोभे ए।

भैश्रा मोरा अइले बैठकलवा गोतिनी अईली आगन ए ।
कोहवर बीहंसेली ननदीश्रा मड़उश्रा मोरा शोभेला ए ।

१०३

उठु उठु चेरी बेटी तूहुँ देख आउ रे
अरे कैसन कवन लाल सजे ले बरीआत ए
अरे कैसन कवन लाल सजले बरीआत ए।
उजर उजर कपड़ा रंगीले रंगीले दांत
अरे छोटे छोटे छोकड़ा सजले बरीआत ए ।
उठु उठु चेरी बेटी तूहूं देख आउ ए
अरे कैसन कवन समधी महल उठावे रे।
ऊचें ऊचें घरवा के नीच रे दुआर रे
अरे बीचे दरवाजवा भाटीन गावे गीत ए।

१०४

चीठीया जे लीखले कवन भैया देहु भैश्रा कवन हाथे ए।
आज मोरा बाबा के यज्ञ हुउए सबहीं माली आवसु ए।
कहेली भउजी हम ना जाइब नउजी यज्ञ शोभसु ए ।
कहेले भइश्रा हम जाइब भैश्रा मोरा अफसर ए।
गोतीश्रा जे बैठले जाजीम चढ़ी ननदोइश्रा पलंग चढ़ी ए।
बीनारे गोतीनी के मड़उश्रा मड़उश्रा मोरा नाशोभे ए।
सासु रहसु भा जासु गोतीनी मोरा आवसु ए।
गोतीश्रा जे बैठसु जाजीम चढ़ी सासु गलइचा चढ़ी ए।
जांघे जोरी बैठली गोतीनीया मड़उश्रा मोरा शोभेला ए।

१०५

रामही राम गुण गाईला गाई सुनाइला ए
गोतीश्रा के परेला हकार गोतीनी चली आवसु ए

गोतीश्रा भइले भर माड़ो गोतीनी भर कोहबर ए।
गोतीनी के मन दवनगीरा ननद बीनु ना शोभे ए।
एतना बचन भैश्रा सुनलन सुनही ना पावेले ए।
लीले घोड़ा भइले असवार बहीनी के लीश्रावन ए।
घोड़वन्ही श्रावेली कवन बहिनीश्रा त डरीश्रा बहीनी श्रावे ए।
वोही पीछे श्रावेले कवन भइश्रा बहीनी मोही श्रावेली ए।
बाहर के भैया भीतरइले बहर नाही भइलन्ही ए।
श्रावत बाड़ी बाबा के दुलरुइ गरम जनी बोलहु ए।
श्रावहु ए ननद श्रावहु मोरी चौधुराइनी ए।
छीपा ले गोड़वा धोव रसोइश्रा समावन ए।
ननद हो जगभारन जगमोरा भारेली ए।
धोवल चउरा धरवली डेहरीश्रा मसकावेली ए।
पकवल बारा चीखली डेहड़ीश्रा मसकावेली ए।
बेरही बेरही बरजो पुरुष नाही मानसु ए।
नेवते के कहलों ननदोइश्रा ननद लेइ श्रावसु ए।

१०६

बेरही बेर तोहे बरजो हो बाबा जेष्ट ही धीश्रा जन व्याहहु ए
हाथी घोड़ा बाबा धुपेधुप श्रइहे कुंश्रर जैहे कुम्हीलाई ए॥
जब बरीश्रात कौशल्या दहे उतरे हाथी घोड़ा चराबरी जाए ए।
लोग बरीश्रात बेटी पनवा खीलाइब कुंश्रर के चन्दन चढ़ाइब॥
जब बरीश्रात नगर बीचे श्रइले सुरसरी खोजेली श्रहार ए।
उठ के जे दीश्ररा बराव हो कवन लाल खोरीश्रा में श्रइले अंधीयार ए॥
साकर गलीश्रा तोहरो कवन लाल साकर तोहरो दुश्रार ए।
ताही में श्रटकेला मौरी कवन दुलहा मौरी के फुल श्रझुराइ ए॥

१०७

श्राय गइले डाल दौरी
श्राय गइले सिर मौरी

आय गइले धिया के सोहाग
धिअवा ले चौक बैठ।
सोना डलवे सोना अइले
रूपा डलवे रूपा अइले
बांस डलवे धिआ के सोहाग
त धिया ले चौक बैठ।

१०८

बरवा ह छिनार के जामल कनिया ह पुरधान के।
डालवा देख जनि भूलीह ए बाबा डलवा ह मंगनी के।
कंठवा देख जनि भूलीह ए बाबा कंठवा ह मंगनी के।
हलका देख जनी भूलीह ए बाबा हलका ह मंगनी के।

१०९

बाबा हो बाबा जगाइला बाबा ना बोलेले रे
साजु बाबा आपन हथिया मैं दूर गौना जाइबी रे।
चचा ही चचा जगाइला चचा ना जागेले रे
साजु चचा अपनी पालकिया मैं दूर गौना जाइबी रे।
भैया भैया जगाइला भैया ना जागसु रे
साजु भैया आपन घोड़वा मैं दूर गवना जाइबी रे।
बाबा ना जागेले हथिया लोभे चचा ना पालकीया लोभे रे
भैया ना जागेले घोड़े लोभे दूरी गवना जाइबी रे।
अम्मा ही अम्मा जगाइला अम्मा ना जागेली रे
साजु अम्मा अपनी झंपीया मैं दूर गवना जाइबी रे।
चाची ही चाची जगाइला चाची ना जागेली रे
साजु चाची अपनी चदरिआ मैं दूर गवना जाइबी रे।
भौजी भौजी जगाइला भौजी ना जागेली रे।
साजु भौजी अपनी गहनवा मैं दूर गवना जाइबी रे।

अम्मा ना जागेली झंपिया लोभे चाची ना चदरिया लोभे रे।
भौजी ना जागेली गहनवा लोभे दूर गवना जाइबी रे।
जागेली एकली नउनिया जवन मुड़ गुहेली रे
आरे बजनिया भैया बजन बजावहु रे
से सुन सखी सब अइहें मैं दूर गवना जाइबी रे।

११०

बेरिया के बेरी तोही बरजों हरिनिया रे
दुबिया चरन मती जाहु रे
बहेलिया रे लोगवा आइ जइहें
त तोहरा के फंसा ले जइहें रे।
जो बहेलिया लोग आइ जे जइहें
धनिया हमहुं चली जाइबी नीखुफ बनवा सुन होइहें।
बेरिया के बेरी तोहीं बरजो हो कौन बेटी
सखिया के संग जनि जाहु रे
दुलहा लोगवा आइ जे जइहें
तोहरा के बिआही ले जइहें रे।
जौं मोर दुलहा लोग आइजे जेइहें
डड़िया चढ़वी चली जाइबी रे
मैरिया गोदी सुन होइ जाइ रे।
बेरिया के बेरी तोही बरजों कौन लाल
दूर रे नौकरिया जनी जाहु रे
समधी लोगवा आइ जे जइहें
तोहरा के पकड़ी ले जइहें रे।
जो मोरा समधी लोग आइ जे जइहें
देबहुं गलइचा बिछाइ रे

समधी लोगवा बैठी जे जइहें
देबों सतरंजिया बिछाइ रे।
बेरिया के बेरी तोही बरजों बाबू हो कौन बाबू
मदरसा मती जाहु रे
बहनोइया लोगवा आइ जे जइहें
तोहरा के पकड़ी ले जासु रे
जौं बहनोइया लोग आइ जे जंइहें
देवों जाजीम बिछाइ रे

१११

लादी चलेला बनिजरवा बेटउआ ना रे
लादी चलेला हरी मोर हमहु के डंड़िया फनाऊ बनिजरवा रे
हमहुँ चलबी रउरे साथ रे।
भुखिया ना सहबू पिआसिया ना सहबू
पान बिनु जइबू कुम्हिलाई रे।
फुस की चटइया धनी सोवे के पइबू हो
अङ्ग छीली अ छीली जाई हो।
भुखिया मैं मरबों पिआसिया मैं मरबों
पनवा देबहुं बिसराय रे।
फुस की चटइया बलु सोइबो मोर रजऊ हो
हमना संग छोड़बी तोहार हो।
एक बने गइलों दूसर बने गइलों
तीसर में लगली प्यास हो।
बून्द एक पनिआ पिआव बनिजरवा रे
नाहीं त छुटेला सनेहिया ना रे।
नाहीं इहां ताल रे नाहीं इहां पोखरा
नाहीं इहां कुआं पनीभरीनी रे।

कइसे मैं पनिया पिआऊं मोरी धनिया रे
छुटे चाहे रहसु सनेह हो।
अपना मैं बाबा के एकली बिटीउआ रे
भइया के एकली बहिनी रे।
अपना मैं भौजी के एकली ननदिया रे
आरे बनिजरवा के साथ रे।

मंगल

मंगल

११२

पर्वत ऊपर देव बरस गईले लंका में भईले अंजोर ए
कीया राजा दशरथ गढ़ गुढ़ तोरे ले कीया राजा खेले ले शिकार ए।
नाहीं राजा दशरथ गढ़ गुढ़ तोड़े ले नाहीं राजा खेले ले शिकार ए।
राम बीआहन जनकपुर जाई राम के बरीआत ए।
जब राजा दशरथ गोण्ड़े ही अईले हथीनी छोड़े ली चीकार ए।
हथीआ के चकमक सुरज छपित भईले पचतन खेह उड़ी आई ए!
झरा झरोखा चढ़ी माता नीरेखे ली धीआ दस आउर होई ए।
ई धीअवा मोरी अैरन बैरन और कलेजवा के साल ए।
ई धीअवा मोरा नगर लुटावेली और तुरेली मोरा मान ए।
भईले बीआह परेला सिर सेन्दुर भईले दहेजवा के बेर ए।
घर में के भण्डा देहरी देई मारेली शत्रु के धीआ जनी होई ए।
गईया मैं देलों भैंसीया मैं देलों बरहो बरध धेनु गाए ए।
अतना दहेज हम बेटी के देलीं सरवर मांगें श्रीराम ए।
जेरे स्वामी मोरा सभा में बैठेले केहु नाहीं कईले जवाब ए।
सेरे स्वामी मोरा नैए नैए बीनवेले सीता दासी तोहार ए।
खम्भन अलोत भैले माता बीनवेली सुनी स्वामी बचन हमार ए।
जेकरा के स्वामी धीआ अईसन दीहीला सरवर कवन बुनीआद ए।
जब धीआ गईलीन गांव के बाहरवा सरवर गैले सुखाए ए।
चाक चकईआ दुनों बन के सीधारेले पुरईन गईली सुखाए ए।
आनहु बेटी हो पढ़ल पण्डितवा और कुसवा के डाठ ए।
सरवर देवहु लिखाए ए।
जब बाबा सरवर कुसवा संकलपले सरवर भईले छछकाल ए।
चकवा चकईया दुनों केल करे पुरईन हालर लेई ए।
सरवर पइठी नहईह ए बेटी अरारे सुखइह लम्बी केस ए।
बात जो पुछीहें बटोहीआ ए बेटी लीह ससुर जी के नाम ए।

११३

बाबा हो तु त बर एक खोज हम बेटी भईली सेआन ए
अइसन बर एक खोजीह ए बाबा हंसें जनी नैहर के लोग ए।
सांझे अवधपुर जईह ए बाबा निज दशरथ जी के दुआर ए
खेलत होई हें सरयु के तीरे अनेक कुंअर संग साथ ए।
छोट ही देख जनी भुलीह ए बाबा छोटही सुबुधी सेआन ए
चारो भईया में सांवर देखीह उहे हउए कंता हमार ए।
आल्हर बंसवा कटाव मोरा बाबा हो आल्हर मड़वा छवाय ए
ऊंचे ही मड़वा छवाव मोरा बाबा हो नीहुरे ना कंता हमार ए।
गाय के गोबर अङ्गना लीपाईल गजमोती चउका पुराई ए
सोने के कलशा पुरहथ ले धराईला मानीक दीअरा बराई ए।
भईले बीआह परेला सिर सेन्दुर भईले बीदईआ के बेर ए
हाली देना बीदवा कराव मोरा बाबा हो कैसे जैहे कंता हमार ए।

११४

कटोरा भरी अगर चनन बन्टा भरी पान
लेहु ना रामचन्द्र सासु देली पान
रे माई परिछव रामचन्द्र जनकपुर जाई॥
रामजी के चीरा शोभे सिरे झलकाई,
सीता जी के सारी शोभे जरद किनारी
रे माई परिछव रामचन्द्र जनकपुर जाई॥
रामजी के जोड़ा शोभे अंगे झलकाई
सीता जी के सेन्दुर शोभे कछु बरनी न जाई
रे माई परिछव रामचन्द्र जनकपुर जाई॥
रामजी के मोजा शोभे पावें लगाई
सीता जी के महावर शोभे कछु बरनी न जाई
रे माई परिछव रामचन्द्र जनकपुर जाई॥

११५

अवधपुर से नीकले बरीआत जनकपुर शोर भए
कुंवर छबीली सब परीछन चलेली सांवल सुरत अनमोल ए
झारी बीछावन सुरज बईठेले कहुँ वर रहे जनवास ए
एक ओरी बईठेले जनक रीखे सब ताल खरई कटाई ए
दशरथ जंघीआ रामजी बईठेले सुरज अलोपित होई ए
जनक जंघीआ सीता जी बईठेली कर लेली सोरहो शृङ्गार ए
सखीआ सलेहर बहुत मीलली अम्बा रोवेली गले लाई ए
बहुत प्रेम से बहीनी मीलली माई मीले हीया लाई ए
सीता स्वयम्बर राम के धनुका धन्य पिता जी के भाग ए ॥

११६

लिखी चिट्ठीया जनइआ रीखे भेजेले, बांची लिहले श्रीराम ए
हमें घर बाड़ी हो सीता देई, तोहे घरे रामजी कुंआर ए
अगहन दिनवा कुदिनवा राजावा रे, आवे देहु जेठ बैशाख ए
ब्राह्मण बोलाईब लगन सोचाईब, सीता ही राम के बीआह ए
अरई लवंग रीखे खरई कटावेले, बन बृन्दा केरा बांस ए
बांसे छाईला सीता के माड़ो, ऊपरा ढुरेला राज हंस ए
गाई के गोबर आङ्गन लिपाईला , गजमोती चौका पुराई ए
सोनवा के कलशा पुरहथ ले धराईला, मानीक दियरा बराई ए
राम लक्ष्मण दोनों चलले बीअहन, दल साजी अइले परशुराम ए
कलशा के अलोत भईले सीता बीनती करे, आदीत शरण तोहार ए
वार राम धनुष बड़ भारी , उठत वीलम्ब जनि होई ए
पहला बाण परेला बनारस , दूसर खीलेला पताल ए
तीसरा बाण गंगा बीच परेला , मुछित रहे परशुराम ए
भईले बीआह परेला सिर सेन्दुर , सीता के डण्डिया फनाउ ए
भरथ भुआल दुनो लगले करीआ , राम भैले असवार ए
एक कोस गईले दूसर कोस गईले , तीसरे में रहले परशुराम ए

हमरी बरली सीता केई रे बिआहेला , मारवों धनुषा चढ़ाए ए
डड़ीया भीतर सीता अरज करे , आदीत शरन तोहार ए
पातर राम धनुष बड़ा भारी , अब का करीहें परशुराम ए
पहील बाण गीरेला बनारस , दूसर खीलेला पाताल ए
तीसर बाण गंगा बीच गीरेला , अब का करीहे परशुराम ए
मचीआ बैठल कौशीला रानी परीछहु , परीछहु पुत बहुआर ए
चन्दन मंगा कोशीला के हो उहे, रण जीत अइले राजा राम ए
सुवार दूधवा नहईह पुतवा जुड़ईह , भुगुत अवधवा के राज ए

११७

मथवा में शोभेला मउरीआ देखत सोहावन
अरे माई ईना जानो मलीनिया के हाथ गुने कीदो राम जी के माथे गुने ।
लीलरा में शोभेला सन्दलवा त देखते सोहावन
अरे माई ईना जानो पण्डितवा के हाथे गुने कीदो रामजी के भाल गुने ।
कनवा में शोभेला मोतीया त देखते सोहावन
अरे माई ईना जानो सोनरवा के हाथे गुने कीदो रामजी के कान गुने ।
अंगवा में शोभेला जोड़वा त देखत सोहावन
अरे माई ई ना जानो दरजीया के हांथे गुने कीदो रामजी के अंगे गुने ।
पांव में शोभेला मोजवा त देखते सोहावन
अरे माई ई ना जानो चमारवा के हांथ गुने कीदो रामजी के पांवे गुने ।
बाजन जे बाजेला गहागही सुनत सोहावन
अरे माई ई ना जानो बजनीया के हाथे गुने कीदो रामजी के विवाह गुने ।

चौकनी बइठल सीता सुन्दरी देखत सोहावन
अरे माई ई ना जानो   बीधाता के हांथ गुने   कीदो रामजी के
साथे गुने हो ।

११८

कांच ही बांस कटाउ ए सखी
अरे सखी पाननी मांड़व छवाई सीतली आजु रे बिअहब—
गाई के गोबर अंगना लीपाइला
अरे सखी गजमोती चौका पुराई सीतली आजु रे बिअहब—
सुवंर्ण कलश पुरहथ ले धराईला
अरे सखी मानिक दीप जलाउ सीतली आजु रे बिअहब—
जहां ले बइठबो दशरथ जी के बेटा
अरे सखी मोतीअन अंजुरी भराउ सीतली रे आजु बिअहब—
जहां ले बइठबो जनक जी के बेटी
अरे सखी सेन्दुरनी मांग भराउ सीतली आजु रे बिअहब—
सब देवता मिली जै जै बोले
अरे सखी सुफल भईले मनकामन सीतली आजु रे बिअहब—

११९

जनक हो तूं त जनक राजा चार कन्या तोहरे घरे—
चारो के बीअ आन बैठाईला सोचीला दिनवा सुदिन ए—
जब राजा दशरथ बीअहन चलेले सखी सभ मंगल गावही
जब राजा दशरथ गोएड़न अईले हथीनी छोड़े ले चीकार ए
हाथीया के चकमक सुरज छपित भैए पचतन खेह उड़ जाई ए—
जब राजा दशरथ दुअरन अईले जनक आरती उतार ही ए—
जब राजा दशरथ मड़वन अइले भारी जाजीम बीछावही—
दस नह जोड़ जनक बीनवे ले सुनी दशरथ मोरी बात ए—
दान दहेजवा के जोड़ जन करबी सेवा हमसे नावनी

मुंह रुमाल देके हंसे राजा दशरथ सुनी जनक मोरी बात ए—
अईसन बोली जनी बोलीं जनक जी से सेवा तुमसे अच्छी भई
कपड़ा अलोत होके माता बीनती करे सुनी सीताजी के बाप ए—
मोरी सीता आन देखावहु राखहु प्राण हमार ए—
मड़वा ही ओठघल बोले जनईया रीखे सुनी सीताजी के माय ए—
जेकर सीता से हो लेई जाला बस नाही चलेला हमार ए—

१२०

मचीया बैठल हो रुकमीनि झारे लम्बी केश।
तोहरो बिआहब ए रुकमीनि कृष्णजी के साथ ए
पोथी तोरा फारवो ए ब्राह्मण तुरवों जनेव
हमरा के अहो ए ब्राह्मण ऐता हो गारी।
भूइयां बैठल रुकमीनि झारे लम्बी केश।
अरे दुअरा झलक गईले कृष्णजी के चनडोल
ब्राह्मण कहलीया माई रे झुठ ना होए ए।
अरे दुअरा झलकरे गईले कृष्णजी के चनडोल।
पोथी तोरा देवो ए ाह्मण देवहु जनेव
तोहरा ब वनोया ए ब्राह्मण झुठ नाहीं होए।
दुअरा झलकरे गईले कृष्णजी के चनडोल।

१२१

एक केदली के खम्भा त आनी गड़ावहीं
ए जी उसमें हीरा लाल त मानीक दीप हो
मन मानीक मोती चउका पुरे कुम्हीन कलशा धरावही
आई रुकमीनि गीत गावही कुंअर गौरी पुजावही
मोरो पीछुअरवा नउनीया तो मलीनी हकारु ए
ए जी आज मोरा राम के वीवाह त मौरी गुथी लावहु ए

मालीनी गुथेले मौरी सेयानी गुथी लावही ए
ए जी उसमें फुल अनेक त नेग नहीं पावही ए।
से मउरी बांधे रघुनन्दन सजे भगवान ए ;
असा दल साजु बरीआत जइसा दल बादरी।
घनघोर घोड़ा बछेड़ा आजन बाजन बाजही
तान चढ़ल सगे सार साहेब अनुप वाजन वाजही
जब राजा रामचन्द्र मड़वन अईले देखहु मन लगाइ ए;
चउका ही बैठे ना जाने कोसीला के पुत्र ए।
जब राम चउका ही अईले देखहु मनलाई ए।
भावँर घुमही ना जाने कौशीला के पुत्र ए।
जब राम भावर घुमेले देखहु मनलाई ए।
सेन्दुर वन्हही न जाने कौशीला के पुत्र ए।
सन सीनोरा सेनुर बंधले देखहु मन लाई ए,
कोहवर आवही ना जाने कौशीला के पुत्र ए।
जे एही मंगल गावही गाई सुनावही
से हो बैकुन्ठे को जाही सदा फल पावही।

१२२

पहीले गइले अलख नीरंजन तब फिरी श्री जगरनाथ ए।
तब फिर गैली लछीमी सरोसती अधर देहु समुझाई ए।
सभ देवता मीली एक मत होई, जाई समुन्द्र के तीर ए
तुम घरे बाड़ी हो अछे बेटी लक्ष्मी हमें घरे बाड़े जगरनाथ ए।
से सुनी समुन्द्रा हो मनही आनन्देली बेआस के परेला हंकार ए।
नीक लगन सोच देहु ए वीप्रजी करबि लक्ष्मी वीआह ए।
सब देवता मीली भात बनावही छपन भांति प्रकार ए।
तैतीस पण्डित भात परोसेले देवता बैठे जेवनार ए।
सब देवता मीली वर के संवारेले हीरा रतन जड़ाई ए।

हाथी साजीला घोड़ा साजीला देवता भईले असवार ए।
जब बरीअतीया समुन्दर तीरे उतरेला जाई समुनदर के तीर ए।
देश ही देश के देखन आए देखत पाप पराई ए।
अते गुन आगर है वर सुन्दर हीरा रतन जड़ाई ए।
सब देवता मिली वर देखे चलेले देखत पाप पराई ए।
का हम देखो रहो वर सुन्दर वरके जे लिलुवा नाही ए।
से सुनी समुन्दरा हो रोदना पसारेली अब नाहीं करबो वीआह ए।
सब देवता मिली समुन्दरा समुझावेले पुरुष न एक मय होई ए।
करीना वीआह देवता सभ आनन्देले उठेला मंगलाचार ए।
माड़ो छाईव कलस धरवि मानीक दीप वराई ए।
सब सखीया मीली मंगल गावही लछमी संग होला वीवाह ए।
जेई हो गाई जगरनाथ जी के मंगल से बैकुन्ठे जाई ए।

१२३

सोहावना सोहावना, मनभावना ए जनकपुर लागत सोहावना।
गाई के गोवर अंगना लीपावल ए गजमोती चौका पुरावना
ए जनकपुर लागत सोहावना।
सुवर्ण कलस पुरहथ ले धरावल मानिक दीप बरावना
ए जनकपुर लागत सोहावना।
राम सीय दुनो दुलह दुलहीन ले चौका बैठावना
ए जनकपुर लागत सोहावना।
मिथीला नगर की भामिन मिलीजुली मंगलचार मनावना
ए जनकपुर लागत सोहावना।

१२४

कै टका के रतन चौकीया कै टका हीरा लाग रही ?
दस टका के रतन चौकीया बीस टका हीरा लाग रही।

कहंवाही के तुहुं वीप्र गोसांई कहवाही ढारीला पांव हरी ?
कहवाही से जो पाती लावल केकरा ही तीलक लीलार ए ?
कुन्डीलपुर के वीप्र गोसाई द्वारका में ढारीला पांव हरी ;
रानी रुकमीनि जो पाती पढ़ावेली कृष्ण के तीलक लीलार हरी।
कहां गए बाबा रे कहां गए भइआ रथ साजु झटाझट ए ;
माखन मीसोरी देवकी ले ले खालेहू कृष्ण प्यारे हरी।
माखन मीसीरी मोहीं नाहीं भावे रथ साजो खड़ा रे खड़ी ;
जैसे रे पपीहा पंथ जोहे वइसे रुकमीनि जोहे हरो।
साजी दल सीसपाल आए गड़ुर चढ़ी गोपाल हरी ;
गांव बाहर गौरी पुजत कृष्णजी रुकमीनि गीत हरी।

१२५

रामलखन दुनो बन के अहेरिया दुनो भैया खेलेले अहेर ए।
एही मधुवनवा में कहु नहिं आपन राम प्यासल जासु ए।
अपना महलिया से निकलेली सीता रानी हाथे गेड़ुअवा जुड़पानी ए।
पींही दुलरुआ जुड़ पानी ए।
केकर हउ तुहु धिया सीता रानी केकर हउ तू पतोही ए ?
केकरा ही कुलवा व्याहल बाड़ू के हउए स्वामी तोहार ए ?
राजा रीखइया जी के धिया हम हई
दशरथ कुलवा व्याहल बानी; स्वामी के नाम श्री राम ए।
इतना बचन जब सुने राजा रामचन्द्र गलिया गलिया खोजेले कहार ए।
लेहु कहार भैया डाल भरी सोनवा सीता के अयोध्या पहुंचाइ ए।
रोवेली सीता आंचार लोर पोछेली भुइंया लोटे लम्बी केश ए।
कौन सुदिन हम घर से बाहर भइली राम भइले बटवार ए।
चुप होखु सीता पटोर लोर पोछहु भोग अयोध्या के राज ए।

१२६

एही रे अयोध्या में तिनी गो वृछवा एक महुअवा दुइ आम ए।
एही रे अयोध्या में तीन मनुष्यवा एक सीता दुइ राम ए।

रामलखन दुनो बन के अहेरिया सीता के मड़उआ बैठाइ ए।
जोगिया के भेष धरिअइले रावणवा सीता के दुअरिया भिक्षा मांगी ए।
अंगना बहरइत चेरिया लौंड़िया जोगिया के भिक्षा देइ आइ ए।
चेरिआ के हथवा रे गोवरे गोवराइन जिन्ही रे बोलेली तीन्ही देसु ए।
तरकइली सोनवा उपर तिलचाउर जोगिया के भिक्षा देवे जाइ ए।
भिक्षवो ना लेला जोगी मुखहु ना बोले ला ना करे हमसे जवाब ए।
गेडुरा भीतर हम भिक्षा नाहीं लेबो गेडुरा बाहर भिक्षा देहु ए।
गेडुरा बाहर जब भइली सीता रानी सीता के रावण हरि लेइ ए।
राम लखन दुनो घर चलि अइले सीता के मड़इयो देखे सुन ए।
क्या सीता उड़ेली क्या सीता बुड़ेली क्या सीता खिलेली आकाश ए।
नाहीं सीता उड़ेली नाहीं सीता बुड़ेली नाहीं सीता खिलेली आकाश ए।
योगिया के भेष धइले अइले रावणवा सीता के रावणवा हरले जाइ ए।
मारवि रावन दहन करवि लङ्का सीता के मड़इया बैठाइ ए।
सीता के बदल मन्दोदरी हरि लेबों तब त कहावों श्री राम ए।

१२७

साजीला इन्द्र साजीला गजराज
साजीला भरत भुआल ए।
साजी बरात जनकपुर उतरे
राजा जनक दुआर ए।
हाथ के जाजीम झारी बिछाइला
बैठी नृपती सब लोग ए।
कलशा अलोत भइले सीता मिनती करे
बाबा से अरज हमार ए।
इ नृपती बाबा हमें चिन्हावहु
कौन वरण श्री राम ए।
काने कुंडल गले तुलसी के माला
श्यामवरण श्री राम ए।

जेकरा ही लिलरा तिलक शोभे
बेटी उहे हवें स्वामी तोहार ए।
भइले व्याह परेला सिर सेन्दुर
जै जै बोले सब लोग ए।
जिअसु राम जिअसि मोरी सीता
भोगसु अयोध्या के राज ए।

१२८

भीतरा से बोलेली बेटी रे कौन देई बाबा से अरज हमार ए।
देश पैठी बाबा वर एक खोजहु धिया भइली व्याहन योग्य ए।
पूरूब खोजीला पश्चिम खोजीला खोजीला देश संसार ए।
तोहरा के बेटी हो वर नाहीं मिलेला पोखरी डूबी बलु जाही ए।
काहे के ए बाबा सेज रउरा सोइला काहे के गइली रनिवास ए?
काहे के ए बाबा धिया जन्माइला विरहे दिखाइला पोखरी ए?
पूरूब खोजीला पश्चिम खोजीला खोजीला देश संसार ए।
तोहरा के बेटी हो बर ए मिलेला जस ए गोपिय में के कान्ह ए।
अरइल बन बाबा खरइल कटाइला बनवृन्दा केरा बांस ए।
पानन ए बाबा माड़ो छवाइला धिया भइली व्याहन योग्य ए।
सुवरन कलश ए बाबा मड़वा धराइवि मानिक दीप बराइ ए।
धिया लेइ ए बाबा कुशवा संकल्पवि करि लेइ धर्म विआह ए।

१२९

मलीअही अवटन त मइल छुड़ाइला ए।
जे दूरदेशी लोग तिन्हे नहीं भावही ए।
चढ़त चन्दन बोलत ब्राह्मन विप्र गोत्र उचराही ए।
धन्य धन्य सीता भागही तेरी राम अस बर पाइ ए।
सोने के कलशा में निर्मल पानी कुंअरी के नहवाइ ए।
चौकही अछत चन्दन धरीले विप्र के बुलाइ ए।

सखिया ले चली है मड़वा अङ्ग अङ्ग छुड़ाइ ए ।
घुंघुंट काढ़ी के सीता बैठे राम हंसे मुख मोरी ए ।
पांच सखिया मिलि बैठी के पान चबावहीं
गावत प्रभुजी के मंगल भावत केशरी ए ।
ककना से टरिया खूब बना है गले मोतिन के हार ए ।
ओह् वेसरी के छवि देखि के सकल जग मोहि ए ।
गले कंठा विराजे मोतिन के माल ए ।
जेब से यह बधी विराजे जैसे सांप के केचूल ए ।
जे यह मंगल गाइ सुनावे से बैकुंठही जाइ ए ।

१३०

बाबा रे मोरा ब्याह करि देहु तोह से ना होखि हे निर्वाह ए ।
बुढ़वा वर से तरुण नाहि निवही हम योग्य बर खोजी देहु ए ।
बाबा हो सुन्दर वर खोजबि धिया भइली ब्याहन योग्य ए ।
तीन भुवन के हम ठकुराइन नाहीं त हंसीहें सब लोग ए ।
खोजहु बाबा अवधपुर पार राजा दशरथजी के द्वार ए ।
चारि भैया मिली जे वर सुन्दर से वर कन्त हमार ए ।
खेलत होखीहें अवधपुर के खोरिया बहुत कुंअर लिये साथ ए ।
पान फुल बैजन्त्री के माला विहंसत सरयू का तीर ए ।
छोट ही देखि जनि भुलहु बाबा हो कुंअरन में महावीर ए ।
करिर कटाइ बाबा खम्भा गड़ाइबि वन वृन्दा करा बांस ए ।
ऊंच के बाबा हो मंडवा छवाइबि निहुरे ना कन्त हमार ए ।
मुंगीया दरीय बाबा दाल रिन्हाइबि सगरे सरिहन केरा भात ए ।
आदर से बाबा भोजन कराइबि बैठे के पुरइन पात ए ।

१३१

जब शिव चलले हो गौरी ब्याहन देव धनुष संग लाइ ए ।
जाइ बरात हिमांचल गृह पहुँचे सखि दस मंगल गाइ ए ।

अंगना लिपावल कलशा धरावल गज मोती चौका पुराइ ए।
हरदी जे पीसी मदागीनी भेजेली शिवजी को हरदी चढ़ाइ ए।
नहछू भइल नहावन भइल नाउनी बैठी मुख मोरी ए।
शिव के न्योछावर केकरा से मांगबि शिव के माई न बाप ए।
कलशा के ओते भइले बोलेली गौरा देईसुनु नाउनी बचन हमार ए।
जनि नाउनी झंखहु जनि नाउनी झुखहु जनि चित करू बैराग ए।
शिव के न्योछावर हमरा से मांगहु हम तोरा राखबि मान ए।

१३२

केकरा दुअरवा रे गज"हथीनी सवारी ले मोतियन गुथीला लगाम ए ?
केकरा दुअरवा के चित्र मौरी उरेहीला मोहि रहेला संसार ए।
दशरथ दुअरवा रे गज हथीनी संवारीला मोतियन गुथली लगाम ए ;
रीखे दुअरवा रे चित्र मौरी उरेहीला मोहि रहेला संसार ए।
अपने झरोखवा रे ठाढ़ी सीता रानी झारे ली लम्बी लम्बी केश ए।
सखी सब आइके बेद विचारहु कौन पुरुष श्री राम ए।
सोने के पालकी संवारल आवेला ढोटे ढोटे लागेला कहार ए।
सोने का छत्र विराजत आवेला चहे पुरुष श्रीराम ए।
पहिर सुमित्रा रानी पाट पिताम्बर पहिर कैकइ रानी छीट ए।
पहिर कौशिल्या रानी पाट पिताम्बर राम परीछी लेइ आइ ए।
नाहीं बहिनी पहिरबि पाट पिताम्बर नाहीं रे दखिन रंगल चीर ए ;
सवती के राम बलइया मोरा परीछबि फूटेला आँख हमार ए।
हम बहिनी पहिरबी पाट पिताम्बर हमरे दखिन रंगल चीर ए ;
आपन राम मैं अपने परीछबि नयना जइहें जुड़ाइ ए।

१३३

खम्भ ही ओठंघली बेटी के माई सुनि स्वामी मिनती हमार ए।
देश पैठी स्वामी वर एक खोजहु धीया भइली ब्याहन जोग ए।
एक हाथ लेले बाबा झांझर तमरूआ दोसर हाथे लोटवा के डोर ए।

देश पैठी बाबा बर एक खोजेले धिया भइली ब्याहन जोग ए।
एक बन गइले दूसर बन गइले तीसरे जे गंगा अवगाह ए।
हाली बेगि केवट पार उतारहु अवध जइबों मैं आजु ए।
छोट मुट गछिया कदम जुड़ छंहिया झुर झुर बहेला बेयार ए।
ताही तर राम लक्ष्मण दुनो भइया हाथ गुलाल मुख पान ए।
गांव केरा विप्र बेगही चली आवहु कादहु पोथिया पुरान ए।
पोथिया खोलीय वाभन लग्न सोचहु राम के तिलक चढ़ाई ए।
खम्भ ही ओठंघली बेटी हो कौन देई सुनि बाबा वचन हमार ए।
जात विलम्ब नहीं लागल बाबा हो कसरे अइली अगुताइ ए।
जनि बेटी हहरहु जनि बेटी झंखहु जनि चित करू बैराग ए।
तोहरा के बेटी हो बर एक खोजीला सगरे गोपीय मेके कान्ह ए।

१३४

इंट कंचन बांधू बेटी सुभग माड़ो छवाई ए,
चारू कोना दीप बरे कनक कलश धराइ ए।
मुनी जन सब आई बैठे राम लगन धराइ ए,
बैठु राजा बैठु दशरथ बैठु भरत भुआल ए।
बैठु रीखे जांघ जोरी आसन जानकी बैठाइ ए,
दिन्ह कन्या दान राजा रानी पहिने पटोर ए।
तीन लोक के शोभा सुन्दरी संग देती है भांवरी,
उत्तम खेतो मध्यम वेदी लली घोड़ा दान ए।
पिरथपाल में चिरंजीवी नर हरी उत्तम दुलहीन पाइ ए,
तुलसी दास बलिहारी रघुबर राम के गुण गाइ ए।

१३५

पानन माड़ो छाइले मोती गुहाइले,
समधी के करीले सभाखन तब यश पाइले ए।
आहे जनक भये हैं ठाढ़त करजोरी भाखीला रे।

रउरा माफीक हम नाहीं आगे कर जोरीला ए।
बड़ कुल बड़ धूप माड़ो सकल जग जानि ए,
पीछा धरी बड़ जानी त मनमें राखीला ए।
कहु अवध के बड़ाई त इहे जग जानीला ए,
आपन करीलेहु अधीन त बर के आगु में।
धन्य भाग हमार दुलहीन अस पाइला ए,
गावत प्रभु के मंगल भावत केशरी ए।

१३६

अरे सुतल रहले रीखे उठके बैठले परेला सीता पर डीठ ए।
जेकरा घरे सीता अस सुन्दर से भइले ब्याहन योग ए।
बारी सिता रीखे केरा मन्दिर श्याम वरण रघुवीर ए।
अरे देश ही देश के विप्र हंकारीले देहीला सुपारी हाथ ए।
देश पैठी एक रघुवर खोजबि जे बर सीता संयोग ए।
बारी सिता रीखे केरा मन्दिर श्याम वरण रघुवीर ए।
आरे पूरब खोजलों मैं पश्चिम खोजलों खोजलों उड़ीसा जगन्नाथ ए।
सीता जोग वर कतहु ना मिलेला अब सीता रहसु कुंआर ए।
एक बर देखों अरे अयोध्या के गलिया वोही वर सीता संयोग ए।
आरे कई सौ आवेला असुर सुरंजन कइ सौ साजन लोग ए।
मुनी देवता सब देव लोक अइलेदेखत पाप पराई ए
अरे छोटे-छोटे हथिया सिगारल आवेला इंगूरा ढरेला चारू पांव ए।
ताही चढ़ल राजा दशरथ आवेले द्वारे जनकपुर पांव ए।
राम लछमण भरत शत्रुघ्न चारो ही वर संयोग ए।
काने कुंडल सिर मौरी बिराजेला आवेला घंटा घनघोर ए।
सभवा बैठल राजा दशरथ बिहसेले भले मिलाये विधि जोड़ ए।
जैसन रघुवर तैसन सीता मिलावेले अब विधि जीवन हमार ए।
माई बारी सीता रीखीया केरा मन्दिर श्याम वरण रघुवीर ए।

१३७

आरे बैठेले चौक चढ़ी अंगवो ना डोलेला ए
टुकुर टुकुर वर चितवे नयन बड़ा साफ ए।
माई अजब दुलह्वा बन आये;
काहे बाबू लक्ष्मण अत केरा गोर,
काहे राजा रामन्द्र सांवर ए ?
क्या राजा दशरथ भक्ति भुलइले,
क्या कौशिल्या रानी परेली बिसभोर ए ।
नाहीं राजा दशरथ भक्ति भुलइले,
नाहीं रे कौशिल्या रानी परेली बिसभोर ए
आरे एक त गुजरिया संघ बने बन धाई;
दुसरे विमुख भइले रघुवीर ए।

१३८

गायी के गोबर अंगना लिपाइ गज मोती चौका पुराइ
देखो सखि राम जनकपुर आये।
जब राजा रामजी गोएड़ आये भटवा ने घुघुरी बजायी
देखो सखि राम जनकपुर आये।
देवों मैं भटवा रे चढ़ने के घोड़वा दुअरन जाइ मोहि देहु ए।
देखो सखि राम जनकपुर आये।
जब राजा रामजी दुअरीअनी आये चेरिया कलस लेले ठाढ़ ए
देखो सखि राम जनकपुर आये।
देवों मैं चेरिया रे सोने के कलशवा आंगन जाय मोहि देहु ए।
देखो सखि राम जनकपुर आये।
जब राजा रामजी आंगन बीच अइले सरवा लिहले बिलमाइ
देखो सखि राम जनकपुर आये।
देवों मैं सरवा रे जोड़ा एक धोतिया ब्याहन जाय मोहि देहु ए।
देखो सखि राम राम जनकपुर आये।

जब राजा रामजी मड़उन आये ब्राह्मण गौत्र उचारे
देखो सखि राम जनकपुर आये।
देवों मैं ब्राह्मण सोने के जनेउआ चौकन जाय मोहि देहु ए
देखो सखी राम जनकपुर आये।
जब राजा रामजी कोहबर आये सरहजी छेंकेली द्वार ए
देखो सखि राम जनकपुर आये।
देवों मैं सरहज लहरा पटोरवा कोहबर जाय मोहि देहु ए
देखो सखि राम जनकपुर आये।
भइले ब्याह परेला सिर सेन्दुर सखि सब भेंटे अंकवार ए
अइसन आशीश मोहि देहु ए अम्मा भुगतो अयोध्या के राज ए
देखो सखि राम जनकपुर आये।
अंग के अमर होखीह ए बेटी भुगत अयोध्या के राज ए
देखो सखि राम जनकपुर आये।

१३६

अवध-पति के बरियात निकले जनकपुर भये शोर ए।
छर छबीली सब परिछन चलेली सांवली सूरत अनमोल ए॥
परीछी के अगवान दिन्हे क्या पुछे अगवान ए।
झारि बिछावन सूर्य दिहले कोहबर इहो जनवास ए॥
एक ओर बैठेले दशरथ राजा झिलि मिलि झालर लाई ए।
एक ओर बैठेले जनक राजा सब ताल खरइ डसाइ ए॥
दशरथ जंघिया राम जे बैठेले सूर्य अलोपित होइ ए।
जनक जांघिया सीता बैठेली कर लेली सोरहो शृंगार ए॥
सखिया सलेहर बहुत मिलेली अम्मा रोवेली गले लाइ ए।
बहुत प्रेम से बहिनी मिलेली भाइ भुअन नाहीं भेंट ए॥
ई प्रतिष्ठा ब्याह जग में ऐसी छवि अनमोल ए
सीता स्वयम्बर राम धनुष पिता जनकजी के पुराय ए
जो यही मंगल गाइ सुनाई सो बैकुंठ ही जाइ ए।

१४०

सीता केरा स्वयम्बर खबरी जनाइ ए।
देश ही देश के भूप जनकपुर आइ ए।
ए देश ही देश के मुनि जनकपुर आइ ए।
लाल ही पाट के जाजीम झारि बिछाइ ए।
ए बैठे नृपति सब लोग धनुष उठाइ ए।
ए हारि हारि सब बैठे धनुष नहिं डोलि ए।
छुइ छुइ सब बठे धनुष नहिं तोड़ि ए।
तब मुनि आशीश देले करेले सन्मान ए।
अब सीता रहती कुंआरी धनुष नाहीं टुटेला ए।
राम लक्ष्मण दुनो भैया दुनो समतूल ए।
हंसि के जे बोलेले राजा राम धनुष हम तोड़ि ए।
हाथ से धनुष उठवले कइले नव खंड ए।
ए जै जै बोले सब देव जनकपुर ब्याह ए।
गायी के गोबर मंगाइला अंगना लिपाइ ए।
ए गज मोती चौका पुराइला कलशा धराइ ए।
नारी सब पारेली गारी जुगुती सब झूठ ए।
ए भांवर फेरही ना जाने कौशल्या के पुत्र ए।
जब राम भांवर घुमले देखहु मन लाइ ए।
सखि सब गावेली गारी जुगुती सब झूठ ए।
सेन्दुर बांधही ना जाने कौशिल्या के पुत्र ए।
कोहबर पढ़ही ना जाने कौशिल्या के पुत्र ए।
जब राम पढ़ले कोहबर सुनहु मनलाइ ए।
जैसन अमवा के गाछ कोयलवा के बोल ए।

१४१

एकही बांस के मांड़ो त आनि गड़ाइ ए।
ओही में हीरा लाल त मानीक दीप बरी।

मन मानिक मोती पुराइला कुंभ कलशा धरावहीं,
अत्यन्त रूक्मीणी गीत गावे कुंअर गौरी पुजावहीं ।
मोरा पिछुअरवा नउनिया त कोइरीन हंकार ए,
आजु मोरा कृष्ण के ब्याह त हरदी ले आवहीं ।
कोइरीन हरदी ले आवही बहुत गुण गावहीं,
इसमें रंग बहुत गीनत नहीं पारही ।
अरे हरदी मलेली सुहागीनी चन्दन लगावहीं
हरदी शोभे कृष्ण अंग में अंग सुहावनहीं ।
चार सखी आगे चार सखी पीछे चार बीच में शोभही,
सब सखीन के बीच रूक्मीणी गौरी पुजन आवहीं ।
मोरा पिछुअरवा नाउनी त मालीनी हंकार हूँ,
आज मोरा कृष्ण के ब्याह त मौरी लेइ आवही ।
मालीनी मौरी ले आयीं तो अत गुण गावहीं,
ओह में फूल में अनेक गीनत नहिं पावहीं ।

॥ छन्द ॥

जाही से जुही चंपा फुल गुलाब लगावही ।
दवना से मरुआ कुम्भ कनइल कृष्ण के मन भावहीं ॥
अरे अत दल साजु बरिआत जैसे दल बादरही ।
अरे कृष्ण चलेले दल साजी के कुण्डीलिपुर ब्याहनही ॥
घन घोड़ी घन बछेड़ी घुघुर बाजही ।
रथ चढ़ल संसार साहेब अनेक बाजन बाजहीं ॥
आरे आज मोरा कृष्ण के ब्याह मंगल एक गावहीं ।
जो यही मंगल गावही गाइ सुनावहीं ।
सो बैकंठ ही जाइ सदा सुख पावहीं ॥

१४२

घर घर नारि सुहागिनी मंगल गावहीं ।
गावत चलेली सखि सब ढोल बजावहीं ।

अब बाजु ढोल नौबत संख भेरी निकलही ।
उठी बरात मांग भराई नारी पहिर अभरन आवहीं ।
आवहू नगर के ब्राह्मण गणेश पुजावही ।

छन्द

ए पुजाइ गौरी अनेक रामही राम तिलक चढ़ावही ।
लीखी देत तुरन्त लग्न पत्री राम सीता ब्याहही ।
जनक दुलारी के ब्याह शोभे देखन आये सब लोगही ।
गाऊ गाऊ मंगल जाहीं जुही जुगुल अंचली डालही ।
शोभी शोभी माड़ो लाल पिअर पान से भला छावही ।
गायी के गोबर अंगना लिपावही गजमोती चौका पुराइ के
राम चुमावही ।
चित्र विचित्र कंठ नील कलस हाथ रोरी
भरपुर जलकर माड़ो समधी हेरही ।
दुंलहा दुलहीन चौका बैठही बहु रंग केसर पाग जामा
कान मोती सोभही ।
देवलोक से फूल झरी रही
जो यही मंगल गावही गाइ सुनावही
सो बैकुंठ ही जाइ सदा सुख पावही ॥

१४३

कर जोरी विनवती माइ मदागिनी रूक्मीणी ब्याहन योग्य हरी ।
इ रूक्मीणी हम जाइ ब्याहवी जे बर रूक्मीणी योग्य हरी ।
इतना बचन जब सुनले रूक्मीणी के जेठ भैया हरी ।
इ रूक्मीणी शिशुपाल ब्याहवी उहे बर रूक्मीणी जोग हरी ।
इतना बचन जब सुने रानी रूक्मीणी गिरी परेली मुर्छायी हरी ।
सखि दश उठावेली सखि दस बुझावेली सखि दस बेनिया डोलाइ हरी ।
उहवां से उठे रूक्मीणी अंमा गोदी बैठेली सुनी अम्मा बचन हमार हरी

उहे पुरुषवा अम्मा आनि दिखावहु नाहीं त तेजबी जिअरा आपन हरी,
ना हम देखों अम्मा देवनरायण नाहीं देखों पांचो पंडा हरी।
जेही पुरुष हम भुगते ना पवली डे गइले हृदया हताश हरी।
आंचर फारि रूक्मीणी कर रे कगजवानयना काजर मसिहान हरी।
अंवटी पवटी लिखली रूक्मीणी सरे सन्देशवाबीचे ठंइया बारहो
बियोग हरी
कृष्णजी आवत भये विप्रजी जात भये बीचे ठइयां भइ गइले भेंट हरी।
कंहवा ही विप्र जी रउरी बिजे भइले कंहवा ही भइले भेंट हरी।
हाथ मनी बरे गोड़े मनी बरे मनी बरे आठो अंग हरी।
माथे मनोहर वेसर सोभेला रूप भवानी के अंग हरी।

१४४

जै जै शब्द जनकपुर होइ ऋषि द्वारे बाजन बाजी ए।
से सुनि सीता हो चढ़िली अँटारी सखिया से पुछेली बात ए।
पुछेली सीता रे सखिया सलेहर कौन वरण श्री राम ए।
गोरे लछमण गोर धनुष गोर भरत भुआल ए।
सांवर राम तिलक भला शोभे गले बैजन्त्री के माल ए।
से सुनि सीता मनहीं आनन्देली धन्य धन्य भाग हमार ए।
जब बरिआतिया गोएड़वनी अइले भटवा लिहले बिलमाइ ए।
देवो मैं भटवा रे चढ़ने का घोड़वा मोरा आगे सीता बखानु ए।
क्या राजा रामचन्द्र सीता बखानू सीता सूर्यवा के ज्योत ए।
सीता के ज्योति चन्द्रमा छपित होइहें मोहि रहेले श्री राम ए।
जब बरिआतिया दुअरवन आइले चेरिया कलश ले ले ठाढ़ ए।
देबो मैं चेरिया रे सोने के कलशवा मोर आगे सीता बखानू ए।
क्या हम सीता बखानू राजा रामचन्द्र सीता बखानलो ना जाइ ए।
सीता के ज्योति चन्द्रमा छपित भइले मोहि रहेले श्री राम ए।
जब राजा रामचन्द्र मड़वन अईले सीता राम चौका बैठाऊ ए।
भइले ब्याह परेला सिर सेन्दुर जै जै बोले सब लोग ए।

धन्य राजा दशरथ भाग्य तुम्हारो धन्य कौशिल्या महतारी ए।
धन्य अयोध्या नगर बखानीला जहां राम लिहले अवतार ए।

१४५

आहो जिअल जन्म राजा एकहु ना जानीला जाही घर रामजी कुंआर ए।
आहो इतना बचन राजा सुनही ना पावेलेपलंग से उठले चिहाइ ए।
हथवा के लेले राजा सुबरन छड़िया चलि गइले रिखे के द्वार ए।
आहो एक कोस गइले दूसर कोस गइले मिली गइली कुंआ पनिहारिन ए।
केकर हऊ तुहु चेरिया लौड़िया केकर हऊ पनिहारिन ए।
आहो कौन सुहागिन के अबटन लावेलू झारी बाँधेलू लम्बी केश ए।
आहो राजा जनइया रीखे चेरिया लौड़िया सुनैना रानी के हंइ पनिहारिन ए।
आहो सीता सुहागिनी के अबटन लाइला झारी बांधीला लम्बी केश ए।
आहो तोरा घरे बाड़ी चेरिया सीता कुंआरी हमें घरे रामजी कुंआर ए।
आहो ब्राह्मण बुलावहु चेरिया लग्न सोचावहु राम हि सीता के ब्याह ए।
आहो मोर पिछुअरवा रे भिखम कहरवा सीता जोगे डड़िया फनाऊ ए।
आहो एक कोस गइले दूसर कोस गइले औरी कोसवा पचास ए।
आहो डड़िया उघारी जब देखेली सीता केहुना ही आपन होइ ए।
अपने पटुकवा ले राम लोर पोछेले सब बाड़े इहवां तोहार ए।
आहो अंगना बहरइत चेरिया लौड़िया सुनु चेरिया बचन हमार ए।
आहो आवत बाड़ी रामजी के सीता कोहबर लिख भलीभांति ए।
एक ओर लिखीह हो पुरइन पतवा एक ओर कमल के फूल ए।
एक ओर लिखोह हो बाबा जनइया रीखे एक ओर माइ मदागिनी ए।
आहो आवत देखबी पुरइन पतवा उठत कमल के फूल ए।
सुतल देखबों मैं बाबा जनइया रीखे उठत माइ मदागिनी ए।

१४६

आंगन सुन चौक बिन बाबा हो कोयल बिन आम डाढ़ ए।
सेहो गोकुल सुन कन्हैया बिन बाबा होसीता ही बिन श्री राम ए।

एही रे बने बीचे दुइ रे बलकवा दुनो ही वार कुंमार ए।
बंहिया लफाइ लदमण हृदया लगावेले कह बाबू बाप के नाम ए।
बाप के नाम हम ही नाहि जानीला पितिया ही लदमण नाम ए।
माता जे हमरी सीता देई रानी राम दिहले बनवास ए।
देबो मैं बबुआ हो अनधन सोनवा औरी अयोध्या के राज ए।
देबो मैं बबुआ हो चढ़ने के घोड़वा आपन माता दिखाऊ ए।
मचिया बैठल तुहु माता सीता देई सुनु अम्मा अरज हमार ए।
एही रे बने बीचे दुइरे तपसिया राख अम्मा बचन हमार ए।
छोटी मुटी सीता हो सूर्य मनावेली आदित शरण तोहार ए।
अइसन पुरुषवा के मुंह नहिं देखबी जिन्ही रे दिहले बनवास ए।
फाटहु धरती समाइ बलु जइतीं रामजी से भेंट नहिं होइ ए।

१४७

झांसी नगरिया से अइली हरिणिया रहसि रहसि धरे पांव ए।
उनका सिरवा कदम फुलवरिया मथवा चढ़ेला बाड़ा रूप ए।
टूंठी पकड़िया कदम जुड़ छंहिया तंहा कृष्ण खेले जुआसार ए।
तंहवा ही विप्र जी पांति पसारेले कृष्णजी लिहले उठाइ ए।
जब हो कृष्णजी पवन रथ जीतेले बाजेला घुघुरा निशान ए।
मैं बलि जाऊं यहि राजा के गलिया जिन यह मड़वा छवाऊ ए।
बाबा जे हमरो देश ही केरा राजा पितीया करेले दरबार ए।
अम्मा जे मोरी चौरासी के रानी बरिकन माड़ो छवाइ ए।
अजन बजाऊ बाबा बाजन बजाऊ सहनाइ के शब्द सुनाइ ए।
ब्राह्मण पंडित गोत्र उचारेले हम नाहीं करबो ब्याह ए।
कलशा के ओते ओते दुलहा मिनती करे दुलहिन से अरज हमार ए।
मंडप विध्वंस जनि कर दुलहिनिया हो होइबो मैं दास तोहार ए।

१४८

खेत भला जहां गेंहुआ उपजी गइले
रोहिणी भला जहां धान ए।

कोखिया भला जहां पुत्र जन्म गइले
रतिया भला जहां नींद ए।
मचिया बैठली तुहु सासु बड़इतीनो
सुनी सासु बचन हमार ए।
जस देखी राम केदली बने अइलन
मुरली बजावे अनरीत ए।
बोलहु बहुआ हो अमृत बचन तोहार ए
जऊ मोरा राम केदली बने अइहन
सेनुरे भरबी तोहार मांग ए।
बिसहु बहुआ रे जीरकुल सहुआ
राम खोजन हम जाइ ए।
एक बन गइलों दूसर बने गइलों
नदिया बहेला चौधार ए।
हाली हाली केवट नौवा ले आव
राम खोजन हम जाइए।
राम के अंगना चन्दन केरा गछिया
जहां राम रचेले धमार ए।
जाइके माता द्वारी ठाढ़ भइली
राम उलटीवो ना देखे ए।
लेहुना माता रे अनधन सोनवा
और अयोध्या के राज ए।
हमरो भरोस जनि करु माता
हम दूर देशी लोग ए।
आगि लगहु बाबु अनधन सोनवा रे
और अयोध्या के राज ए।
माइ के कोखिया बोरसी चारि अगिया
धधकि धधकि रहे आग ए।

१४९

नन्द बाबा एक बगीया लगावेले कृष्ण ही राखे रखवार ए।
बारी समय राधा दही बेचे चलेली कृष्ण जी भईले बटवार ए।
दही मोरा खईले मटुक सिर फोरेले आंचर धरी बीलमाई ए।
आंचर झारी रत्न मोरा देखेले हमसे कईले बराजोरी ए।
वोरहन देवे चलेली राधा गोआलीनी यशोदा आङ्गनवा ठाढ़ ए।
बरीज यशोदा हो आपन कन्हैया बन बैठी भैले बटवार ए।
दही मोरा खईले मटुक सिर फोड़ले आंचर धरी बीलमाई ए।
अंगीया खोल रत्न मोरा देखले बांधल केस अमुराई ए।
जनी राधा रोवहु जनी राधा धोवहु जनी चीत करु वैराग ए।
सांझ के बेरीया कृष्ण घरे अईहें मारब बांधी दुआर ए।
खेली खुनीय कृष्ण माता भीरी अईले बैठेले माता के गोद ए।
मै तो से पुछीला कृष्ण दुलरुआ काहे बन भैल बटवार ए।
वोरहन देवे अइली राधा गोआलिन कृष्ण भैले बटवार ए।
जो हम माता हो राधा के छुअली गोर से करीया होई जाइ ए।
जो हम राधा के नख भरी छुअली बुढ़ से जुआन होई जाई ए।

१५०

एक रिखिया के चारि बिटीउआ चारी ही बाड़ी कुंआरी ए।
चारो के ब्याहबी एक मड़उआ एक ही लग्न सोचाई ए।
बड़की के ब्याहब लंका के राजा मंझीली गोपिय में का कान्ह ए।
संझीली के ब्याहबी इशर महादेव छोटकी ब्याहबी श्रीराम ए।
लंका के राजा के ढोल ढमाका और गोपिय में के कान्ह ए।
इशर महादेव के डमरू बाजेला मुरली बजावेले श्रीराम ए।
कहँवा उतारों मैं लंका के राजा औरी गोपिय में का कान्ह ए।
कहँवा उतारों मैं इशर महादेव कहँवा उतारों श्रीराम ए।
कुर खेत उतारबों मैं लंका के राजा औरी गोपिय में का कान्ह ए।
द्वारे उतरबों मैं इशर महादेव मड़वा उतारों श्रीराम ए।

क्या देइ समदवी लंका के राजा, और गोपिय में के कान्ह ए ।
क्या देइ समदवी इशर महादेव क्या देइ समदों श्री राम ए ।
अनधन देबों रे लंका के राजा ओरी गोपिय में के कान्ह ए ।
भंगिया धतुरवा रे इशर महादेव धिअवा देवी श्री राम ए ॥

१५१

भइ आत भीर जनकजी के आंगन सखि सब मंगल गाई ए ।
सीता के हाथ कंगन भल शोभेला गांठ ही गांठ संवारी ए ॥
छुटत राम छुटत नहिं कंगन सखि. सब ताल बजाइए ।
जो तोसे राम छुटत नहिं कंगन हारि जाहु महतारी ए ॥
सब सखिया देत राम के गारी जुटी आइ रनिवास ए ।
गायी के गोबर अंगना लिपाइला गजमोती चौका पुराइ ए ।
कंचन कलश पुरहथ ले धराइला मानीक दीप बराइ ए ।
राम सीता दुनो चौका बैठेले सखि सब मंगल गाइ ए ॥
हर्षि उठे रबिकुल मनि नन्दन मालिन मउरी ले आइ ए ॥
धन्य-धन्य सीता राउर भाग्य राम अइसन बर पाइ ए ।
भइले ब्याह परेला सिर सेन्दुर देव सब जै जै बोले ए ॥

१५२

लिखि चिट्ठीया ए नारद मुनि भेजेले, विश्वामित्र पठाइ ए ॥
जाइ बरात जनकपुर पहुँचेला जाजीम झारि बिछाइ ए ॥
गायी के गोबर अंगना लिपाइला, मानिक दीप बराइ ए ॥
कंचन कलशा पुरहथ ले धराइला गज मोती चौका पुराइ ए ॥
राम सीता दोनो पास खेलतु हैं जीत लिये अवधबिहारी ए ॥
भइले ब्याह परेला सिर सेन्दुर नवलाख मांगे दहेज ए ॥
सीता ब्याहि राम घर अइलन दशरथ दर्ब लुटाई ए ॥
जो एही मंगल गाइ सुनाइ सो बैकुंठे जाई ए ॥

१५३

बड़ा रे प्राते जनइया रीखे उठले, सीता किवड़वहीं ठाढ़ ए ॥
बारी कुमारी मोरी बेटी सीता देई,पुजवा के करहु उपाय ए ॥
जबले जनक रीखे सीता समुझावेले, सीता उठे झनकारी ए ॥
धनुष उठाइ किवाड़ ओठघवली, लिपेली धर्म द्वार ए ॥
करि स्नान जनइया रीखे अइलन, धनुषा देखे मन लायी ए ॥
जे मोरा भाइ धनुष भला तोड़ी हैं, वोकरे से करबी ब्याह ए ॥
देश ही देश बाबा चिट्ठीया भेजावेले, आवहु भूप सब लोग ए ॥
हमरि घरे बाड़ी सीता कुंआरी, राखहु प्रण हमारी ए ॥
नेवता पावत भूप सब आवेले, विहँसि उठेले परशुराम ए ॥
हमरि बरली सीता केरे ब्याहेला, मारबी धनुष चढ़ाइ ए ॥
छोटी मुटी सीता हो आदित मनावेली, आदित शरण तोहार ए ॥
क्या पति राखेले हित कुटुम्ब, क्या पति राखे भगवान ए ॥
पातर राम धनुष बड़ा भारी,
उठत बिलम्ब जनि होइ ए ।
बायें हाथ रामचन्द्र धनुष उठावेले, धनुष भये नवखण्ड ए ॥
पहिल बाण पताल में खिलेला, दुसरे गिरे मजधार ए ॥
तीसर बाण यमुन दह गिरेला, मुर्छी गिरे परशुराम ए ॥

१५४

आनन्द हो भरत आनन्द शत्रुघ्न, कोयल आनन्दे आम डाढ़ ए ॥
रीखे घरे आनन्देली बारी सीता देई, अंचवत आनन्दे श्रीराम ए ॥
हाथी साजीला घोड़ा साजीला, साजीला तमुआ कनात ए ॥
रामजी के घोड़वा भलीभांति साजीला, मोतियन लगली लहास ए ॥
कर जोरि विनवेली बारी सीता देई, बाबा से मिनती हमार ए ॥
अति बरिअतिया साजीला राजा दशरथ, पानी बिनु हानि जनि होई ए ॥
हर्ष के बोलेले राजा जनकजी, सुन सीता बचन हमार ए ॥

आनि परात घीव पांव धोइबी , जै जै होइहें हमार ए ॥
गायी के गोबर अंगना लिपाइला , गजमोती चौका पुराई ए ॥
सुवरण कलशा पुरहथ ले धराइला , मानीक दीप बराइ ए ॥
सीता ही राम चौक चढ़ि बैठेले , जनक दिहले कन्या दान ए ॥
तीन छींक मंड़वा बीच परी गइले , ब्राह्मण करूना विचार ए ॥
दिन दश गइले सीता दुख पइहें , राम जइहें बनवास ए ॥
भइले ब्याह चले राम कोहबर , जै जै बोले सब लोग ए ॥
सीता ही राम कोहबर बैठेले , जनक दहेजवा के योग्य ए ॥
दिहले रीखे गाय दिहले रीखे भैंस , बारहो बरध धेनु गायी ए ॥
हीरा मोती रीखे देबहीं ना पवले , राम बोलेले दहेज थोर ए ॥
मुंहवा रूमाल देई बोलेले जनइया रीखे , सुनि राम वचन हमार ए ॥
रउरा चन्दन गाछ हमही बेइली गाछ , रउरी बचनिया के आश ए ॥

१५५

पांच सुहागिनी मिलि परीछन चलली , चौमुख दिअरा बराइ ए ॥
पांच सुहागिनी मिलि चुमवन चलली , गौरी गनेश मनाइ ए ॥
पांच सुहागिनी मिलि खीर खिआवेले , गावत मंगल गान ए ॥
पांच सुहागिनी मिलि अबटन लगावेली , रामहि सीता बैठाइ ए ॥
पांच सुहागिनी मिलि भूषण पहिनावेली , राम के रूप निहारि ए ॥
पांच सुहागिनी मिलि करेली ठठोली , कौ रउरा बाप के नाम ए ॥
हंसि सब सखिया कहत सब सखिया से , कैसे कहसु पीता के नाम ए ॥
शृंगी ऋषी जी के खीर खिअवले , तब ही भइले चारू भाइ ए ॥
माता जे उनकर बड़ा रंग रसिया , पिता के कौन प्रमाण ए ॥
बहिनी जे इनकर देव संग रसली , एही से कहत लजासु ए ॥
इतना बचन सुनि लक्ष्मण विहँसेले , रउरे अइसन मोरी माइ ए ॥
बहिनी के लक्षण सब रउरा में पाइला , रउरे अइसन स्वभाव ए ॥
पृथ्वी से जब सीता जन्मेली , पिता जनक कैसे होय ए ॥

१५६

नगर कोशलपुर बधाव बाजेला, घर-घर मंगलाचारि ए ॥
जनक ऋषी घरे बारी सीता, हम घरे राम कुंआर ए ॥
ब्राह्मण दूबे ब्राह्मण चौबे, ब्राह्मण परेला हंकार ए ॥
ग्रन्थ देखि देखि लग्न सोचावहु, राम तिलक लिलार ए ॥
गायी के गोवर अंगना लिपाइला, गज मोती चौका पुराइ ए ॥
सुवरन कलशा पुरहथ ले धराइला, मानीक दीप बराइ ए ॥
परीछे बाहर भइली सासु मदागिनी, राम रूप देखि लोभाय ए ॥

१५७

बंसवा कटावन चले राजा दशरथ, अंगुरी गड़ेला खपचान ए ॥
अंगुरी के दर्दे मरेले राजा दशरथ, कैकई के परेला हंकार ए ॥
आवहु कैकई पलंग चढ़ि बैठहु, दुख सुख कहु समुझाई ए ॥
कौन-कौन दुख तोहरा ए कैकई, से दुख कहु समुझाई ए ॥
बोलिया त हम बोली राजा दशरथ, जऊं रउरा करहु विचार ए ॥
राम लछमण दुनो बन के अहेरिया, भरत के तिलक लिलार ए ॥
बोलिया त तुहु बोललु हो कैकई, सालेला कलेजवा हमार ए ॥
राम लछमण दुनो मोरा दुलरुआ, सेकरा के कैसे बनवास ए ॥
इतना बचन जब सुने राजा रामचन्द्र, लील घोड़ भइले असवार ए ॥
एक बने गइले दूसर बने गइले, लछमण के लगली प्यास ए ॥
बन में से निकलेले ऋषिवालमीकि, हमरो मड़इया विश्राम ए ॥

१५८

ऊँच सिंहासन बैठि माता मिनती करे, सुनहु दशरथ राजा ए ॥
मोर धिया भइली ब्याहन योग्य, न्योता सकल भेजाऊ ए ॥
लेहुना बरीआ रे हाथ के सुपरिया, देशवा न्योती सब लोग ए ॥
गया में न्योतबी गया गजाधर, काशी न्योतों विश्वनाथ ए ॥
झारखंड भोला नाथ न्योतवी, न्योतवी वीर हनुमान ए ॥

गया से अइलन गया गजाधर, काशी से अइलन विश्वनाथ ए ।।
झारखंड से भोलानाथ जी अइलन, अइलन बीर हनुमान ए ।।
गायी के गोबर अंगना लिपाइब, गजमोती चौका पुराई ए ।।
चौकन बैठेले राजा रामचन्द्र, जौरे सीता देई रानी ए ।।
भइले ब्याह परेला सिर सेन्दुर, देव सब दिहो ना आशीश ए ।।
जुग जुग जिअसु राजा रामचन्द्र, सीता के बाढ़ो अहिवात ए ।।

१५९

अवध नगरिया बाजन एक बाजेला, घर घर मंगल चारि ए ।।
से सुन बाबा हो मनही आनन्देले, धिया भइली ब्याहन योग्य ए ।।
से सुन माई हो मन ही आनन्देली, बरिया के परेला हंकार ए ।।
लेहुना बरिया रे हाथ के सुपरिया, नेवत सकल संसार ए ।।
अएड़न न्योतहु गोएड़न न्योतहु, न्योतहु आदित गणेश ए ।।
तैतीस कोटि देवत सब न्योतहु, न्योतहु आदित गणेश ए ।।
ओयड़न अइले गोएड़न अइले, अइलन आदित गणेश ए ।।
तैतीस कोटि देवता सब अइलन, अइलन आदित गणेश ए ।।
बन बृन्दा केरा बंसवा मंगाइला, ताही बांसे छवाइला रुक्मीणी
के माड़ो, चन्दन लगेला किवाड़ ए ।।
बेतवा सघन से छाइला माड़ो, उपरा डोलेला हंस मोर ए ।।
जब शिशुपाल दुअरवनी अइले, माड़ो देखि मुर्छायी ए ।।
चेत से वेचेत भइले, माथे धइले ठाढ़ भइले ए ।।
काहे लागी माइ हो माघ नहइलू, काहे लागी कइलू अतवार ए ।।
काहे लागी माइ कठिन ब्रत कइलू, आखीर मिलले शिशुपाल ए ।।
घर लागी बेटी हो माघ नहइली, बर लागी कइली अतवार ए ।।
तोहरा लागी बेटी हो कठिन ब्रत कइली, तोहरो लिखल
शिशुपाल ए ।।

जो यह मंगल गाइ सुनाइ, सो बैकुण्ठे जाइ ।।

१६०

साजीला राम साजीला भइया लछमण, साजीला भरत भुआल ए।
आरे साजि बरात चले राजा दशरथ, निकली पड़ेला रनिवास ए।
वेदिया बैठल राजा दशरथ बोलेले, सुनु रानी वचन हमार ए।
आरे अपनी दयादीनी काहे ना बुलवलू, केइ परीछे श्रीराम ए।
नउआ जे पेठवेलो बरिया जे पेठवेलो, औरी ब्राह्मण पुत्र ए।
हमरी दयादीनी नउजी वलु आवसु, हमही परीछो श्रीराम ए।
कौन सखि पहिरेली इअरी से पिअरी, कौन सखि दखिन रंग सारि ए।
कौन सखि पहिरेली राम के रूमलिया, उहे परीछे श्रीराम ए।
पहिरू कैकइया रानी इअरी से पिअरी, सुमित्रा दखिन रंग चीर ए।
पहिरू कौशिल्या रानी राम के रूमलिया, उहे परीछे श्रीराम ए।

१६१

बरहो बरीसवा के भइलू ए बेटी, बाबा आगे मिनती हमार ए।
हमरो ब्याहवा ए बाबा अवधपुर करीह, जहां बसे रामजी कुंआर ए।
तोहरो ब्याहवा ए बेटी, ओही रे अवधपुर, दशरथ योग्य हम नाहिं ए।
पांव पखरीह बाबा तिलक चढ़इह, हमही मनाइब श्रीराम ए।
दुअरा जे आवत बाबा पांव पखरीह, सोने के परात मंगाइ ए।
कोहवर आवत बाबा धिया देई धलीह, हमही मनाइबी श्रीराम ए।
मचिया बैठल उजे अम्मा आनन्देली, धन्य-धन्य बुद्धि तोहार ए।
अपने उकतिया ए बेटी अत बुद्धि कइलू, धन्य-धन्य जन्म तोहार ए
धन्य-धन्य कोखिया हमार ए।
सभवा बैठल उजे बाबा आनन्देले, धन्य-धन्य बुद्धि तोहार ए।

१६२

साजी बरात चले राजा दशरथ, जाइ जनकपुर ठाढ़ ए।
आरे झारी पिताम्बर एक डासही दिहीला, बैठी नृपति सब लोग ए।
आरे कौन राम कौन हवें लक्ष्मण, कौन भरत भुआल ए।

सांवर राम गोर हवें लक्ष्मण, गोर हवें भरत भुआल ए।
अपना झरोखा सीता आदीत मनावेली, आदित शरण तोहार ए।
एही नृपतिन के मोहि दिखावहु, कौन बरण श्रीराम ए।
जेकरा ही गले बैजन्त्री के माला, उहे बर हवे श्रीराम ए।
हाथे मुद्र काने कुंडल झलकेला, मथवा मनोहर पाग ए।
जैसन बजार के मोती झलकेला, वैसे झलके श्रीराम ए।

१६३

कुन्डीलपुर एक नगर बसतु हैं, भीखम राजा अनुराग ए।
माइ चन्द्रावती मनही धुमइली, धिया भइली ब्याहन योग्य ए।
घरी घरी ब्राह्मण पोथिया बिचारेले, त्तण त्तण परेला हंकार ए।
इ रूक्मीणी शिशुपाल ब्याहबी, इ बर रूक्मीणी योग्य ए।
इतना बचन रूक्मीणी सुनही न पवली, रूक्मीणी चढ़ेली अंटारी ए।
काहे के अम्मा हो गंगा नहइली, काहे के कइली अतवार ए।
काहे के हमहु तुलसी दीप बारीला, आखीर मिलेला शिशुपाल ए।
जब बरिअतिया द्वारन्ही अइले, माता जी चढ़ेली अंटारी ए।
उठहु रूक्मीणी हरदी धोआवहु, शिशुपाल द्वारन्ही ठाढ़ ए।
तोरा लेखे अम्मा शिशुपाल दुलरुआ, मोरा लेखे अहीर ग्वाल ए।
मोरा पिछुअरवा हो विप्र गुसाईं, विप्र वेगही चलि आऊ ए।
एकली चिट्ठीया पहुंचाव मोरा विप्र हो, जहां बसे कृष्ण कुमार ए।
छोटे मुटे गछिया चन्दन जुड़ छहिया, तहां कृष्ण रचेले धमार ए।
कहँवा के तुहु विप्र गुसाईं, कहँवा ही करीला पयान ए।
कौन रानी सुवरन चिट्ठी लिखेली, केकरा ही तिलक लिलार ए।
कुन्डीलपुर के मैं विप्र गुसाईं, मथुरा में करीला पयान ए।
रानी रूक्मीणी मोहि लिखी पेठावेली, कृष्ण के तिलक लिलार ए।
जब श्रीकृष्ण पवन रथ जोतेले, बाजन बाजेला अनेक ए।
माता पिता सब मिलन चलेले, श्रीकृष्ण के आरती उतारिए।
जब श्रीकृष्ण मड़उन अइले, नव लाख मांगे दहेज ए।

घीव केरा भंडा अंगन देइ पटकेली, शत्रु के धिया जनि होइ ए।
जो रे पुरुष मोरा सभवाही बैठेले, केहु उत्तर नहि देइ ए।
सो रे पुरुष मोरा नइ नइ बिनवेले, रूक्मीणी दासी तुम्हार ए।

१६४

के मोरा रामजी के पगिया रंगावेला, के रे साजेला बरियात ए।
के मोरा रामजी के आरती उतारेला, के रे साजेला बरियात ए।
इतियन पीतियन पगिया रंगावेले, बाबा साजेला बरियात ए।
माता कौशिल्या रानी आरती उतारेली, भैया साजेला बरियात ए।
साजी बरात चले राजा दशरथ, बांये दहिन बोले काग ए।
उठहु लक्ष्मण पोथिया विचारहु, कौन सगुन बोले काग ए॥
दान भला मिलीहें दहेज भला मिली हें, सीता मिली हें समतूल ए।
रामजीके पोथिया अयोध्यामें छुटेला, ओही लागी बोलेला काग ए॥
जो एही मंगल गाइ सुनावेला, सो बैकुन्ठ ही जाइ ए॥

१६५

सब देवतन मिलि चिट्ठीया जे लिखेले, देहु देवकी जी के हाथ ए॥
कौन पुत्र मोरा फूल पहुँचइहे, कौन करीहे मोरा मान ए॥
इतना बचन कृष्ण सुनही ना पावेले हो, नागे द्वारे भइले ठाढ ए॥
नाग सोवेले नागिनी बेनिया डोलावेली, कृष्ण द्वारे भइले ठाढ़ ए॥
कौन अभागिनो के पुत्र हव, काहे लागी अइल पताल ए॥
उठिहे नगवा तुम्हे भछी जइहें, तुहु कृष्ण जइब मुर्झाइ ए।
इतना बचन कृष्ण सुनहीना पावेले, बन पैठि खरइ कटाइ ए॥
खरइ कटवले कृष्ण नाग वलु नाथेले, नागपीठी भइले असवार ए।
रोवेली नागिनी लट धुनि धुनि, टपकी टपकी चुवे लोर ए।
गुण अवगुण कृष्ण सब माफ करहु, सेन्दुर बकसु हमार ए॥
चुप होखु नागिनी जनि रोयी मरहु, जनि रे नयनवा ढारे लोर ए॥
गोखुला क फुलवा हो मथुरा पहुँचाइबी, तोर नाग देबो लौटाइ ए॥

१६६

आजु जनकपुर सोर ए सखि, राम ब्याहन आइ ए ॥
अरे सखि सुनीला सीता वर छोट, चलहु देखि आइ ए ॥
एक ओरी बैठेले राम लक्ष्मण, एक ओरि बठे परशुराम ए ॥
अरे सखि एक ओरी बैठे सीता सुन्दरि, धर्म २ पुकारि ए ॥
राम कहेले सीता हम ब्याहबी, लक्ष्मण कहेले सीता मोरी ए ॥
अरे सखि परशुराम कहेल सीता मोरी, तुहे कैसे ब्याहबी ए ॥
अस्सी मन के लोइ ए सखि, ओकर धनुष गढाइ ए ॥
आरे सखि जो यह धनुष अलगाइ, सेही रे सीता ब्याही ए ॥
राम के हाथ धनुष भला शोभेला, औरी मुखवा भरि दात ए ॥
अरे सखि हंसि राम धनुष उठवले, करेले नवखंड ए ॥
भइले ब्याह परेला सिर सेन्दुर, जै बोले सब लोग ए ॥
अरे सखि परशुराम गिरे मुर्छायी, त बन के सिधारिए ॥
जो यही मंगल गाइ गाइ सुनायी, सो बैकुन्ठ ही जाइ सदा सुख पाइ ए।

१६७

रामजी के ब्याइ जनकपुर लागल, भलि भांति साजु बरियात ए ॥
हाथी साजीला घोड़ा साजीला, साजीला भरत भुआल ए ॥
रामजी के घोड़वा भली भांति साजीला, हिरा मोती लागल लहास ए ॥
जाइ बरात जनकपुर उतरे, लोग तमाशा देखे आइ ए ॥
केहु देखे ठाढ केहु देखे निहुरल, केहु देखे शिर नवाइ ए ॥
झाड़ा रे झरोखे चढ़ि सीता निरखेली, कौन बरण श्री राम ए॥
कौन हवें राजा कौन राजा दशरथ, कौन बरण श्री राम ए ॥
गोर हवें राजा गोरे राजा दशरथ, श्याम बरण श्री राम ए ॥
भइले ब्याह परेला सिर सेन्दुर, देव लोग दिहले आशीश ए ॥
जिअसु राम जिअसु मोरी सीता, भोगसु अयोध्या के राज ए ॥

१६८

झारि पटोर रघुनाथ पेठावेले, तागही पाट बरीआत ए ॥
उहे पहिर कन्या चौका बैठेली, एही रे कन्या केरा रूप ए ॥
सूर्य धाहेले ज्योति जे धाहेला, धाहेला सूर्य विमान ए॥
बाबा के अंगना बधाव जे बाजेला, अम्मा के हृदया जुड़ाइ ए॥
गया में न्योतिला गया गजाधर, काशी न्योतों विश्वनाथ ए॥
प्रयाग में न्योतीला इहो बेनीमाधो, उड़ीसा न्योतों जगरनाथ ए॥
धरती में न्योतीला सुरसरी गंगा, ब्रह्माण्ड न्योतों नर लोग ए॥
गया से अइलन गया गजाधर, काशी से अइलन विश्वनाथ ए॥
प्रयाग से आंवले इहे बेनी माधव, उड़ीसा से अइले जगरनाथ ए॥
सब देवता मिलि आंगन आवेले, अम्मा के हृदया जुड़ाइ ए॥
धन्य धन्य ए बेटी तोहरो जन्म भइले, देव मुनि लिहले बसेड़ ए॥

१६९

मिलहु सखिया सलेहर, मिलि जुलि चलहु ए।
आइ जनक छवि देखहु मन पछताइ ए।
कौन बरण राम आये कौन लक्ष्मण भाई ए।
काहे कारण सखि आये जनकपुर, केइ संग ले आइ ए।
श्याम बरण राम आये गोर लक्ष्मण भाई ए।
धनुष यज्ञ लागि आये जनकपुर, मुनिन संग ले आइ ए।
तेहि समय परशुराम आये, क्रोध बरण ले आइ ए।
कहु जनक के पिनाक तोड़ा, मारबि धनुष चढ़ाइ ए।
जनक उठि कर जोरि के जी, मुनि चरण सिर नाइ ए।
बोल सकत कुछ नांही त मन पछताइ ए।
लखन उठे रिसियाइ के मुनि धनुष तोड़े रघुराई ए।
बहुत दिन के पुरान धनुषा छुअतही टुटिजाइ ए।
राम सैन लखन बरजे मुनि चरण सिरनाइ ए।
क्षमा करहु अपराध मुनि अब, करूं चरण सेवकाइ ए।
इतना सुनी परशुराम बोले रिसियाइ ए

जो तु हव रघुवंश कुल मणि नाम है श्री राम ए।
तोड़ो सरासन धनुष रघुबर मन सन्देह मिटाइ ए।
आठ ही काठ नव खम्भ त नयन भरिलाइ ए।
धइलन क्षत्री के रूप धनुष धरि तोड़ी ए।
गाइ के गोबर अंगना लिपाइला, गज मोती चौका पुराइ ए।
कनक कलशा में नीर गंगा जल, मानिक दीप बराइ ए।
राम सीता चौक बैठे सखिन मंगल गाइ ए।
ब्याह के जे उछाह बहुत, से देवलोक से फुल झरि रही।
रामनन्दी चरण बन्दी मुनि चरण सिरनाइ ए।
तुलसी दास बनाइ मंगल, सखिन गाइ सुनाइ ए।

१७०

अरे अरे बाबा अवधपुर जइहें राजा नृपति के द्वार ए,
अरे खेलत होइहें अवधपुर के गलिया, हाथ गुलाल मुख पान ए।
छोटही देखि जनि भूलीह ए बाबा, छोट ही कन्त कुंआर ए।
चारों भैया में राम बड़ हउअन, उहे हवे कन्त हमार ए।
ऊचहि कोठा उठाव मोर बाबा ए, ठाढ़े समासु हाथी घोड़ा ए।
जो प्रभु अइहन हमारे द्वारे, मिनती करबी कर जोरि ए।
सरगुन से गोबरा मंगइह मोरा बाबा हो, गजमोती चौकापुराइ ए।
सुवरन कलशा पुरहथ ले धराइबी, मानिक दीप बराइ ए।
ओही त्रिवेनी के निर्मल पानी, अच्छे रे वृछवा के छांइ ए।
सरगुन से डोलिया मंगाव मोर बाबा हो, कर दीह बिदाइ हमार ए।
तुलसी दास छुटेला मोर नैहर, सब को से भेंट अँकवार ए।

१७१

लाल चरण रघुराई त रीखे घर धूम भयी,
राम के संग सीता शोभे दशरथ आनन्द भये,
सीता के पहिरन चीर पिताम्बर ओढ़ लिये,

राम के संग सीता शोभे दशरथ आनन्द भये,
चलत २ डगमगिया घुघुर लर बाजी रही, घुघुर लर बाजी रही ॥
नयी नयी चलहु जनक धिया, तब राम भंवर घुमी,
सात भवर राम घुमेले तो लागी गइले सात घड़िया हो,
आहो बर सुन्दर अंगूठ जनि धरो,
अंगूठ धइले अङ्ग पसीज गइले भींजे चुनरी,
राम सुन्दर दोनों बांहु तबहुँ राम कांधे लिये,
मंडप हमरो अंजोर त मानिक दीप बरी,
चन्द्रबदन मुख कमला सुन्दरी राम कैसे देखी,
विजुली चमाचम चमकी सुन्दरी राम आइसे देखी ॥
बांस ही के उजे वेनिया तो वेनिया में लावा भरी,
लावा न मेरव सहोदर अग्नि परोस दिये।
सोने के सोहगइली त सेन्दुर भर लिये
सेन्दुर बांधहु नारायण मंडप अनुप किये।
जो यही मंगल गावेला गाथी सुनावेला,
सो बैकुंठे ही जाइ सदा फल पावेला ॥

१७२

माई जे नित उठि धिअवा संवारेली, नेपुर शब्द संवार ए।
ई धिअवा शिशुपाल ब्याहबी, न्योतबी कुल परिवार ए।
जब शिशुपाल गोएड़वनी अइले, भटवा लिहल बरमाइ ए।
मैं बलि जाऊं ओही राजा के गलिया, हमें योग मड़वा छवाइ ए।
जब शिशुपाल दुअरवन अइले, चेरिया कलश लेले ठाढ़ ए।
छोटे मुटे रनिया रे चढ़ली अटरिया, कुवर पेवारे ले पान ए।
कंहवा ही के शिशुपाल दुलरुआ, कहंवा ही ब्याहन जाइ ए।
बाबा मोर चौरासी के बासी, पितीया करेले दरबार ए।
माइ मदागिनी सबे गुण आगरी, उन्हीं के साजल बरात ए।

जब शिशुपाल मड़उन अइले, अम्मा जे चढ़ली अटारी ए।
उठहु रूक्मीणी पहिर पटोरवा, शिशुपाल मड़उन ठाढ़ ए।
तोरा लेखे अम्मा शिशुपाल दुलरूआ, मोरा लेखे अहीर ग्वाल ए।
काहे के अम्मा हो माघ नहइलों, काहे के कइलो एतवार ए।
काहे के अम्मा हो कठिन ब्रत कइली, आखीर मिलले शिशुपाल ए।
मोरा पिछुअरवा हो विप्र गुसइंयां, विप्र वेगही चलि आव ए।
देवो मैं विप्र हो सोने के जनेउआ, एकली चिट्ठीया पहुँचाव ए।
छोटे मोटे गछिआ कदम जुड़ छंहिया, तहां कृष्ण रचेले धमार ए।
जाइ के विप्र जी पांती पसारेले, कृष्णजी लिहले उठाई ए।
कंहवा ही के तुहु विप्र गोसइंया, कंहवा ही करेल पयान ए।
कौन रनिया सुबरन चिट्ठी भेजेली, केकरा हो तीलक लिलार ए।
कुन्टीलपुर के मैं विप्र गोसइंयां, मथुरा के करीला पयान ए।
रानी रूक्मीणी मोहि लिखि पठावेली, कृष्ण के तीलक लिलार ए।
जब श्रीकृष्ण पवन रथ जोते ले, बाजेला घुंघर निशान ए।
गौरी पुजी रूक्मीणी घर के लौटेली, कृष्णा जी लिहले उठाइ ए।
रोवे शिशुपाल ए मुंह दे रूमलिया, टपक टपकी चुवे लोर ए।
माइ बहिनी घर पुछन लगीहें, काइ उत्तर हम देबी ए।

१७३

कहँवा ही से चलि भइले रघुनन्दन, कंहवा ही करेला पयान ए।
कहँवा ही जामेली तुलसी दुलरूइ, केकरा से होला ब्याह ए।
पूरब से चलि भइले रघुनन्दन, पश्चिम करेले पयान ए।
कुरखेत जामेली तुलसी दुलरुइ, राम से होला ब्याह ए।
नैहर से तुलसी ससुरा अइली, चलेली सासु जी के पास ए।
झारी पटोर सासु बेटी के दिहली, आंचर करेली बेयार ए।
मंगिया के जुड़ तुहु रहीह ए तुलसी, कोखिअन झालर लाइ ए।
राम सुरूखुरू तू होखीह हे तुलसी, भुगत अयोध्या के राज ए।
नैहर से तुलसी सासुर अइली, चलेली सवत जी के पास ए।
झोंटा धरी झोंटीआवेली सौती के, अभरन लिहली उतार ए।

मंगिया के जुड़ तुंहु रहीह ए बहीनी, कोंखिया के होखीह बिहुंन ए।
राम से दूर दूर रहीह ए बहीनी, होखीह भदउआ के हीन ए।
बेरी ही बेरी तोहि बरजों ए तुलसी, सौत महल जनि जाहु ए।
ऊसर खेत कमल नहीं उपजेला, सौत आपन नहिं होइ ए।

१७४

रामचन्द्र चलेले ब्याहन रीमिझिमि बाजन ए।
आहे रीखे आगे खबरी जनाव कहां दल उतरेला ए॥
ठुंठी पकड़िया मधु मातल आले बासे छाजन ए।
आहो झुरू झुरू बहेला बेयार उंहे दल उतरेला ए॥
परीछे बाहर भइली सासु त ओढ़ेली पिताम्बर ए।
अहे केकर आरती उतारी कौन बर सुन्दर ए॥
भइले ब्याह पह फाटेला चुह चुहिया एक बोलेला ए।
आहे खोलि सासु सुबरन किवड़िया त राम जइहें कोहबर ए॥
कैसे मै खोलहु किवड़िया त राम जैहें कोहबर ए।
आहो मोरी सीता लड़ीका से बाल बोलही नहीं जानेली ए॥
जो सीता लड़ीका से बाल बोलही नहीं जानेली ए।
आहे हमहुं कवलवा के फूल दुनोही मिलि विअहबो ए॥

१७५

पुजन भवानी चलेली सीता देई, हाथ डलउआ मुख पान ए।
जब रे सीता देइ पुजली भवानी, मन ही मने मुसकाइ ए।
जे मनसा लागी पुजलु भवानी, से मनसा पुजीहें तोहार ए।
ऊंचे रे झरोखा चढ़ि अम्मा निरेखेली, अब सीता ब्याहन योग्य ए।
कंहवा गंववलू सीता ठीक दुपहरिया, कंहवा गंववलू सारी रात ए।
फुलवा लोढ़त अम्मा ठीक दुपहरिया, हरवा गुथत सारी रात ए।
लेहुना ब्राह्मण हाथ के लोटिया, औरी पीअर जनेव ए।
देश पैठी ब्राह्मण बर एक खोजहु, सीता ब्याहन योग्य ए।
पूरब खोजीला पश्चिम खोजीला, खोजीला उड़ीसा जगरनाथ ए।

बर एक मिले अयोध्या के गलिया, दशरथ कुल श्रीराम ए।
जो येही मंगल गाइ सुनावहि, जन्म जन्म अहिवात ए।

१७६

अरे चन्दन खम्भवा गड़ायो मोर बाबा हो, चन्दन छिलि द्वार ए।
अरे ब्याहन अइहें अयोध्या के राजा, दशरथ कुल उजियार ए।
अरे पहीले जे भेजे राम सन सोहगइली, ताग ही पाट लगाई ए।
अरे ताही पीछे भेजे राम अवध सिन्होरवा सीता के सोरहो श्रृंगार ए।
अरे पहिरी ओढ़िय सीता चौका बैठेली, मोहेले मुनि सब लोग ए।
अरे अरज से बोलेले बाबा जनइया रीखे, सीता से मिनती हमार ए।
तनि एका सीता हो सुरती नेवालहु, मोहेला सब संसार ए।
अरे तनि एका सीता हो सुरती छिपावहु, सूर्य अलोपित होइ ए।
अरज से बोलेली बेटी सीता रानी, बाबा से अरज हमार ए।
अरे सहु बाबा सहु बाबा आजु की रतियां, काल्ह जाइबी ससुराल ए।
आरे कौवा के खइले अमर नहीं होइब, कोठिया ना भरेले धन ए।
अरे धिअवा के देले बाबा धन नाहीं घटेला, रहि जैहें नाम तोहार ए।

१७७

माता पिता मिली एकमति भइले, रूक्मीणी कन्या कुंआर ए।
रूक्मीणी श्री कृष्ण ब्याहवी, जे बर त्रिभुवन नाथ ए।
इतना बचन जब सुनले रूक्मीणी के जेठ भाई ए।
रूक्मीणी शिशुपाल ब्याहवी, जे बर जाती के होइ ए।
से सुनि रूक्मीणी मनहीं दुःखित भइली, नैनन ढारेली लोर ए।
आंचर फारि रूक्मीणी कर रे कगजवा, नैना काजर मसिहान ए।
अवटी पवटी रूक्मीणी सर रे सन्देशवा, बिचवा में बारहो वियोग ए।
लेहुना विप्र हो डाल भर सोनवा, एकलो चिट्ठिया पहुँचाइ ए।
छोटे मुटे गछिया कदम जुड छहिया, तहां कृष्ण खेले जुआसार ए।
जाइ के विप्रजी पांती पसारेले, कृष्ण पांती जे बांचेले बांचत नयन ढरे लोर ए
हाली हाली सेवक रथ सजावहु, साजत विलम्ब जनि होइ ए।

रथ के साजत बिलम्ब जनि करहु, रूक्मीणी देई के ब्याह ए।
मड़वा बैठी रूक्मीणी धर्म पुकारेली, कृष्ण जी शरण तोहार ए
पहिला भँवर जब रूक्मीणी घुमेली, कृष्ण जी लिहले उठाइ ए।
रथ चढ़ाइ कृष्ण चली जे भइले, सब राजा करे हाहाकार ए ॥

१७८

पानन फूलन मड़वा छवाइला, वोह में मोती लगाइ जी।
देखो सखि राम जनकपुर आये ।
गायी के गोबर अंगना लिपाइ ए गज मोती चौका पुराइ जी
देखो सखि राम जनकपुर आये।
चन्दन काठ के पिढ़इ गढ़ायो, वोह पर राम वो सीता बैठाइ जी।
देखो सखि राम जनकपुर आये ।
बड़े-बड़े मोतिया से अंजूरी भराये छोटे-छोटे मोतिया चुमाइ जी ।
देखो सखि राम जनकपुर आये।
धन्य राजा दशरथ धन्य जनइया रीखे, जोड़ी जुगुती मिलाप जी।
राम अइसन बर पाये जन्म सुफल मनाये जी।
देखो सखि राम जनकपुर आये।

१७६

सीता ही केरा स्वयंवर खबरी जनावही ए।
आय आय सब बईठेले धनुष ना टुटे ए।
राजा कठिन प्रण ठानेले मोही ना सोहाय ए।
सीता अईसन सुन्दर रहली कुंआर ए।
कोमल कोमल अङ्ग कोमल श्री राम ए।
एजी उनकर कौन भरोसा धनुष नाहीं टुटे हो।
अङ्ग में चीर पीताम्बर मुकुट सिर शोभे हो।
एजी छन में लिहले उठाए धनुष नव खन्ड ए।
जब राजा देखे धनुष टुटे भईले आनन्द ए।
ए योगी वीप्र बोलाइ करेलो कन्या दान ए।
लाल ही पाट के जाजीम भारी बिछाव ए।

एही बैठ सोहागीन सब मंगल गावही।
भइले बीआह चलेले राम कोहबर।
सखी सब छेकेली दुआर पढ़त राम जाई ए ।
जब राम पढ़ले दुआर सुनहु मन लाई ए ।
सब सखी देहली अशीश ए।

१८०

अवध नगरीया बाजन एक बाजेला घर घर मंगला चार ए।
जेकराही घरवा सीता अईसन लछीमी सो कैसे सोवे अनयीत ए।
मोरा पीछुअरवा वीप्र गोसाई वीप्र वेगही चली आव ए।
आवही वीप्र सुदीन दिन सोचहु चली जाहु अवध के देश ए।
हाथ लेले लोटीआ रे कान्धे लेले धोतीया-बांधी लेले पाट के जनेव ए।
ग्यानी पण्डित दुअरे पर जैहें तुरत मीलीहे श्री राम ए।
दिन गीनाइला लगन धराइला एहे दिन शुभ दिन होई ए।
गायी के गोबर अंगना लीपाईला गज मोती चउका पुराई ए।
सोने के थारी में जल भराईला राम के चरन पखार ए।
सोने के कटोरा में चन्दन भराईला राम के तीलक लिलार ए।
तीलक चढ़ाई वीप्र दुआर ही अईले बाजही दशरथ घर वधाव ए।
हाथी साजीला घोड़ा साजीला साजीला तबला नीसान ए।
जीरवा अईसनी लोकनी साजीला जाईला जनकपुर दुआर ए।

१८१

जब राजा रामचन्द्र घर से बाहर भईले पिता देले अशीस ए।
युगही युग तुंहु जीह ए राम भुगुत अयोध्या के राज ए।
जब राजा रामचन्द्र अवधपुर आवेले जनकपुर के लोग डेराई ए।
कंहवा के छत्री रे लुटन आवेले अब सीता रखबो छीपाए ए।
जब हो रामचन्द्र गोएड़न आवेले भाटवा लीहले वरमाए ए
दर्शन होत मोरा मन प्रशन भईले चरण छुअत वैकुन्ठ ए।
जब हो रामचन्द्र दुअरन अईले चेरीया कलश लेले ठाढ़ ए।
दर्शन होत मोरा हृदया जुड़ईले चरण छुअत वैकुन्ठ ए।

जब हो रामचन्द्र मड़वाही अईले बीप्र गोत्र उचारी ए।
दर्शन करत मोरा नेत्र जुड़ईले चरण छुअत वैकुन्ठ ए।
कुशवा के आसन कुशवा के कासन कुशवा लीहलन हाथ ए।
जब हो जनईआ रीखे सीता संकलपेले मने मने देले अशीस ए।
जे एही मंगल गावही गाई सुनावही से वैकुन्ठ ही जाई ए।

१८२

एक ही चीठीआ लिख भेजेले जनईआ रीखे देही राजा दशरथ हाथ ए।
हमें घरे बाड़ी सीतादेई रानी तोहे घरे रामजी कुंआर ए।
रउरा तो हई देश पत्री के राजा हम हई जनम भीखार ए।
कन्द ही मुल राजा हमरो भोजन हमें रउरा कईसन वीआह ए।
केई आवे हाथी केहु आवे घोड़ा केई आवे बजन बजाई ए।
केकरा ही भईआ के भगती होत आवे उड़ईत आवेला नीसान ए।
राम आवे हाथी लक्षुमण आवे घोड़ा दशरथ बजन बजाइ ए।
जब राजा रामचन्द्र दुअरन अईले हाकी पड़ेले परशुराम ए।
हमरी बरली सीता केई बीआहेला मारब धेनुषा चढ़ाई ए।
हाथी चढ़ल राजा रामचन्द्र आवेले हम दशरथ जी के लाल ए।
रउरी वरलीं सीता हमरे बीआहीला मारवि धेनुषा चढ़ाई ए।
छोटी मुटी सीता अंगवा के पातर वीनती करे कर जोड़ ए।
जब हम होखव राम के बीआही टुटल धनुष जुटी जाई ए।
पहील वाण यमुन दह गीरेला दुसर गीरेला पाताल ए।
तीसर वाण गंगा बीचे गीरेला गीरी परेला परशुराम ए।
ऊड़ीया अलोत होके सीता बीनती करे आदीत सरन तोहार ए।
पातर राम धनुष बड़ा भारी उठत बीलम्ब जनी होई ए।
धन्य धन्य भाग सीता अइसन सुन्दर रन जीत आए राम ए।

१८३

जब बरीअतीया मड़उअन अईले ब्राह्मण गोत्र उचार ए।
देबो मैं ब्राह्मण सोने के जनेउआ मोरा आगे सीता बखान ए।
का हम सीता बखानो राजा दसरथ सीता सुरजवा के जोत ए।

सीता के जोती चन्द्रमा छपीत भईले दसरथ कुल उजीयारे ए।
भइले बीवाह परेला सिर सेन्दुर मुनी सब देले आशीस ए।
जनम जनम अहीवात हो सीता राम दुलारी तुम होहु ए।
भईले बीवाह चलेले राम कोहबर सरहज छेकेली दुआर ए।
हमरा ही नेग जोग देही बर सुन्दर तब रउरा कोहबर जाई ए।
देबों मैं सरहज हाथे के कगनवा मोरा आगे सीता बखानु ए।
का हम सीता बखानों राजा रामचन्द्र सीता सुरजवा के जोत ए।
सीता के जोती चन्द्रमा छपीत भईले मोह रहेना रघुनाथ ए।

१८४

साजीला राम साजीला भैया लछमण साजीला भरथ भुआल ए।
साजी बरात चले राजा दसरथ, जाई जनकपुर ठाढ़ ए।
झारी पीतम्बर पयते में डासीला बैठ नृपति सब लोग ए।
सांवल राम गोर ही भैया लछमण गोर ही भरथ भुआल ए।
जीनका गले वैजन्त्री के माला सांवल श्री राम ए।
कान ही कुनण्डल हाथ ही सुन्दर मथवा मनोहर पाग ए।
जैसे बजार ही में मोती झलकेला वईसे झलके मोरा राम ए।
जे एही मंगल गावही गाई सुनावही से हो बैकुन्ठे जाई ए।

१८५

साजीला हाथी साजीला घोड़ा साजीला लोग बरीआत ए।
साजी बरात जनकपुर उतरेले लोग देखहु बरात ए।
जबे बरीअतीया गोएड़न अईले हथीनी छोड़ेले चीकार ए।
हाथीया के चकमक अधीकोन सुझेला पचतन खेह उड़ी जाए ए।
जब बरीअतीया बगइचा से अईले बारी घुघरु बजाई ए।
देबों मैं बरीया रे सोने के घुघुरुवा मोरा आगे सीता बखान ए।
का हम सीता बखानों राजा दसरथ सीता सुरजवा के जोत ए।
सीता के जोत चन्द्रमा छपीत भईले मोह रहेले रघुनाथ ए।
जब बरीअतीया दुअरवन अईले चेरीया कलश लेले ठाढ़ ए।
देबो मैं चेरीया सोने के कलशवा मोरा आगे सीता बखान ए।

का हम सीता बखानी राजा दसरथ सीता सुरजवा कं जोत ए ।
सीता के जोत चन्द्रमा छपीत भईले मोह रहेले श्री राम ए।
सीता कुँआरी जनकपुर रघुबर दुलहा बनी,
रीखे सब करीना विचार त लीखो पत्री अवध चली ।
दसरथ पाती उचारेले सभा में सब सुनी,
रीखे के वचन हम पाईला मोरा मन हर्ष भरी ।
साजी बरात तुरन्त जहां जनक अजब बनी,
गज पर दीहीना निशान नृपति सब बरात चली ।
जब बरीअतीया—दुअरवन आए सीता झरोखे चढ़ी ,
कैसे के होला वीआह त सीता सोच रही ।
सखी सब सीता समुझावेली जनी सीता सोच करु,
हलीवंत पुरुष भगवान त मनसा पुरा करी ।

१८६

चलले जनक ऋषि गंगा नहाये , धनुष देले ओठघाइ ए।
धनुषा के आसे पासे लिपीह हो सीता, पुजवा करबी हम आयी ए।
बांये कन अंगूरी सीता धनुष उठवली, दहीने लिपेली चौदार ए।
आवत रीखे के नजर परि गइले , अब सीता रहेलु कुंआर ए।
देश ही देश हम न्योता पेठवलों , देश के कुंअर हंकार ए।
जेहि भाइ धनुष अलगइहें , से करीहे सीता से ब्याह ए।
देश ही देश से कुंअर बटोरइले , कोइना धनुष अलगाइ ए।
पुजवा करत राजा मन मन झंखेले, अब सीता रहलु कुंआर ए।
केवाड़ के ओते ओते सीता मिनती करे, बाबा से अरज हमार ए।
अयोध्या नगरिया में बाजेला बधइया, दशरथ पुत्र कुंआर ए।
चिट्ठिया जे लिखि लिखि भेजेले जनइया रीखे,देहु दशरथ जी केहाथ ए।
हमे घर बाड़ी कुंआरी सीता देई , रउरे घर राम कुंआर ए।
जब बरिअतिया द्वारन्ही अइले , सीता झरोखवन ठाढ़ ए।
देखत छोट चलत बड़ा सुन्दर , जऊं पत राखे भगवान ए।
बांये कनअंगुरिया राम धनुष उठावेले, अयोध्या पति दसरथ के
पुत्र श्रीराम ए।

१८७

कहँवा ही बैठल सखि मंगल गावेली कंहवा ही हनेला निशान ए ।
कंहवा बठल बिप्र गोत्र उचारेले, कंहवा ही होला ब्याह ए ।
तमुआ भीतर सखि मंगल गावेली, दुअरन हनेले निशान ए ।
बेदिया बैठल विप्र गोत्रा उचारेले, चौकन होला ब्याह ए ।
जब हो सीता देइ ब्याहन चलली, सब सखि मिलि के संवार ए ।
सुन्दर सुहागिनी सीता संवारेली, चीर पिताम्बर पहनाइ ए ।
पहिले ले चंदन दहिया अछत, तब ले ले दखिनवा के चीर ए ।
तब ले चन्दन सिर के सेन्दुर कइलन, धिया से बिछोह ए ।
जब सीता ब्याही के कोहबर चलली, सूर्य भइले अलोप ए ।
बोलेले रामचन्द्र मुख खाले पनवा, सुनु स्वसुर मोरा बात ए ।
दान दहेज सब बरधी बढ़ाइबी, सीतहिं डड़िया चढ़ाई ए ।

१८८

दुनो भैया रघुबर दुनो धनुषधारी,
दुनो भैया चलले जनक फुलवारी ।
पातर राम धनुष बड़ा भारी,
कोमल राम सीता सुबुद्धि सयानी ।
कौना मिहे अइहें हो रघुबर,
कौना मिहे जाइबी ।
कौना के आसे हो पासे धनुष चढ़ाइबी,
रघुबर पातर धनुष बड़ा भारी ।
कोमल रघुबर सीता सुबुद्धि सयानी,
दवना मिहे अइबी हो सीता, मरूआ मिहे जाइबी ।
बेइली के आसे हो पासे, धनुष चढ़ाइबी ।
बालक राम धनुष बड़ भारी ॥
अंखिया नीरेखी जैसे अमवा के फांकी ।
गंहूआ निरेखो जैसे चढ़ल कमानी,

माइ रघुबर पातर धनुष बड़ भारी ॥
नकिया निरेखो जसे सुगवा के ठोर,
ओठवा निरेखो जैसे कतरल पान।
कोमल रघुबर सीता सुबुद्धि सयानी ॥
छीपा भरल सीता अगर चन्दन डाल भरल पान,
लेहुना रघुवंश के दुलह सासु देली दान ।
पातर राम धनुष बड़ भारी ॥
नहीं लेबो अगर चंदन नहीं खइबो पान,
अपनी दुलहिन लेबो डड़िया चढ़ाइ ।
बालक राम धनुष बड़ा भारी ॥
सबरे सखिया मिलि सीता के संवारेली,
तब रे राजा रामचन्द्र चढ़ेले चंडोल
पनवा मांगी हो राम सीता के बुलावेले,
मुखहु न बोले हो सीता नयना नीर ढारी,
क्या तोरा आहो सीता मइया मन परेली,
क्या तोरा आहो सीता सहोदर जेठ भाई ?
नांही मोर आहो राम मइया मन परे,
नांही परेला हो राम सहोदर जेठ भाई ?
एक त राम याद परेली सखिया सलेहर
जाही साथ घुमलो जनक फुलवारी,
चुप होखु चुप होखु जनक दुलारी,
फिर ले के जइबो हों सीता जनक फुलवारी
बालक रघुबर धनुष बड़ा भारी ।

१८६

ऊंच ही घर के बेदिया त, मने मने बोलेला हो ।
ऊंच ही राम के लिलार, चन्दन भल शोभेला हो ।
मचिया बैठल कौशिल्या रानी,मने मने लोर ढ़ारे हो ।

अकसर राम जइहें ब्याहन, गोतिया एको ना जइहें हो ।
जनि रोव माता कौशिल्या रानी, अति जन लोर ढ़ार हो ।
ए दशरथ साजेले बरिआत लखन मोर साथ जइहें हो।
मचिया बैठल कौशिल्या रानी मने मन हुलसेली हो ।
ए पातर राम केरा हाथ पिताम्बर भला शोभेला हो।

१९०

गांव बाहर राजा कोठवा उठावेले, धनुष देले ओठधाइ ए ।
जे मोरा माई धनुष अलगइहें, तेकर सीता से ब्याह ए ।
भरत लगले शत्रुघ्न लगले, लक्ष्मण भइले अगुवानी ए ।
एही तीनों से धनुष नहीं अलगेला, अब सीता रहलु कुंआरी ए ।
भरत लगले शत्रुघ्न लगले, रामचन्द्र भइले अगुवानी ए ।
अंगुठन सारी धनुष अलगावेले, अब सीता होला ब्याह ए।
भइले ब्याह चले राम कोहबर, सरहज छेंकली द्वार ए।
हमरो ही नेग जोग दिही बर सुन्दर, तब रउरा कोहबर जाइ ए।
रोई रोई रामचन्द्र चिट्ठिया जे लिखेले, देहु दशरथ जी के हाथ ए।
भइले ब्याह चलली हम कोहबर, सरहज छेंकेली द्वार ए।
हमरो ही नेग ज़ोग देहु बर सुन्दर, तब रउरा कोहबर जाहु ए ।
हंसि हंसि दशरथ चिट्ठिया जे बांचेले, राखेले हृदय लगाय ए।
हाथ के गोल राजा दिहले पेठाई, अब राम कोहबर जासु ए।

१९१

धन्य रे अवधपुर दशरथ राऊ ।
धन्य रे जनक रीखे जहां राम अइहें ए।
माई ऐसे रघुबंशी के दुलह बरणी न जाइ,
सोने के कलसा जल अमवा के पानी।
छीड़ीके जनक रीखे सगरे बराती हे ।
जब बरिअतिया गोएड़न अइले,
धाई जनक रीखे लिहले बुलाइ ए माई।
जब बरिअतिया दुअरवन अइले ।

परीछे के सखि सब भइली तैयारी ए माई।
जब बरिअतिया मड़उअन अइले,
परीछे बाहर भइली जनकपुर के नारि ए माई।
दधि दूब ऐपन कंचन के थारी,
बैठि वशिष्ठ मुनि गौत्री पुजायो ए माई।
भइले ब्याह हो राम कोहवर जाई।
साली सरहजी सब छेंकेली द्वार ए माई।
साली सरहज हो रामा बजावे लगीहें ताली ए माई,
रउरा सासु धर्म के माई।
अधरे परीछे लेहु नाहिं परीहे गारी ए माई।
ऐसे रघुबंशी के दुलह बनि आइ ए माई।

१६२

उतरू चैतवा रे चढु बसखवा, अइले लग्नवा के बेर ए।
देश पठ बाबा बर एक खोजहु, हम बेटी ब्याहन योग्य ए।
पूरब खोजलों मैं पश्चिम खोजलों, खोजलों उत्तर दखिन देश ए।
तोहरा के बेटी हो बर नाहीं मिलेला, मंहग भइले श्री राम ए।
सभवा बैठल भैया जे झंखेले, औरी खाले मुख पान ए।
तोहरा के बहिनी हो बर नहीं मिलेला मंहग भइले श्री राम ए।
मड़सर पइसल उजे भौजी झंखेली अधरे भरेला हीरा लाल ए।
पूर्व पश्चिम से मोगल चलि अइते, ननद ब्याही घर जासु ए।
क्या तोर भौजी हो लइया लगवलों, क्या भैया दिहले निकाल ए।
क्या तोरा भौजी हो रसोइया दुख दिहलीं, काहे हमार मोगल ब्याह ए।
ना मोरा ननद रसोइया दुख दिहलू, ना मोरी लइया लगाइ ए।
जेठ बैसखवा के तलफी भुंभुंरिया, स्वामी मोर गइले कुम्हीलाइ ए।

१६३

साजीला इन्द्र साजीला ब्रह्मा, साजीला मुनी महेश ए।
साजी बरात चले राजा दशरथ, जाइ जनकपुर घाट हे।
जब बरिअतिया गोयड़वा चलि अइले, चंवर डोलेला चारू ओर ए।

काढ़ि पटोर पांयेतले भेजीला, बैठु बराती सब लोग ए।
झरा रे झरोखा चढ़ि सीता नीरेखेली, सुनु सखि बचन हमार ए।
ना बरिअतिया दैया मोहि चिन्हइले, कौन बरण श्रीराम ए।
सांवर राम काने शोभे कुंडल गले बैजन्त्री की माल ए।
तुलसी दास प्रभु तुम्हरे दरश को, श्याम वरण श्री राम ए॥

१६४

खम्भवन ओठघल बेटी जे बोलेली, बाबा से अरज हमार ए।
हमरा के बाबा हो वर एक खोज, हम बेटी भइली सयान ए।
पूर्व देश पैठ ना होखे बेटी, पश्चिम देश मोगलन देश ए।
उत्तर देशवा भदेशवा हो बेटी, दखिन देशवा अखोह ए।
सभवा बैठल झंखे बेटी के बाबा, अब धिया रहलु कुंआर ए।
वर एक देखली अयोध्या के बगिया, राम लक्ष्मण दुनों भाइ ए।
सभवा बैठल रउरा राजा दशरथ जी, मंगनी के देहु श्रीराम।
जे मोरा राम आंख से ना उतरे, पलक सेना विसरे राम मंगनी कैसे देव ए।
ब्याह कराइवों ककन खोलाइवों, रउरा राम देबो पहुंचाइ ए।
सभवा बैठल आनन्देले बेटी के बाबा, अब बेटी लगलू तू पार ए।

१६५

शोभित सीता राम जनक मंडप तरे,
सिर सोने के मौरी त गजमुक्ता गले रे।
मरकत अधर कपोल सो मुक्ता मोल के,
सुन्दर लोचन लोल कमल मानों भंवर करे।
सुरंग चुनरी निकट पीत पट छाइ रही,
मनहु अरूण घनश्याम चपलता हो रही।
राम भुजा के निकट सिया भुजवोल से,
मरकत मनि के खम्भ मनहु कंचन कसे।
राम भये घनश्याम सीया भयी दामीनी,
मुनि भये चन्द्र चकोर चकित भयी भामीनी।

राम भये तन श्याम सिया भइ गोरी,
सारद अति बुद्धिवन्त बुद्धि भयी बावरी।
पुसवन बरसे ए मेघ मेदनी थीर रहे,
होत जनकपुर ब्याह राम भांवरी फिरे।
सिया भूषण पहरती राम छबि उर धरे,
मनहु जलवानल मध्य दीपक बरे।
जनक ललि की ध्यान शंभू हृदय धरे,
ब्रह्मा रूप निहारे त इन्द्र पूजा करे।
तुलसी सीता राम सहित उर आनि ए।
राम भजन विनु जन्म वृथा करि जानि ए।

१६६

जनक कुंआरी घर ब्याह त देखन आयी,
देखन अइली सखिया सब मंगल गाइये।
गाऊ मंगल जाही जुही जुगुती मुख आंचल दिये,
चीर पहिरन कनक अभरन दान से मुख भर दिये।
घर घर नारि सुहागिनि अङ्ग भभुतन,
लाल पिअर पहिरावन मंडप भल छाइये।
चहुं दिश चहुं खंड शोभे बन्धु बन्धु निवारिये,
चित्र विचित्र कहनी काकन पर कनक कलश कहां धरूं।
भरपुर जल के आम पल्लव ताहि उपर पुरहथ धरी,
बहु रंग केशर पाग जामा कानन मोती डोलही।
रूप धूप बरात सुघर बोलत अमृत मध चुवे,
घुमि घुमि समधिन निरेखु दुलह अरतो हट नट पर।
वृषभान मनहीं आनन्दही शिव लोक से फूल झरि परु,
सिर तेल सेन्दुर राम विन्दुल परात रवि छवि छाइए।
चन्द्र वदन राजित उमंग कोकिला सुर गाइ ए।

१९७

चन्दन रगरीले कटोरवहि ले मोसी अङ्ग है ।
अरे कनक कलश भरि पानी कुंअरी नहाइले,
सखिअन ले सीता असन जोहे जैसे पूर्णीमा चांद ।
पिअरी ले पहिराइला सीता संवारीला,
चौकही अछत धरीले विप्र बुलाइ ले ।
बोलत ब्राह्मण बांधत कंगन विप्रन गोत्र उचारिये,
दशरथ कुल मैं क्या बखानू जैसे इन्द्र पछारा ।
काने तरिवन शोभे अंगिया संवारिये,
बेसर के गज मोती अधर पर लोटिये ।
बेनिया ले टीका सेस फूले फूले मोतियन भरि लाइये,
सिकड़ीं वाले बेनार हे अटकी देखी के रघुपती डरे,
गले कंठा शोभे मोहन बीचे माल है,
बधिया मैं कितना बखानू सर्प के केचुआ है ।
कंगना से टरिया के गनतु है अगर सोना भिन्न हो,
बिछिअन के झंझकाल चलत मोहे राम के ।
अंगिया रंग सुरंग ताही बीचे कपड़ा,
लंहगा अति छवि देहि सकल जग मोह ही,
सिस चादर माल दह के अगर सोना भिन्न ही ।
घुंघुट काढ़ि सीता जो बैठे राम हंसे मुख मोरी के
रामचन्द्र हाथ पसारल सीता ब्याही,
जब जनक कुशवन छोड़वल सीता राम के ।

१९८

सखी देखलों मैं कुंअर अनुप,
कोमल कोमल अङ्ग; मनोहर रूप,
बगीचा रउरा कल्ह अइले ए ।
आरे देखत रवि ही छिपइले,
बगीचा राउरा कल्ह अइले ए ।

देश ही देश के भूपत अइले,
आरे छुइ छुइ चांप लजइले,
बगीचा रउरा कल्ह अइले ए।
कहु रे सखिया सलेहर,
कहलो नहीं जाइ ए,
आरे कहवां के भूप कहां अइले,
बगीचा रउरा कल्ह अइले ए।
अवधपती दशरथ जीं के बारे,
आरे कौशिक मुनि संग अइले,
बगीचा रउरा कल्ह अइले ए।
तुलसीदास प्रभु तुम्हारे दरश के,
आरे धनुष यज्ञ लागी अइले,
बगीचा राउर कल्ह अइले ए ॥

१६६

जगधर बाबूल ब्याहन आवेले, करि लेले अधिक बनाव ए।
पीअर धोती सबूज रंग पहिरन जनू चले उमरांव ए।
अगना लिपाइबी चौका पुराइबी, सुवरन कलशा धराइ ए।
उस कलशा पर कंचन धरिये, देखु राजा राम के ब्याह ए।
दुलहा दुलहीन चौका बैठे, सुघर पंडित बुलाइ ए।
दहेज दिये हीरा मोती, लाल ही रतन जड़ाइ ए।
गांड़ीन के दुइ बैल दिये, बाबा दिहले दरिआव ए।
हाथी दिहले घोड़ा दिहले, दिहले सहन भण्डार ए।
गाडो के दुइ बल दिहले, बाबा दिहले दरिआव ए।
उठि के समधी मिनती करिये, काहे के करिये सलाम ए।
राउर बेटी कुल के रानी, तुहु हव उमरांव ए।
आश छोड़ल पास छोड़ल, छोड़ल नगर तोहार ए।
डोलिया चढ़ल जब ले चली है, दिल्ली गढ़ के राव ए।
गुड़िइया खेलन के चाह छुटल नहीं, खेलन अब पाइ ए ॥

२००

मोरा पिछुअरवा रे झालरी बिरवा बहेला झुर झुर बयार ए
छूलवा बिछाइ के सुतेले कौन बाबा बैठी जे पैठी जगाइये।
जेकरा ही घरे बाबा कन्या कुंआरी से हो कैसे सोवे निरभेद ए।
इतना बचन जब सुनले कौन बाबा बेगही पंडित बुलाइये।
पोथिया खोलाइ बाबा लग्न सोचावेले मोतिया वरण ढरे लोर ए।
किया तोरे बाबा रे अन्न धन थोर भइले क्या मरेली धेनु गाय ए।
कौन सुरती तोर चढ़ेला बाबा ऐ मोतिया बरण ढरे लोर ए।
नाहीं मोरा बेटी रे अन्नधन थोर भइले नाहीं मरेली धेनु गाय ए।
तोहरी सुरतिया चढ़ेला मोर बेटी रे मोतिया वरण ढरे लोर ए।

२०१

अवधपती बरीआती आये भये हैं जनकपुर शोर ए।
कुंअर छबीला ब्याहन आये, साजि तुरंग बरजोर ए।
जब बरिअतिआ जनकपुर आये, वोही पुर के नर नारि ए।
दुइ बर और अवधपुर से आये, राम लषन अनुहारी ए।
धाइ के अगुआन दिन्हे, यवन दिन्हे जनवास ए।
सब के मन में भये हैं छटपटी, सुनीला विदाई काल्हु ए।
हम धनी जिअब सीता बिन कैसे चित्त विकल होइ जाइ ए।
बिदा किन्हे बहु विधि सीता सिखवन दिन्हें अनेक ए।
राजा जनक जी के सती सीता चरन गहे प्रभु केशरी ए।

२०२

राजा दशरथ तिरहुत से निकलेले अवध के लोग बुलाइये।
रघुवीर दुलहा ब्याहन आये दल व दल बरिआत चलो है।
रघुवर जाइ बरात जनकपुर पहुंचे, सखि सब देखन आइ ए।
लिखि लिखि चिट्ठिया परीछू बरिअतिया, बैठ के देहु जनवास ए।
राजा विमल जब रचिहें बिछावन, थार भरी मोती दान ए।
जब बरिअतिया मड़उआ भीरी आये, सखि सब मंगल गाइये।
भइले विवाह चले राम जेवन, सखि सब गारी गाइये।

जेवत जेवत राम जुठवो ना छोड़े,
रीखे हंसे मुख मोड़ी ए।

२०३

देखु सखि राम जनकपुर आये जी।
सुन्दर बदन कमल दल लोचन केशरी बाग लगाये जी।
गौर श्याम बड़ जोड़ बनाये चन्द्र तिलक चढ़ाये जी।
सुर नर मुनि सब जै जै करतु हैं मुनि कहां तुम पाये जी।
धन धन भाग राजा दशरथ के धन कौशिल्या महतारी जी।
तुलसीदास प्रभु तुम्हरे दरस के जोग ही जोग मिलाये जी।
देखु सखि राम जनकपुर आये जी।

२०४

इंट कंचन बांधू वेदी सोपर माडो छाइये,
मनिलाल हीरालाल मोती मध्य खम्भ गड़ाइये।
गज मोती चौका पुराऊ राजा सूबरन कलश धराइये।
राम सीता चौक बैठे, सखिन मंगल गाइये।
जब भये हैं गोत्रा उचार, राजा विप्र के कुछ दान ये।
राजा दशरथ घर बाजन बाजेला सुन्दर शब्द सुनाइये।
जब भये हैं कन्यादान राजा धरती है शेष पाइये।
तीन लोक के शोभा सुन्दरी संग देत है भांवरी।
जब भये है सेन्दुर दान राजा तीस घोड़ा दान ए।
सदा आनन्द आनन्द रघुबर अच्छी दुलहीन पाइये।

२०५

एह पार गंगा ओह पार जमुना तहां कृष्ण रचेले समाधी रे,
दही बेचे चलेली राधे ग्वालीनो धरी बहियां विलमाइ जी।
दही मोरे खइलन मटुक मोर फोरलन गेडुर दिहलन दहलाइ जी,
मिलहु न सखिया रे मिलहु सलेहर, मिली जुली चल ओरहन देई
आयीं जी।
बरज न जसोमती अपना कन्हैया के, दही मोर खइलन,

मटुक सिर फोड़लन गेड़ुर दिहले दहलाइ जी।
बाप खाऊँ भैया खाऊं तोहरो ग्वालीनी,
नन्द नगर की काहे कन्हैया के लछुन लगावलू जी।
बारह बर्षवा के हमरो कन्हैया क्या जाने हंसिया खियाल जी।
हाथजोरी कृष्ण लावसु दुहाई, जो हम ग्वालीनी को नजर भर देखीं
श्यामबरण होइ जाइजी।
गोर कन्हैया संवर भइ गइलन, रतुली ततुली भइली आंख रे।
माता यशोदा मुसुकीयनी बिहंसेली, अब कृष्ण भइले लबार जी।

२०६

नगर अयोध्या के बाजन बाजेला, घर घर मंगल चारी ए।
बाबा रिखइया रे गर में पटुक डारे, घर घर लगन सोचाइ ए।
ब्राभन विप्र रे ठीक दुपहरिया, घर घर लग्न सोधाइ ए।
गायी के गोबर अंगना लिपाए, गजमोती चौका पुराई ए।
सोने के कलशा धराइ, मानिक दीप बराइ ए।
मोरा जो रामचन्द्र मड़वही चललन, चेरिया कलश लेले ठाढ़ ए।
देवो मैं चेरिया दुनो कान तरिवन, मोर आगे सीता बखानु ए।
क्या मैं सिता बखानो राजा रामचन्द्र, सीता सूर्यवा के ज्योत ए।
सीता सुरत देखि सूर्य छपित भइले, सीता सूर्यवा के ज्योत ए।
जब राजा रामचन्द्र कोहबर चललन, सरहजी छेकेंली द्वार ए।
देवों मैं सरहजी सोने के तिलरिया, मोरे आगे सीता बखान ए।
क्या मैं सीता बखानों राजा रामचन्द्र, सीता सूर्यवा के ज्योति ए।
सीता सुरत देखि आदित्त छपीत भइले, सीता सूर्यवा के ज्योति ए।
अपने झरोखही ठाढ़ी सीता देइ, झारेली लाम्बी लाम्बी केश ए।
एकही चिट्ठी लिखी भेजेली सीता देइ, देवहु रामचन्द्र हाथ ए।
बाप रिखैया रे दगा करतु है लोहे के धनुष गेढ़ाइ ए।
पातर राम पतर कन्हैया, लोहे के धनुष बड़ भारी ए।
एकही चिट्ठीया लीखी भेजेले राजा रामचन्द्र, देहु सीता देई हाथ ए।
तोड़बी धनुष करबी नव खण्ड, सीता ब्याही घर जाऊँ ए।

२०७

आशे गेडुल फुले पासे गेडुल फुले, फुलवा के डासल सेज हो।
ताही पैठी सोवेले राजा के कुंअर, पातरी कामिनी गोद हो।
अंगना बहारत चेरिया लौंड़िया, सरहज देहुना बुलाइ हो।
आवहु सरहजी पलंग चढ़ी बैठो, देखहु ननद ब्योहार हो।
बोल बचन कुछ सुनहीना पवली, पलंग छोड़ी भुइआं लोट हो।
लबरा के बेटा झपासे के नाती, लंक लकुल परिवार हो।
बारी ननदजी के छुवहुं ना देबों, छुवत जइहें कुम्हीलाइ हो।
लबारे के बेटी झपासे के नाती जी, लङ्क लउरी ब्योहार हो!
आरे बारी ननदजी के डड़िया चढ़इबों,तोही सरहज लेबो दहेज नाइ हो।
देवरही लागी सासु मिनती करे, बाबु से मिनती हमार हो।
जेठही पुत्रवा के सुहवा सोहागिनी, से कैसे लेव दहेज हो।

२०८

पूर्व पच्छीम मोर बाबा के सागर, पूरइन लहालही होई रे।
ताही सगरे कौन दुलहा करे स्ननवा, कौन देइ पुछेली एक बात रे।
केकर हई रउरा उलरू से दुलरू, कौन देइ बहिनी के भाई रे।
कौने बनीजीया चलीलें बर सुन्दर, केकरा ही सगरे नहाइल रे।
फलाना लाल के हइ हम उलरू से दुलरू, फलानी देइ बहिनी हमार रे।
सेनुरा बनीजीया चलीले बर कामिनी, ससुरे के सागर नहाइ ए।

२०६

ऋीषी मुनी चलले इहां धनुष तर पोतल के,
आजु धनुष के उठावल धनुष तर पोतल के ?
ऋषी मुनी सुनैना बोलावेले सुनहु रानी सुनैना हो,
आजु धनुष के उठावल धनुष तर पोतल हो ?
हम नाहीं जानीला ए राजा सीता से पुछहु,
राजा ही सीता बोलावेले जांघे बैठावेले हो।
कैसे सीता धनुष उठावेलु कौन हाथे पोतेलु हो,
बाएं हाथे लिहली गेडुअवा दहीने हाथे गोबर हो।

बाएं हाथे धनुष उठवली, दहीने हाथे पोतीला हो।
हम नाहीं जानीला ए सीता तुहुं अब जानहु हो,
अब सीता रहलु कुंआरी जन्म जुग खेवहु हो।
देशहिं देश के भूपति राजा बटोरेले हो,
बैठेले आसन मारी धनुष हम तोड़बी हो ।
बाएं हाथे धनुष उठवले दहीने हाथे तोड़ेले हो ।
केवरहीं बोलेली रानी सुनैना सुनहु राजा जनक हो,
बेटी के पार लगाव जन्म सुफल होइहें हो ।

२१०

घाम के घमाइल हथिया जे आवेले, उपरा झिलमीली बाग रे ।
ताही चढ़ल राजा दशरथ आवेले, उ बरनेत व्योहार रे ।
अपनी खिड़किया से झांके रानी कौशिल्या, काहे राम आवेले अकेल रे।
पुतवा मैं देखली पतोहिया ना देखली, अब मोर जीवन अधार रे ।
क्या सीता चोरीनी रे क्या सीता चटनी, क्या सीता कुलवा के हानि रे।
कौनी अवगुण राजा सीता छोड़ी अइलन, काहे राम आवेले अकेल रे।
नहीं सीता चोरीनी रे नहीं सीता चटनी, नहीं सीता कुलवा के हानि रे।
सीता के बाप दहेज थोर दिहलन, ओही अवगुण नैहर बैठाइ रे ।
दहेज दहेज मती कर राजा हो, दहेज नेटुआ के नाच रे ।
पुतवा पतोहिया राजा घर भरी जइहें, हो जइहें महल गुलजार रे ।

२११

गायी के गोबर अंगना लिपाइला, गज मोती चौका पुराइ ए ।
आजु ए सासु इहर आइबी, पिअर पाट धराइ ए ।
सुतल रहली स्वप्न एक देखीला, स्वप्न कहत लजाइ ए ।
बाबा द्वार पै बधाव जे बाजेला, भैया लिआवन आइ ए।
जाहु ए बहु हम ना वरजबो, बहुत दिन जनि लाऊ ए ।
काज करावहु बहु इच्छा पुरावहु, बेगे घर ही चली आइ ए।
बैसाख ए सासु भैया के मुड़न, जेठ भैया के ब्याह ए ।
असाढ़ ए सासु बहिनी व्याहब, बेगे कैसे चली आइ ए।
सावन ए सासु अधिक सुहावन, भादों में निशि अंधियारी ए ।

सोहाग

सोहाग

२१२

कहंवा से डाल रे आवे कहंवा से बाजन आवे,
कहँवा से धीआ के सोहाग आवे, धीआ मोरी सोहागीन रही हे।
पुरब से डाल रे आवे, पछीम से बाजन आवे,
अरे वरधी लदाईल धीआ के सोहाग आवे धीआ मोरी सोहागीन रही हे।
कहां धरवों डाला रे दउरा, कहां धरवों अच्छत चन्दन,
अरे कहँवा में धीआ के सोहाग धरवों, धीआ मोरी सोहागीन रही हे।
माडों धरवों डाल रे दउरा, माड़ों धरवों अच्छत चन्दन,
अरे कोहवर में धीआ के सोहाग धरवों, धीआ मोरी सहागीन रही हे॥

२१३

कथी केरा डलवा कथी केरा कलीया,
अरे अब कहां चलेलु अरे अब कहां चलेलु,
कवन लाल के धीअवा सोहाग मांगन आए।
सोने केरा डलवा रूपे केरा कलीया,
अरे अब कहां चलेलु अरे अब कहां चलेलु,
कवन लाल के धीअवा सोहाग मागन आए।
हम तजे चलीला महादेव के टोलवा,
अरे अपनी सोहाग गउरा अपनी सोहाग गउरा,
हमरा के दीहीं सोहाग मागन आए।
सब के देवों मैं पात पुरीए सोहागवा,
अरे अपना कवन बेटी अरे अपना कवन बेटी के,
अँचरा भराई सोहाग मांगन आए॥

२१४

मोती झालर मोती झालर मोती झालरी,
सोहाग मागन चली बेटी दादा दरबार;
दादी देहु ना सोहाग, बारी भोरी के सोहाग, नैहरवाली के सोहाग।

देवों बेटी देवों बेटी बजन बजाए,
सजन हंकारी लेहुना कवन बेटी अंचरा पसार;
वारी भोरी के सोहाग, नैहर वाली के सोहाग।
झील मोरा अंचरा झरीए झुरी जाए,
लेहुना कवन दुलहा पटुका पसार;
वारी भोरी के सोहाग नैहरवाली के सोहाग।
झील मोरा पटुका झरीए झुरी जाए,
लेहुना कवन समधी वरधी लदाए,
मोरी धीआ के सोहाग, वारी भोरी के सोहाग।

२१५

सोहाग मांगे गेलों अपना दादा दरबार,
देहो दादी रानी अपनी सोहाग,
वाली भोली के सोहाग, नैहरवाली के सोहाग।
सिर सेनुर होके लागे, नयना काजर होके लागे,
अगर चन्दन होके लागे, चनन कटारी होके लागे।
सोहाग मांगे गेलों अपना भइया दरबार,
भौजी रानी के सिर सेनुर होके लागे नयना काजर होके लागे,
दातों मीसी होके लागे, अगर चन्दन होके लागे।

परीक्षण

परीछन

२१६

सोने के कजरवटा लेले अम्बा बाहर अइली रे,
रैनी के मातल दुलहा अम्बा नाहीं चीन्हे रे।
दहीआ अच्छत लेले चाची बाहर अइली रे,
रैनी के मातल दुलहा चाची नाहीं चीन्हे रे।
पान के बीड़ा लेले भाभी बाहर अइली रे,
रैनी के मातल दुलहा भाभी नाहीं चीन्हे रे॥

२१७

अरे माइ अपना सुन्दर वर के गारी ना देवों।
बबुआ के माई नउआ बहु, बबुआ ना गरीअइवों;
अरे माई अइसन सुन्दर वर के गारी ना देवों।
बबुआ के भौजी बरीआ बहु, बबुआ ना गरीअइवों,
अरे माई अपना दुलरुआ वर के गारी ना देवों।
बबुआ के बहिनी मलिया बहु, बबुआ ना गरीअइवों,
अरे माई अपना सुन्दर वर के गारी ना देवों।

२१८

उठु उठु गरभइतीनि पहीरु पटोर रे,
रैनी के मातल दुलहा मड़वन ठाढ़ रे।
ना उठे गरभइतीनि गोतीनी ना पहीरे पटोर रे,
रैनी के मातल दुलहा मड़वन ठाढ़ रे।
हाथी एक संवारली आवे रे, ताही चढ़ी आवेले दुलहा दमाद रे।

२१९

आपन राम मों अपने परीछवी, केहु जनी छुवो मोरा राम रे।
राम के माथे मउर भला शोभेला, परीछीला राम के लीलार रे।
परीछन करे चलेली सासु सुन्दर वदन निहारी रे,
अरे केहु जनी छुवो मोरा राम रे॥

२२०

रसे रसे मोरा बाबू चले पतीसाहे के जामल रे।
झनर झनर मोरा बहु चले हरजोता के जामल रे॥

२२१

मचीआ ही बैठली कवन सासु आदीत मनावेली रे,
आदीत हम पर होखींना दयाल बहुआ पग ढारसु रे।
आदीत उगहीना पवले पह नाहीं फाटेला रे,
आरे खिड़की ही डंडीआ झलकली बहुआ पग ढारेली रे।

२२२

इ मत जनीह कवन देई आवेली चेरीआ तोहार,
चेरीआ ही चेरीआ तु जन कर आवेली पुत बहुआर।
इ मत जनीह कवनी देई आवेली चेरीआ तोहार,
चेरीआ ही चेरीआ तु जनी कर आवेली गोतीनी तोहार॥

२२३

माई आलार पुछे बहीनी दुलार पुछे रे।
अरे बाबू काइ काई दान दहेज पवल वोही ससुरारी घरवा रे।
सेर जोखी सोना पवलों, पसेरी जोखी रूपा पवलों रे,
अरे माई एक नाहीं पवलों मैं बेनीया त वोही ससुरारी घरवा रे।
जनी बाबू हहरहु जनी बाबू झहरहू हो।
बाबू करी देवों दूसर वीआह, त वोही घरवा बेनी मीलीहें हो।

२२४

हंसत खेलत मोरा बाबू गइले मन वेदीला काहे अइले रे।
सासु छीनरीआ ने जोग कइली मन वेदीला उहे अइले रे।
सरहज छीनरीआ ने जोग कइली मन वेदीला उहे अइले रे।
साली छीनरीआ ने जोग कइली मन वेदीला उहे अइले रे।

२२५

हाथी साजु घोड़ा साजु बाबा हो कवन बाबा,
हो बाबा भली भांति साजु बरीआत ससुर घरवा लुटी लेवों रे।

से सुनी कवन सुहवा लारो ना घोटेली वोरो ना बांधेली हो,
अरे माई कैसे कैसे पीअवा परबोधवी बाबाही घरवा राख लेवो रे ।
अंचरा डसाइ देवों बेनीया डोलाई देवों, अरे माई ।
अैसे अैसे पीअवा प्रवोधवी बाबाही घरवा राख लेवों रे।

२२६

परीछन करे चलेली वर कामीन अरसी सीन्होरा हाथ रे।
एक वेरी परीछेली माथे के मउर फेरु वर तीलक लीलार रे।
माथे के मउर भूईआं गिरि परेला चूमेली वर के लीलार रे ॥

२२७

कर रे कदम रे तर ऊपरा बेइलीआ रे गांछी।
परीछहु अरे ए अम्बा अपना सुन्दर रे वर।
नयना जुड़ाई रे जइहें हृदया हुलसि रे जाई ।
परीछहु आहों ए भौजो अपना सुन्दर रे वर।
नैना जुड़ाइ रे जइहें हृदया हुलसि जाई।

२२८

मोरा पीछुअरवा वेइलीया के गांछी रे।
अरे वलु छछन वीछन भइले डाढ़।
वेइलीया के गछीआ मन भावे।
घोड़वा चढ़ल अइले कवन दुलहा राजा,
आरे पगीआ अटक गइले डाढ़ ।
बेईलीया के गछीया मन भावे।
फुलवा लोढ़त तुहु सुहवा कवन देइ,
आरे वलु पगीया छोड़ाई देहु डाढ़।
बेइलीया के गछीआ मन भावे ।
कैसे के पगीया छोड़ावों ए दुलहा,
आरे वलु हंसीहें नैहरवा के लोग।
वेइलीया के गछीया मन भावे ।
आज त हँसीहें सुहवा नैहर के लोग हे,
आरे वलु वीहने ले डंड़ीया फनइवो नैहर लोगवा छुट जाई हे।

२२९

पहीर लीहली लहंगा साड़ी और पटोर हो ।
चलु सखी मड़वा में आए बाबू वर हो ।
बांधले वसनती पगीआ मोती लागल कोर हो,
तीरछो कमानी भहुआं चन्दन लीलार हो ।
भरो आंख काजल शोभे नाक सुगा ठोर हो ।
दांतवा अनार के दाना हीया में समाइ हो ।
भगवत अचारी सुन ले मोथीला में शोर हो,
धाई जाई दरशन करे अवधकिशोर हो ।

२३०

उठु उठु गोतीनी करहु शृंगार रे ।
उठि के ना आव गोतीनी परीछु दमाद रे ।
कइसे मैं आँउ गोतीनी गज मोती हार रे ।
टुट फूटी जइहें गोतीनी गज मोती हार रे ।
कइसन बाड़े गोतीनी दुलहा दमाद रे ।
लाख रुपैआ गोतीनी गज मोती हार रे ।
लच्च रुपैआ गोतीनी दुलहा दमाद रे ।
टुट फूटी जइहें गोतीनी गज मोती हार रे ।
युग युग जीअसु गोतीनी दुलहा दमाद रे ।

२३१

आए नवल वर सुन्दर आगन हे, सब सोहागीन मीली परीछे
दमाद हे ।
सोने के थारी में अच्छत दुब हे, सब सोहागीनी मीली परीछे
दमाद हे ।
बार ही बार मुख पोछत सासु, लोढ़ा घुमावत हृदया हुलसे हे ।
गते गते परीछेली सरहज प्यारी, वदन निरेखत पारेली गारी हे
माई तोहरी बाड़ी नीपटे अनारी हे, वस्त्र काहेना वर के संवारी हे ।
चाची तोहारी बाड़ी गवारी, आंख में काजर वर के काहे ना कीए हे ।

बहीनी तोहारी बाड़ी अलवेली हे, पान के लाली मुख म कांहे ना
देली हे ॥

२३२

बोलेली कौशील्या रानी साजु बहीनी डाला हे, जइहें बबुआ
ससुर जी के गलीया दुअरा पर डाला हे।

मड़वा में खाड़ा दुलहा मन मुसकाई हे, मीथीला के नारी
सभ के सरधा पुराईव हे।

अरे काजर धारी ए दुलहा भुषन संवारी हे, जनकपुर के नारी
सभ के नैनों के तारा हे।

२३३

सोने के दउरा ले के जनक राजा ठाढ़ हे।
बैठी बबुआ पालकी में आरती उतारी हे।
आरे नींदीया घुरुमल दुलहा पलको ना ताके हे।
बैठी बबुआ पालकी में, आरती उतारो हे।
सोने के मौरी बबुआ के माथवा वीराजे हे।
बैठी बबुआ पालकी में आरती उतारी हे।
अरे जरी के जामा बाबु के अंगे वीराजे हे।
बैठी बबुआ पालकी में, आरती उतारी हे।
मखमल के मोजा बाबू के पांव वीराजे हे।
बैठी बाबू पालकी में, आरती उतारी हे।

२३४

आंख तोरा देखों रे दुलहा कजरो नाहीं।
फुआ तोरी कजरवा के वहु दल साजही ना जाने,
ए सासु कतेक लुलुअइबु ए सासु कतेक झहरइवू ए सासु ;
अरे कान तोरा देखो ए दुलहा मोतीवो नाहीं।
अम्बा तोरी सोनरवा के वहु दल साजहीना जाने ;
ए सासु कतेक लुलुअइवू ए सासु कतेक झहरईवू ए सासु।
अंगे तोरा देखो ए दुलहा जोड़वो नाहीं।

चाची तोरा दरजीया के वहु दल साजहीना जाने;
ए सासु कतेक लुलुअइबु ए सासु कतेक झहरईबू ए सासु।
पांव तोरा देखो ए दुलहा मोजवो नाहीं।
मामी तोरा चमरा के वहु दल साजही ना जानसु;
ए सासु कतेक लुलुअइबू ए सासु कतेक झहरइबू ए सासु।

२३५

परीछहु अहो ए सासु अपना सुन्दर रे वर, नएना जुड़ाई रे जइहें जीअरा हुलसी रे जइहें।
सोने के थारी रे लेहु दीअरा वराई रे लेहु अच्छत सजाई रे लेहु परीछहु।
आहो ए सरहज अपना सुन्दर रे वर, जीअरा हुलसि रे जइहें नैना जुड़ाई रे जइहें॥

२३६

तनि धीरे धीरे चलु रसिक रसिया।
दुलहा नवलाल अहां के मृदुल हेरि हेरि हुलसे मेरी छतिया तनि धीरे २ चलत।
कौन बुझोलन्हि कौन सिखौलन्हि अम्बा चाची दीदी न बहिनी रसिया सुनत।
सुखद वैन विहँसे सुखद ऐन सुमन घोरक सुर जै बोलिया।
तनि धीरे धीरे चलु रसिक रसिया।

२३७

ननुआ सन पुत्र देखत सुन्दर, अयला गौरी बिवाही।
सांठि डाला चन्दन काजर कछु पोठि दीप लेसि हे।
सिर चन्दन नयन काजर मुख पाकल पान हे।
लाल धोती, लाल तौनी लाल डरा डोरी हे।
जानकी वर राम रघुबर धनुष टुटल आज हे॥

कोहबर

कोहवर

२३८

चन्दन भीती परोरीला जहां उतरे नवाब कोहवर,
जहां उतरे नवाब कोहवर।
जहां ले बइठइबो कवन दुलहा कहु बाबा के नाम कोहवर,
कहु चाचा के नाम कोहवर।
बाबा जे हमरा कवन बाबा अम्बा गौरी हमार कोहवर।
चाची जे हमरा कवन चाची गौरी हमार कोहवर॥

२३६

कोहवर लीखन चलली सरहजीआ हो हाथे गुलेला मुख पान ए।
अैसन कोहवर लीखीह सरहजीआ हो जाही देखी नैना जुड़ाई ए।
आरी पारी लीखीह सरहज बांस पुरईनीया बीचे बीचे लीखीह
सोहाग ए।
ताही कोहवर सुतले कवन दुलहा जवरे कवन देई रानी ए।
कौन हई सासु कौन हई सरहज कौन हई साली हमार ए?
पीअर ओढ़न पीअरी पीताम्बर उहे हई अम्बा हमार ए।
लाली चुन्दरीया रे नैना कजलवा उहे हई भाभी हमार ए।
दौड़ी के अइली रे मारी परइली उहे हई बहीनी हमार ए।
एही कोहबरवा प्रभु भौजी के लीखल उहे भाभी प्राण अधार ए॥

२४०

हरि बांस कटायल हे कोहवर धरायल हे सोने के कलसा पुरहर धरायल
मानिक दिअरा नेसायल बनवास के कोहवर।
ताही पैसी सुतला दुलहा से कोने दुलहा जौरे पन्डित करे धिया।
धिया हे हंसी पुछु विहुंसी पुछु दुलहा से कोने दुलहा कैसे चिन्हव
नीज सासु हे।
लाली ओढ़न लाली पेनहन जीनका ढरै नैना लोर हे।

२४१

कय प्रित नया कोहवर नया २ जोरल सिनेह ।
सोहाग के रात दोसर नया निदिआ ।
पसीया लगल लाढो रोवय रे, नया निदिया ।
केवार धयले मइआ है सोहाग के रात रे दोसर नया निदिया ।
काहे बाबु दान दहेज जै तुकिया, काहे बाबु लाढो मेरी छोट
काहे मन वेदिल ?
नहि सासु दान दहेज जै तुकिया, नहि सासु धिया तेरि छोट,
नहि मन वेदिल ।
असिया योजन सासु आयल रे नया निदिया
पयलों मैं लाडो के सेज अधिक निद सोयलो ।

२४२

रगरी छिपा भरो चन्दन कोहवर लिखबो ए ।
ताही कोहवर सुतेला कवन दुलहा जेवरी कवनी सुहवा ए ।
बायें करवट प्रभु सुतले मुख वो ना बोले ले ए ।
पैसी जगावेली कवनी सासु काहे मन बेदील ए ।
क्या बाबु दान दहेज थोर क्या रे सम्पत्ती थोड़ ए ।
क्या बाबु दुलहिन छोट काहे रे मन वेदील ए ।
नाहीं सासु दान दहेज थोर, नाहीं रे सम्पत्ति थोर ।
नाही सासु दुलहिन छोट नाहीं रे मन वेदील ए ।
आज कुत्ता जनी बोलसु पहरू जनी जागसु ए ।
आज नवरंग हम तुरवी धनी के खोआईवी ए ।
उठु उठु धनी सुकुमारी त मुहवा पखारहु ए ।
उठी कर मुहवा पखारू नवरंगी करू भोजन ए ।

जेवनार

जेवनार

२४३

समधी के गुण नारद बरणों, सारद भरत हूंकारी जी ।
आये राजा दशरथ भूप सहस्त्र मिलि, एक से एक नृप भारी जी ।
राम वो लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न, वांये दहीन सुत चारी जी ।
बैठे बरात बहु विधि आये, परोसन चतुर सयानी जी ।
हंसी सखि पुछेलों राम से बैन, रउरा के देबों एक गारी जी ।
तीनसौ साठ मातु गृह रउरा, एक पुरूष कितनी नारी जी ।
कैसे रहत धर्म पतिव्रत से, कै दिन की उनकी पारी जी ?
इतना सुन उपरहित बोले; सुनहु जनकपुर की नारी जी ।
राजा दशरथ जी के परिचय लेहु, ले जाहु अपनी अँटारा जी ।
तुलसी दास जी गारी गावे, हरी के चरण बलिहारी जी ।

२४४

हां जी बृन्दाबन यमुना तट उपर, महामुनि न्योता पेठाए जी ।
हां जो गोड़ रउरा लागोला आदित गोसांई जेवना परोसन जाइ जी ।
चन्दन काठ के पिढ़इ गढ़ाइला, ओरियन २ बिछाई जी ।
बारी के पुत्र जिन पतल बिनाये सोने के खरींका लगाये जी ।
जेवन आये कृष्ण कन्हैया पद्मीनी चंवर डोलायी जी ।
भात दाल मैदा की रोटी, ता पर घीव ढरकाये जी ।
ऐगन बैंगन सुगन्ध रस सलोना साग सम्पत्ति ले धाई जी ।
अलुआ, ओल, कदुआ, करैला, परवर की तरकारी जी ।
अरी, बरी, फुलौरी, तिलौरी, पापड़ बजका बनाये जी ,
चटनी, अँचार, लउका के रइतो, अगस्त के फूल तराये जी ।
कटहर, बड़हर, केला, कन्दा, नन्द सुत को जेवाये जी ।
खट्टा मधुर जेंइना निरंजन जेवना अमृत नाहीं डलायी जी ।
जेइ जुगीती कृष्ण अंचवन किन्हा, सखि सब पान पेठायी जी ।

काफर जाफर, लौंग, सुपारी, पान पुरान पेठाए जी ।
सुरदास प्रभु आश चरण को हरि के चरण बलिहारी जी ।

२४५

मुनि के साथ सुनि दशरथ सुत आये, आये जनक फुलवारी जी ।
चलु सखी सब देखन जाईं, हिया भर नैन जुड़ाई जी ।
शीता सुन्दर सुभग सुलक्षण अङ्ग अङ्ग रूप बनाये जी ।
कि ये बालक हैं मुनि के, की हैं राज दुलारे जी ।
नहि बालक मुनी कुमार नहिं मुनी सुत आये जी ।
माता कौशिल्या पिता राजा दशरथ, उन्हीं के राज कुमार जी ।
गाय के गोबर अंगना लिपाइला, पान के पतल बिछाये जी ।
धान के भात जतन से रिधाइला, बूंट के दाल बनायी जी ।
खड़रा बजका सब बनाइला लँवग लाची सब लगायी जी ।
लँवग लाची सब लगाईला, भीम सेनी कपूर जी ।
परोसन भरत शत्रुघ्न आये, दही दूध कीचड़ होइ जी ।
राम लक्ष्मण दुनों ओर विराजे ,सकल चले जनवासे जी ।
उँच महल एक ज्योति बिराजे दशरथ सुत रघुबंशी जी ।
तुम जोग हम नाहीं ए रघुबर दरशन के बलिहारी जी ।
सोने के थारी में आरती साजीला जनक चले जनवासे जी ।
भइले ब्याह राम सिता के सब विधि काज संवारी जी ।
तबला निशान अयोध्या में बाजेल। केकर जाला बरात जी ।
तुलसी दास प्रभु गारी बनावल गायीं सखी सब आयी जी ।
तुलसीदास प्रभु चरण परतु हैं हरि के चरण बलिहारी जी ।

२४६

कंचन थार कपूर की बाती हां जी आरती उतारो बनवारी
कैसे देउं रे लला जी को गारी ।
हां जी गारी है प्रेम प्यारी
आज सुदिन दिन पाहुन आये हां जी हर्षि भवन उतारी ।
सोने के खाटि आंगन ले डासींला हां जी वस्त्र धरीना उतारी ।

सोने के झारी गंगाजल पानी हां जी अर्जुन पांव पखारी।
पांव पखारी चरणोदक लिन्हा अत बड़ भाग्य हमारी।
पर पकवान जलेबी मिठाई ता पर घीव कटोरी।
दाखा, चिरौंजी, ताल मखाना, हां जी सिकरन को अधिकारी।
जेवन बइठले कृष्ण कन्हैया हां जी सब सखि पारेली गारी।
का देईं सखि सब हमरा के गारी हां जी हम तीन लोक के ठाकुर।
जब रउरा हईं तीन लोक के ठाकुर हां जी काहे के अइली ससुरारी।
देहु सखिया सब हमरा के गारी हां जी हम लेबो पटुका पसारी।
माता रउरी यशोदा रानी हां जी नर मुनि देव बखानी।
फुआ रउरी कुन्ती देइ रानी हां जी बिन ब्याहही पुत्र जन्मानी।
बहिनी रउरी सुभद्रा रानी हां जी अर्जुन संग सिधारी।
बाबा रउरे नन्द बाबा हैं हां जी कमरी ओढ़त दिन जाईं।
रउरा कइली ग्वालिन संग नाच हां जी कंहवां तक गुण गायीं।
इतना अवगुण कृष्ण रउरा में पायी हां जी सो तीनों लोक के ठाकुर।
हमरा आगे कृष्ण जनि रउरा बोलीं हां जी सब हम देवों उघारी।
कैसे देऊं रे कन्हैया जी को गारी॥

२४७

सत्यभामा को ग्रहण हित सत्राजीत न्योता पठाये जी।
जेवन बैठेले बन बनवारी सखी सब गावेली गारी जी।
सुनिय सुन्दर गारि हमारी सुन लिजै तब भोजन किजै जी।
रवा तो सुत बासुदेव देवकी के नन्द के लाल कैसे कहाये जी।
रउरी फुआ कुन्ती देइ रानी बिन ब्याहे पुत्र जन्मायो जी।
रउरी बहिनी सुभद्रा देइ रानी अर्जुन संग सिधारी जी।
रउरी भौजी द्रौपदी देइ रानी पांच पांडवा की प्यारी जी।
जेइ जुगुती कृष्ण अंचवन लागे पान पुरान पठाये जी।
मेवा पान गुलाब मंगायी भीतर भवन सुलायी जी।
कोहबर में सब सखिया सयानी मस्त भरी सब आयी जी।
हंसी हंसी बोले कुंज बिहारी सब कर मन मोह लेई जी।

२४८

हां जी भोजन समय जानि मिथिला पति दशरथ बोलि पठाये जी।
सुतन सहित प्रिय जन नृप जन सुतन सहित नृप आये जी।
आगे होइ भेंट करी परस्पर मन्दिर लेइ आये जी।
चन्दन काठ के चौकी बनाये ता पर नृप बैठाये जी।
जन जन प्रीति कंचन की थाली मनि गन की है सुराही जी।
व्यञ्जन चतुर परोसन लागे सखि सब गावेली गारी जी।
गावत गारी ले ले नाम राजा जनक नृप दशरथ जी की नारी जी।
गाली तुमही सुनावत भूपति इ गारी प्रेम प्यारी जी।
सुनिय भूप बिलग मति मानवी जानबी बात हमारी जी।
तुम तो गोर कौशिल्या रानी गोरी श्याम सुन्दर केहि जाति के जी।
सुन्द सुलोचनी सुमुखी सुशीला सुभग अंग की नारी जी।
श्याम सुन्दर अइसन पुत्र जन्माये लिङ्ग ही न्योता पेठाए जी।
भीतर भवन महामुनि राखीन तिनसे सुत जन्माई जी।
रामजी के माता भरत जी की जननी मुनि के मन चित लायी जी।
एक पतिव्रता सुमित्रा रानी तिनकर बालक गोरा जी।
सुनिय भूपति सजन उपरोहीत मानबी बात हमारी जी।
मिथिला पति के कन्या बिबाह के अवगुण सकल दुराई जी।
सहित समाज हंसत नृप दशरथ रसे रसे भोजन पाये जी।
भोजन करि जब अंचवन किन्हा पान सुभग सुपारी जी।
भोजन करि के बिदा मांगी के नृप जनवासे आये जी।
तुलसी दास ठाढ़ कर जोरे जुठन के अधिकारी जी।

२४९

रत्न जड़ी रत मनी के कटोरा,
षट रस भोग लगाये रघुनाथ लला के।
चरण कमल बलिहारी रघुनाथ कुंअर के।
सोने के सिंहासन बैठे राजा रामचन्द्र,
सुन्दर बदन निहारी रघुनाथ लला के।

जेवन बैठेंले राम से लक्ष्मण,
सखि सब देहही ना गारी रघुनाथ लला के ।
गरिया एक हम दिही राजा रामचन्द्र,
ज ऊं रउरा सुनी मन लायी रघुनाथ लला के।
तनीसौ साठ मातु गृह रउरा,
सोवत जनक अंटारी रघुनाथ लला के ।
राम हंसे लद्मण मुंह बिजुकावे,
परेला माता जी के गारी रघुनाथ लला के ।
गारी के अमरख जन कर लद्मण,
गारी है प्रेम प्यारी रघुनाथ लला के ।
हंसत सखी सब दे दे ताली,
भले लद्मण समुझायी रघुनाथ लाला के ।
जऊं तोरा बबुआ हो भाई प्यारी,
काहे को आये ससुरारी रघुनाथ लला के ।
देईं रउरा गारी दिआयो रउरा गारी,
हम लेबो पटुका पसारी रघुनाथ लला के।
तुलसी दास प्रभु आश चरण के,
हरी के चरण बलिहारी रघुनाथ लला के ।

२५०

हां जी जाही दिन रघुवर जनकपुर आये,
देखन जाये सारी दुनिया जी!
हां जी हां जी कोई सखि ठाढ़ कोई सखि बैठल,
कोई सखि चलत निहारी जी ।
हां जी हां जी अतलस लंहगा जड़ाव की साड़ी,
कड़की रही नौरंगी जीं ।
हां जी हां जी चाल चले जैसे मस्त हाथी
पांव बजे पैजनिया जी ।
हां जी हां जी जनक महल में डसलीं पलंगिया,

बैठल चारो भैया जी ।
हां जी हां जी झांकि झांकि झांकत नारी,
झरोखन चितवत झलकत नारी जी ।
हां जी हां जी जेवन बठेले चारो भैया,
पहिन पीअर करधनिया जी ।
हां जी हां जी सुनी रघुनन्दन एक बात पुछपरस,
रउरा के देबों एक गारी जी ।
तीन सौ साठ मातु गृह रउरा,
सब में तीन पटरानी हां जी ।
हां जी तीनों में एक जनक जी को दीजै,
सेवा करीहे मन लाइ जी ।
राम जी के माइ कौशिल्या रानी,
जेकर करत बड़ाई जी ।
भरथ जी की माता कैकई रानी,
इन्द्र करत बड़ाई जी ।

२५१

राजा वृषभान जी न्योता पठाए कृष्ण लला चलि आये जी ।
सखा सहित कृष्ण आये जी ।
नावन नावन गोपी सब आये कृष्ण गडुर सब आये जी ।
आय गये यमुना जी के तीरे पावन लागेला बालु जी ।
उतरी पड़े यमुना तट उपर कृष्ण को तिलक चढ़ाए जी ।
आयी कदम तर मुरली बजाये अर्जुन आये पुकारे जी ।
सब सखिया मिलि देखन आये कैसा ललन बनि आये जी ।
श्याम सुन्दर रूप अपार मुरली बजावत आयें जी ।
केदली बन के खम्भ मंगाये पानन माड़ो छवाये जी ।
सोने के खाट आंगन लेइ डासीला वस्त्र धरी ना उतारी जी ।
सोने के गेड़आ गंगाजल पानी पांव परखारसु राजा जी ।
पांव पखार चरणोदक लिन्हा अत बड़ भाग्य हमारी जी ।

चन्दन रगरी के चौका दिआए इंगूर से थरिया मंजाइ जी ।
दान के उजे पतल बिनाये सोने के खरीका लगाये जी ।
दाल भात मैंदा की रोटी परवर की तरकारी जी ।
पूड़ी कचौड़ी और छनौरी चिन्नी की है पगाइ जी ।
पान कतर के भाजी बनाइला निब्बू कतर के अंचार जी ।
सोने की थाली में जेवना परोसीला गडुआ से घीव ढरकाइ जी ।
पीअर धोती पहिर साला परोसेले सरहज बेनिया डोलाइ जी ।
जेवन बैठेले कृष्ण कन्हैया सखि सब गावेली गारी जी ।
हम त जे हुईं तीन लोक के ठाकुर हमरा रउरा कैसे गारी जी ।
जऊं रउरा हुईं तीन लोक के ठाकुर काहे के आये ससुरारी जी ।
देइ रउरा गारी दिआइ रउरा गारी हम लेबों पट्ठुका पसारी जी ।
ऐसो गारी को गारी ना कहबो, गारी है प्रेम प्यारी जी ।
ऊंच मंदिर चढ़ माता निरेखे कैसे ललन चलि आये जी ।
हंसी हंसो पुछेली मातु यशोदा रानी कैसी ललन ससुरारी जी ।
साली से सरहज अधिका प्यारी सासु गंगाजल पानी जी ।
दस मास बेटा एही कोखि राखीला कबहूं ना कइल मोर बड़ायी जी ।
एक ही रात बेटा गइल ससुरारी सासु के इतना बड़ाई जी ।
तुही त अम्मा हो दुनिया दिखावेलू सासु दिहनी राधा प्यारी जी ।
तोहरी कसम अम्मा नन्द बाबा के अब ना जाइबी ससुरारी जी ।
हमको तुमको नन्द बाबा को देत सखी सब गारी जी ।
जुग जुग बाढ़ो बेटा तोरी ससुरारी नित्य आवहु नित्य जाहु जी ।

२५२

हां जी राम से लक्ष्मण चले ससुरारी कौशिल्या व्याकुल होइ जाइ जी ।
आजु की रात हम कैसे बिताइबों राम चले ससुरारी जी ।
जनि अम्मा हर्षहु जनि अम्मा झंखहु जनि चित करू बैराग जी ।
आजु की रात बिताइबी ससुरारी भोर भये चली आयी जी ।
हमरे पलंग रउरा सुतबी माता हो राम भजन गुण गाइबी जी ।

जाइ बरात जनकपुर उतरे लोग तमाशे हैं आयी जी।
केहू देखे ठाढ़ केहू देखे निहुरल केहू देखे शीश नवायी जी।
मिनती से बोलेले राजा जनइया रीखे कौन जेवनार बनायी जी।
अंचरा पसारी कर जोरेली सीता रानी बाबा से विनती हमारी जी।
छप्पन भांति जेवनार बनाइबी जेवसु अवध बिहारी जी।
आनि पलंगरी आंगन ले बिछाइबी वस्त्र धरीना उतारी जी।
सोने के झारी गंगाजल पानी वारी ने पांव पखारी जी
चन्दन चौकी आन गढ़ाइबी आंगन बीच धराइबी जी।
आनि जाजीम झारी बिछाइबी सखि सब बैठहू आयी जी।
जेवन बैठेले राम लक्ष्मण दीहीना सखि सब गारी जी।
राम जेवेले लक्ष्मण मुंह बिजुकावेले परेला पिता जी के गारी जी
अपना महल से निकले सीता देइ मुख पर आंचल डाली जी।
हमरा लला जी के गारी दिहल कौन दिहल बिजुकायी जी।
तब जाइ बोलेली सखिया सलेहर हमहीं दिहलीं उनको गारी जी।
जेइ जुगुती राम अंचवन किन्हा सखि सब पान पेठाइ जी।
पान लेइ राम हृदय लगावे ले सखिया से मिनती हमारो जी।
देही सखिया लक्ष्मण के बिदाइ रोयी भरेलो महतारी जी।
जऊं रउरा ए राम माइ प्यारी काहे ना साथ ले आयो जी।
जनक अंटारी में आनि सुलायी सुखी बन घर जायी जी।
हंसत राम हंसत लक्ष्मण हंसत सकल दे ताली जी।
तुलसी दास प्रभु आश चरण के हरि के चरण बलिहारी जी।

२५३

दर्जी लला मैं तो दर्जी हूं।
कौना शहरिया से आये जी।
आजम गढ़ से पुर पटना से दिल्ली शहरिया से आये जी।
रेशम रे लंहगा कुसुम के साड़ी चोलिया रतन किनारी जी।
से चोलिया बेसहेले रसिया कौन लाल लेहुना कौन बहु साइ जी।
आव ना सेज हमारी जी।

कैसे मैं आऊं रसिया सेज तुम्हारी आज छैलवा के पारी जी।
तोहरा छैलवा के हाथी देबों छपरा शहर जमींदारी जी।
आजम गढ़ जमींदारी जी।
दर्जी लला मैं तो दर्जी लला।

२५४

सांझे चन्दा उगतु हैं सांझे चन्दा उगतु हैं सुकवा उगे भिनुसार जी।
देखु चेरिया देखु चेरिया लउकत जाला बरिआत जी।
ऐ अवधपुर के राजा ऐ अवधपुर के राजा ऋषि सत्र ब्याहन आये जी।
धन्य धन्य भाग्य जनकजी राम अइसन वर पाये जी।
गिरी पर्वत से आनि मंगाये पानन माड़ो छवाये जी।
सोरही गाय के गोबर मंगाये पुरइनी बेदी बनाये जी।
सोने के कलशा पुरइथले धराइ ला चौमुख दीप बरायी जी।
गज मोती चौका पुरायी जी।
गज मोती चौका पुराये राम सिया बैठाये जी।
धन्य धन्य भाग्य जनक जी राम अइसन बर पाये जी
राहुल पलंग मंगाये वस्त्र धरीना उतारी जी।
चन्दन काठ के चौकी मंगाये भांति भांति बिछाये जी।
आम के पतल आनि धराये ओरियन ओरियन बिछाये जी।
ओरियन मोती झालर लगाये जेवन लाल बुलाये जी।
जेवन बैठे राम से लछमण सखि सब गारी गावे जी,
ले ले नाम पुरुष अरु नारी सब सखि गावेली गारी जी।
जेइं के अंचवन किन्हा पान पुरान पेठाए जी।
पान के बीड़ा सखि सब पेठावे राम ही प्रेम दिखावे जी।
धन्य धन्य भाग्य रउरी जनक जी राम के चरण पखारे जी।
कर जोरि बिनती करे राजा जनक जी हम को धन्य बनाये जी।
तुलसीदास प्रभु आश चरण के हरी के चरण बलिहारी जी।

२५५

हां जी जब रे राम जनकपुर उतरे देखन दौड़ी है दुनिया जी।
हां जी कंचन हार तास की अंगिया कनक जड़ावल ओढ़नी जी।
हां जी कंचन थार कचौड़ी परोसल सोरही के घीव चभोरी जी।
हां जी जेवन बैठेले राम लक्ष्मण देहु सखि सब गारी जी।
हां जी हम त जे हई देश पत्री के ठाकुर हमरा के कइसन गारी जी।
हां जी जो रउआ हई देश पत्री के ठाकुर काहे के अइली ससुरारी जी।
हां जी दिहीं रउरा गारी दिआइं रउरा गारी हम लेबो पटुका पसारी जी।
हां जी हंसी हंसी पुछेली माता कौशिल्या कैसी ललन ससुरारी जी।
हां जी साली से सरहज अधिक प्यारी सासु गंगाजल पानी जी।
हां जी दस ही मास पुत एही कोखी रखलों कबहीं ना कइल बड़ाई जी।
एक ही रात बेटा गइल ससुरारी सासु के इतनी बड़ाई जी।

२५६

हां जी समधी के घरे समधी पाहुन आये नारद करत बड़ाई जी।
हां जी राजा दशरथ एक भूप सहस्त्र दस एक से एक व्रत धारी जी।
हां जी जब बरिआत जनवासे आये बांये दहीने सुत चारी जी।
हां जी सुर नर मुनि सब देख सिहाइल धन्य दशरथ व्रतधारी जी।
जेवन बैठेले भूप सहस्त्र दस, एक से एक व्रतधारी जी।
हां जी बारहो व्यञ्जन छप्पन तरकारी परोसेली जनक दुलारी जी।
हां जी रामलला एक अर्ज करतु हैं सुनहु ऋषि की नारी जी।
एक सत्य साठी मातु तुम्हारे घर एक पुरूष की हैं नारी जी।
हां जी इतना सुनि उपरोहित बोले हमहु देबु कुछ गारी जी।
हां जी सब दिन अग्नि सहतु हैं लाल जी आजु देवता की है पारी जी।

२५७

जब से राम जनकपुर आये देखन आये सारी दुनिया जी।
हां जी झांकि झांकि सखि सब देखन लागी जस रे झांकेली रावल मुनिया जी।

हां जी केहु सखि ठाढ़ केहु सखि बैठली केहु सखि फिरती बिकानी जी।
भाव के भात प्रेम के फुलकी दया के दाल बनायी जी।
हां जी नेह के निब्बूआ करन के हरदी करनी करीला प्रभु जेइ जी।
जेवही बैठेले राम से लक्ष्मण देहु सखी सब गारी जी।
हां जी हम त जे हईं देश पत्री के राजा हमरा के कइसन गारी जी।
हां जी जउ रउआ हईं देश पत्री के राजा काहें के अइली ससुरारी जी।
हां जी राम दोहाइ क्रिया परमेश्वर अब ना जाईबी ससुरारी जी।
हां जी बाढ़हु लाल जी राउर ससुरारी नित्य रे भोजन नित्य गारी जी।

२५८

धन्य भाग्य हमारी धन्य भाग्य हमारी कृष्ण लिहले अवतार जी।
धन्य नगर अयोध्या जहं राम लिये अवतार जी।
धन्य मातु कौशिल्या धन्य मातु कौशिल्या जिन्ह रे रखे दस मास जी।
धन्य बहीनी सुभद्रा धन्य बहीनी सुभद्रा जिन्ही रे खेलावे दिन रात जी।
धन्य भाग्य हमारी धन्य भाग्य हमारी राम आये ससुराल जी।
आज्ञा पाऊं मैं लाल जी के आज्ञा पाऊं मैं लाल जी के चलो के मैं जेवना बनाऊंगी जी।
खोआ खांड़ मिठाई फौरन दूध मलाइ जी।
राम जेवन लागे राम जेवन लागे सखीन पंखा डुलाइ जी।
धन्य भाग्य हमारी धन्य भाग्य हमारी राम आये ससुराल जी।

२५९

सोने की झारी गंगाजल पानी हांजी पांव पखारे नउआ बारी जी।
इंगुर घोरी घोरी चौका लिपाये सिन्दुर थाल मेजाये जी।
मोतीसार चौरा के भात रिन्हाये हांजी मूंग के कही जी उपरा गेन्हरिआ के साग जी।

जेवन बैठले राम चारों भाई हां जी सखी सब गारी गाइ जी।
राम जेंवेले लछमुण हाथ सिकोरेले हां जी परेला माता जी के गारी जी।
जेंवहु ए लक्ष्मुण जेंवहु लक्ष्मुण आजु की गारी प्यारी जी।
हां जी कैसे माता जी को गारी जी।

२६०

बृषभान लाल जी के न्योता पेठावेले कृष्ण लाल चलि आइ जी।
हां जी कनक चौकी आंगन में डासल बस्त्र धरीना उतारी जी।
हां जी माथे जे उन्हूका भगवती उरेहल कसांगिन की छबि न्यारी जी।
हां जी काने कुंडल गले तुलसी के माला हाथे सोने के अंगूठी जी।
भात ही रीन्ही मोती के गजला दाल में घीव डाली जी।
हां जी बारा से बरी औरी फुलवरी ले दधि में डाली जी।
हां जी जेवन बैठेले कृष्ण कन्हैया देही सखी सब गारी जी।
हां जी माता जे रउरी यशोदा रानी समधी लेइ सीधारी जी।
हां जी फुआ रउरी कुन्ती रानी बिन ब्याहही पुत्र जन्माइ जी।
हां जी बहिनी जे रउरी सुभद्रा रानी उनहूं जे पांच भतारी जी।
पांच भतार पचोतर बिनती उन पतिव्रता कहावहिं जी।

२६१

वृन्दा वन यमुना तट उपर कुंज भवन मन भायी की हां जी।
नन्द के लाल यशोदा के पुत्र कृष्ण के न्योता पठाई की हां जी।
गोप ग्वाल सखा सब लेइ के महा प्रभु न्योता ही आये की हां जी।
गोप सखा धन शोभित माधो ओढ़े पिताम्बर फहराई की हां जी।
आनी यमुना जल पांव पखारों पुन्य चरण फल पायी की हां जी।
जल पतल आनि परोसों यमुना जल छिड़कायी की हां जी।
सोने के किरीची दुती भात परोसीला चान्द सूर्य ज्योति धाईकी हां जी।
कटहर, बड़हर, केला, कइंता, कदुआ के रइतो बनायी की हां जी।
कोहड़ा, कचरी, अदवरी, तिलौरी, पापड़ आनि छनाइ की हां जी।

छेमा, छेमी, परोरा, परोरी, झींगा, झीगी बनाये की हां जी ।
मुंगवरी, दनवरी, औरी कचनार, अगस्त के फूल तराये की हां जी ।
दही दूध जब लेइ घोरीला अमृत नाहीं तुलाइ की हां जी ।
सब रंग भोजन करहु निरञ्जन साग सम्पत्ति रस नाही की हां जी ।
सोने की झारी लिए राधे सुन्दरी कृष्ण के अंचवाई की हां जी ।
सोने के खरीका लिए राधे सुन्दरी खरिका लेहु मैं लायो की हां जी ।
कर जोरि बिनती करे राधा सुन्दरी चारों से वचन हमारी की हां जी ।

२६२

एक समय वृषभान के नन्दनी मनि मय मण्डप छाये जी ।
वृन्दा वन यमुना तट ऊपर कुंज भवन मन भाये जी ;
जोत्री से पुत्री कपूर के पैजन कौन सखि न्योता पेठायी जी ।
जोत्री से पुत्री कपूर के पैजन ललिता सखि न्योता पठायो जी ।
हां जी महाप्रभु न्योता आये जी ।
सोने के खाटी आगन ले डासीला वस्त्र धरी ना उतारी जी ।
गोप सखा धन शोभित माधो पिताम्बर फहराये जी ।
ले यमुना दल पांव पाखारीला दुति वन्दन फल पायी जी ।
आम के पतल आनि परोसीला गंगा जल छिड़काये जी ।
सोने के परात में भात परोसीला चन्द्र सूर्य ज्योति धाए जी ।
लेई गंगा यमूनी दाल परोसीला डब्बून घीव ढरकाये जी ।
बारा, बरी खड़ेरा, धोखा, आम के छेनी बनाये जी ।
कोहंड़ा, कचरी, अदौरी, तिलौरी, लउका के रइतो बनाये जी ।
कटहर, बड़हर, केला कइता, पापड़, वजका बनाये जी ।
अलुआ, ओल, करैला, कन्दा, आनन्द कन्द बनाये जी ।
झिगा झिगी, परोरा परोरी, सेमा सेमी तराये जी ।
जिरहुल, मूंग और कचनार, अगस्त के फूल तराये जी ।
सब रंग भोजन किजिये निरंजन साग सम्पति रस नाहीं जी ।
दधि दूध साथ घोरीला अमृत नाही तुलायी जी ।
सोने के खरीका लिये राधे श्यामा खरीका दस मैं लायो जी ।

काफर, जाफर, लौंग, सुपारी, पान पुरान लगाई जी।
कर जोरि बिनती करे सखि ललिता सेवा मेरी करो स्वीकार जी।
दया दृष्टि राखि निरंजन सखि सब कहे कर जोरी जी।

२६३

शारद के गुण नारद वरणे।
रिद्धि सिद्धि नव द्वारे खड़ी इन्द्र कुवेर भण्डारी जी।
छप्पन भोग दशरथ नित्य जेवत यहां अधिक तैयारी जी।
जब राजा दशरथ जेवन आये बांये दहीन सुत चारी जी।
सोने के थारी में पूड़ी परोसीला मनिगन की है सुराही जी।
जनक थार दिये सब ही को तुम्मा भरल गंगा पानी जी।
टिकरी, खूर्मा, और बलुसाही,फिन्ना, सेव मिठाई जी।
घेंवड़ा, पापड़, और रस भोजन, मिश्री की है पगायी जी।
मिठा खात सब लोग अकुलानी दिही न बहुत तरकारी जी।
नेनुआ, बैगन, और करैला, परवर, की तरकारी जी।
तिता खात सब लोग अकुलानी षट रस की तैयारी जी।
आम, अनार, तूंत और निब्बू मिश्री की है पगायी जी।
साग सलोना दशरथ नृप जेवत मिथीला की तैयारी जी।
चटनी खात दशरथ जीभ चाटत मांगत हैं वहु वारा जी।
तुलसी दास प्रभु आश चरण की हरी के चरण बलिहारी जी।

२६४

नित्य उठ मोहन हठ करतु हैं कर दिन्हे तुम प्रचार की हां जी।
लोभ मोह दरिआव बहतु हैं लहर में जग संसार की हां जी।
प्रेम के नाव चढ़े यदुबंशी वोर देत मझधार की हां जी।
झांझर नइया अवगुण बहुत है प्रभु पतवार की हां जी।
बेयार पवन चहुँ ओर झकोरे झिझोरी खेले महरानी की हां जी।
डूबत ब्रज को राखि लियों हैं गोबरधन गिरधारी की हां जी।
पार लगावहु नैया किनारे खेवन हार गवार की हां जी।
चंपा में चतुर्भूज विराजे जोग जुगुत फुलवारी की हां जी।

राधा कृष्ण कतेक रुप वरणों फूल केवला कचनार की हां जी।
एक सुबास और गंध वासल भौंरा रहत रखवार की हां जी।
कंचन रंग चतुर रंग गले वैजन्त्री के माला प्रगट सिरजन हारा की हां जी
चारि खान जग जीव उधो सिरजन हार बिहारी की हां जी।
नारी सुभद्रा गर्व से मातल सुन्दर छवि विराजे की हां जी।
पूजा करन निकली मन्दिर से अर्जुन संग सिधारी की हां जी।
भूषण अभरन पावन पावन संत्र मन विधि यौवन भारी की हांजी।
पास पड़ोसिन बन्द घर खोजेली छैला भतार रगीला की हां जी।
निर्गुण सगुण अगम निगम सब वरणों विस्तारी की हां जी।
खरीका औ पानी पान खिआवेली पुलकत नन्द कुमार की हां जी।
अधम आधीन चरणोदक लिन्हा कृपा करने वाले की हां जी।
भवजन की प्रभु और भरोसा हम तो शरण तुम्हारी की हां जी।
अब प्रभु आश तुम्हारी की हां जी।
सूरदास प्रभु आश चरण की हरि के चरण वलिहारी की हां जी।

२६५

जब शिव शंकर ब्याहन चलले लोग देखहु बरिआती।
भूषण बसन शिव पहिनत नाहीं नङ्गे द्वारी भइले ठाढ़ जी।
सोने के पालकी शिव चढ़त नाहीं बुढ़वा बैल असवार जी।
आन्हर भँभर लूल्ह और लंगड़ भूत पिचाश बरिआती जी।
सोने के चौकी शिव बैठत नाहीं मृग छाला आसन मारी जी।
इतना सुन गिरीराज बोले शिव जी हवे त्रिपुरारी जी।
जब शिव शंकर जेवन आये इन्द्र कुबेर भण्डारी जी।
पांच ही मुख पांच ओर विराजे कहंवा धरबी हम थारी जी।
सौ सौ मन से कम नहीं जेंवत पेट मानो जस भाड़ी जी।
माठ मिठाई शिव जेवत नाहीं भांग धतूर पवहारी जी।
पर पकवान शिव जेंवत नाहीं धतूर की गोली बनायी जी।
जब गिरिराज भांग मंगाये हर्षि चले जेवनार जी।
अम्बिका कहत अचंभा जनि मानहु शिव जी हवे त्रिपुरारी जी॥

२६६

वृषभान जी न्योता पठावले कृष्ण लाल चलि आये जी।
उतर पड़े यमुना जल ऊपर द्वादस तिलक लिलारे जी।
सब सखिन मिली देखन आयी कैसे बने यदुराई जी।
श्याम बरण रूप श्याम सुन्दर ऐसा बने हैं यदुराई जी।
सोने के खाटी आंगन ले डसाइला वस्त्र धरीना उतारी जी।
सोने के गेडुआ गंगाजल पानी पांव पखारे नउआ बारी जी।
पांव पखार चरणोदक लिन्हें अति बड़ भाग हमारी जी।
पांच ही पान के पतल मंगाये लँवगन डोभ डोभाये जी।
दाल भात मैदा की रोटी सोरही गाय के घीव जी।
बरी, फुलवड़ी, और दनवरी, परवर की तरकारी जी।
पीअरी धोती पहिन सार परोसेले सरहज पारेली गारी जी।
काहे सखि देइ सब हमरा के गारी हम तीन लोक के ठाकुर जी।
जउं रउरा हईं तीन लोक के ठाकुर काहे के अइली ससुरारी जी।
पारी सखि सब हमरा के गारी हम लेबों पटुका पसारी जी।
ऊँच महल चढ़ी अम्मा निरेखेली कृष्ण लला चढ़ी आये जी।
हंसी हंसी पुछेली माता यशोदा कैसी ललन ससुरारी जी।
साली से सरहज मइया अधिक प्यारी सासु गंगाजल पानी जी।
दस ही मास पुत्र एही कोखी रखलों कबहीं ना कइल बड़ाई जी।
एक ही रात बेटा गइल ससुरारी सासु के कइल बड़ाई जी।
राउर किरिया अम्मा नन्द बाबा किरिया अब ना जाइबो ससुरारी जी।
दिन दिन बाढ़ो बेटा रउरी ससुरारी नित्य रे आवहु नित्य जाहु जी।
दिन रे भोजन दिन दिन गारी हमरा भला सोहाई जी।

२६७

कृष्ण लला जी से अरज करतु हैं सुनि लीजै अरज हमारी की हां जी।
कोमल गात भाल चन्द्र विराजत चंचल अति सुकुमार की हां जी।
कुंज बिहारी तुम जे यदुवन्सी लिन्हे दसो अवतार की हां जी।
मोर मुकुट पिताम्बर शोभे गले बैजन्त्री के माला की हां जी।

केहि विधि पाइवी दरश तुम्हारी हुलसत जिअरा हमारी की हां जी।
सोने के गड़ुआ गंगाजल निर्मल कंचन जरीदार के सारी की हां जी।
कहत गुंजरी चरणोदक दिजीये लेहु मैं चरण पखारी की हां जी।
चन्दन के चौकी रत्न जड़ित है आसन मारे करतार की हां जी।
मधु मेवा पकवान मिठाई भिन्न भिन्न कौन प्रकार की हां जी।
जेवन बैठे कृष्ण दुलारे नयना भरे रतनारे की हां जी।
रूचि रूचि भोग लगावे नन्दलाला सुनो सबन के गारी की हां जी।
गारी प्रेम रस खान पठावेलो गावत कुल परिवार की हां जी।
साली से सरहज सखिया सलेहर संग में प्राण अधारी की हां जी।
ललिता मनोहर वनी ब्रज बनिला कर लिये सोलहो शृंगार की हां जी।
हंसत बुलावत और समुझावत कर गहि राज दुलारी की हां जी।
घर घर से निकलेली सब ग्वालिन गर्दा मचावत डगरी की हां जी।
खैंचत चीर दधि मोर छीनत हर्षित है ब्रज नारी की हां जी।
गावत गीत बजावत वंशी नाहीत मैं बरजो पुकारी की हां जी।
नाहक दान लगावे नन्दलाला किस्से मैं लावों गोहारी की हां जी।
दान के रीति करो बनवारी कैसे मैं करवों बिगाड़ की हां जी।

२६८

हां जी लिखी चिठ्ठिया श्री कृष्ण जी भेजेले,
सखिया से बिनती हमारी जी।
सब कोई आवेला हाथी से घोड़ा कृष्ण चन्डोल चढ़ि आई जी।
सोने के चौकी आंगन ले डासीला वैंठी सजन जांघ जोरी जी।
सोने के गेडुआ गंगाजल पानी बारीनी पांव पखारी जी।
पांव पखारी चरणोदक लिन्हे अत बड़ भाग्य हमारी जी।
ओरियन २ पिढ़ई बिछाये वैठी सजन जांघ जोरी जी।
निहुरल निहुरल सार परोसे धोतिया मइल जनि होइ जी।
हंसि हंसि पूछत राजा बृषभान जी के ज्योनार बनायी जी।
रानी राधे ज्योनार बनायी कृष्ण जेवन आये जी।
दाल ही भात मैदा की रोटी परवर की तरकारी जी।

आम अंचार व रंवदा ओ सुरन अदरख अजबी बनायी जी।
मास से मछल औरो तीतीर करूआ तेल तरायी जी।
झांकी झांकी देखेली साली सरहज सखि सब पारेली गारी जी।
हम त जे हई तीन लोक के ठाकुर हमरा रउरा कइसन गारी जी।
जऊँ रउरा हईं तीन लोक के ठाकुर काहे के अइलीं ससुरारी जी।
बाबा रउरा नन्द अहीर मैया यशोमति रानी जी।
कुन्ना जे राउरो पांच भतारी बहिनी जे भइली छिनारी जी।
देहु सखिया सब हमरा के गारी हम लेबो पटुका पसारी जी।
जेई जुगुती जब अंचवन लागे देली सखिया सब बिदाई जी।
एक एक धोती एक एक रुपया सब सखि कइली विदायी जी।
पान के बीड़ा लवँग सुपारी सब सखि देती हैं आयी जी।
इ बिड़वा मोर प्राण प्यारा सखिया से बिनती हमारी जी।
बाजत ताल बाजत मृदंग केकर जाली बहुआ जी।
राजा नन्द जी के बेटा कृष्ण जी उन कर जाली बहुआ जी।
हँसी हंसी पुछेली मातु यशोदा कैसी ललन ससुरारी जी।
साली से सरहज अधिक प्यारा सासु गंगाजल पानी जी।
क्या वरणों कहां लौं मैं कहँ ससुर अधिक गुमानी जी।
हंसि २ पुछेली बहिनी सुभद्रा कैसी ललन भौजायी जी।
अंखिया ऊंच भंहुआ रतनारी अंखिया अजब बनायी जी।
रूप राशि कहां लौं वरणों देखत मन लोभायी जी।

२६६

एक समय बृषभान के नन्दनी मनिमय मंडप छायी की हां जी।
यमुना तट बृन्दाबन उपर कुञ्ज भवन मन भायी की हां जी।
एक समय बृषभान की नन्दनी कृष्ण के न्योता पठाई की हां जी।
यदुबंशीन कुल कमल कन्न लोचन महा प्रभु न्योतही आये की हां जी।
मोर मुकुट वजन्त्री के माला पिताम्बर फहराये की हां जी।
गोप सखा धन शोभित माधो महाप्रभु न्योतही आये की हां जी।
सीने के गेड़ुआ गंगाजल पानी यमुना जल छिटवायं की हां जी।

मलया गिरि के छुन्दन मंगाये तेकर पिढ़इ गढ़ाये की हां जी।
सोने के थाली में जेवना परोसल मधु मेवा पकवान की हां जी।
पूड़ी कचौड़ी सब पकवान मिश्री में पगवाई की हां जी।
टिकरी खूर्मा अरू वलुसाही केवड़ा जल छिटकाइ की हां जी।
दाल भात परोसे राधे चान्द सूर्य ज्योती छाहे की हां जी।
कोहड़ा, कचरी, अदवरी, तिलौरी, पापड़ बजका बनाये की हां जी।
कटहर, बड़हर, कंइता, और भंटा बनाये की हां जी।
अलुआ, ओल, करैला, कन्दा, परवर की तरकारी की हां जी।
झिंगा, झिंगी, परोरा, परोरी, अगस्त के फूल तराये की हां जी।
जिरहुल, मुंगवरी, औरी कचनार, लउका के रइतो बनाये की हां जी।
छप्पन भोजन करहु निरंजन साग सम्पति मन भाये की हां जी।
सोने के गड़ुआ गंगाजल पानी तब कृष्ण अंचवावे की हां जी।
सोने के खरीका लिये राधे सुन्दरी खरीका लेहु मैं लायी की हां जी।
लँवग लाइची, सुपारी मंगायी पान पुरान लगाये की हां जी।
कर जोरि बिनती करे ब्रज सुन्दरी यारों से बिनती हमारी की हां जी।

२७०

हां जी आये राजा दशरथ भूप सहस्त्र मिलि एक से एक अधिकार जी।
जेवन आये दशरथ राजा बांये दहीन सुत चारी जी।
कनक थार दिस सब ही को मनिगन की है सुराही जी।
सोने के थाली में पूड़ी परोसीला और गंगा जल पानी जी।
पुड़ी मिठाई और बलुसाही मिश्री की है पगाई जी।
टिकरी, खूर्मा, और बलुसाही मीठा सेव मिठाई जी।
मिठा खात सब लोग अकुलाने दिहींना बहुत तरकारी जी।
अलुआ, ओल, कदुआ, करइला, परवर की तरकारी जी।
तीता खात सब लोग अकुलाने षटरस की तैयारी जी।
आम अमोध तूंती और निम्बू मिश्री की है पगायी जी।
छप्पन भोग दशरथ नित्य जेवत इहां अधिक तैयारी जी।
चटनी खात दशरथ जीभ चाटत खाना चाहे भर थाली जी।

जेवन बैठे राम से लक्ष्मण दिहींना सखि सब गारी जी।
मैं तो से पुछीला राम पुहुप रस रउरा के देबों एक गारी जी।
तीन सो साठ मातृ गृह रउरा एक पुरुष बहु नारी जी।
कैसे निवहे धर्म पतिव्रत से वर्ष दिनन की है पारी जी।
इतना सुन उपरोहित बोले सुनहु जनकपुर की नारी जी।
परिचय लेहु राजा दशरथ जी से ले जाहु अपना अंटारी जी।
तुलसी दास प्रभु आश चरण की हरि के चरण बलिहारी जी।

२७१

जब शिव शंकर जेवन आये शोभा देखहु बरिआती जी।
हाथ जोड़ गिरिराज विनवे वस्त्र आजु उतारी जी।
भूषण बसन शिव पहिरत नांहीं नङ्गा भइले बर ठाढ़ जी।
कोइ मुख हीन कोइ मुख बहुत चार वचन त्रिपुरारी जी।
सोने के चौकी शिव बठत नांहीं मृग छाला आसन मारी जी।
सोने के थाली में जेवना परोसीला और तुम्मा भरल गंगा पानी जी।
छप्पन भोग गिरि राज बनवाये परोसन लागे भर थारी जी।
पांच मुख चहुँ ओर विराजे कंहवा रखूं मैं थारी जी।
सौ सौ मन से कम नहिं जेवत पेट मनो भण्डारी जी।
पर पकवान शिव के रुचत नांहीं भांग धतूर के अहारी जी।
भांग धतूर गिरिराज मंगावे हर्षि जेवे त्रिपुरारी जी।
अम्बिका देखि सखि मुसुकायी इ बर मिले बड़ भाग्य से जी।
धन्य गिरिराज धन्य तुहु मैना अइसन दुलह उतारी जी।

२७२

कृष्ण मुहे पुत्री के पुत्री ब्रज में कृष्ण जी को न्योता पठाई की हां जी।
रघुवंशी कुल प्रकाश महीप महीप मोहे प्रभु न्योतन आयी की हां जी।
गोप,ग्वाल धन शोभित माधो पिताम्बर फहरायी की हां जी।
वृन्दावन यमुना तट ऊपर कुंज भवन मन भायी की हां जी।
ले यमुना जल पांव पखरले दुति चरण फल पाये की हां जी।
रमल पतल आनि परोसल यमुना जल छिटवाये की हां जी।

सोने का किरखी दुति भात परोसल चन्द्र सूर्य ज्योति धाहल की हां जी
कोंहड़ा, कचरी, अदउरी, तिलौरी, पापड़, बजका बनाये की हां जी।
केरा, कंइता, कटहर, बड़हर, लउका की रइता लगाये की हां जी।
अगस्त का फूल तराये की हां जी।
अलुआ कन्दा ओल करैला सेमा सेमी तराये की हां जी।
सोने के नादी में दही जमावल अमृत जोरन लाये की हां जी।
सब रंग भोजन करहु निरंजन साग सम्पत्ति रस नांही की हां जी
सोने को झारी लिये राधा सुन्दरी दारन लिहीना अंचाइ की हां जी।
सोने के खरींका लिये राधे सुन्दरी दारन विनती हमारी की हां जी।
पान का वीड़ा लिये राधा सुन्दरी कृष्ण से मिनती हमारी की हां जी।

२७३

कैसे देऊं रे कन्हैया जी को गारी।
रउरी फुआ रे कुन्ती देइ रानी रे हरि
बिन व्याहही पुत्र जन्मयी रे हरि।
रउरी बहिनी सुभद्रा देइ रानी रे हरि
जिन्ह अर्जुन संग सिधारी रे हरी।
रउरी भौजी द्रौपदी देइ रानी रे हरि
जिन्ह पांच पुरुष एक रानी रे हरि।
रउरी माइ यशोदा देइ रानी रे हरि
जिन्ह कर दहिया मथत दिन जाइ रे हरि।
रउरे बाबा जे नन्द बाबा राजा रे हरि
जिन्ह कर कमरी ओढ़त दिन जाय रे हरि।
कैसे देऊं रे कन्हैया जी को गारी।

२७४

हां जी कोमल गात अयोध्या के राजा चंचल अति सुकुमार जी।
मोर मुकुट बैजन्त्री के माला पिताम्बर फहराये जी।
सोने के गेड़ुआ गंगाजल पानी पांव पखारे रघुराई जी।
पांव पखारी चरणोदक लिन्हे अत बड़ी भाग्य हमारी जी।

सोने की चौकी रत्न जड़ी है आसन लिजिये महाराजा जी।
सोने की थाली में जेवना परोसों मधु मेवा पकवान जी।
रूचि रूचि भोजन करहु निरंजन गावत रउरा के गारी जी।
घर घर से निकलो जनकपुर की रानी करि लेली सोरहो श्रृगार जी।
नाचत गावत ताल बजावत राम मिलन को धायी जी।
गारी के अमनख ज नि रउरा मानबी यह है जग ब्योहार जी।
तुलसीदास प्रभु आश चरण की हरि के चरण बलिहारी जी।

२७५

जब से कृष्ण चले मधुबन को घर आंगन ना सुहाइ जी।
मुरली बजावत धेनु चरावत वसत यमुन जी के तीर जी।
नाव ही नाव गोपिन सब आये कृष्ण गढ़ुर चढ़ि आये जी।
उतरि परे यमुना जी के तट पर द्वादश तिलक चढ़ाये जी।
सब सखिया मिलि देखन आयीं कैसे ललन बनि आये जी।
श्याम रूप कमल दल लोचन अंखिया है रतनारी जी
माथे मुकुट पिताम्बर शोभे गले बैजन्त्री के माला जी।
गिरि पर्वत से खम्भ मंगाये पानन झाड़ो छवाई जी।
डाढ़ डाढ़ के पतल मंगाये पतली लगी बहु भारी जी।
पांच पतल के पतरी बनाये सोने के खरीका लगाये जी।
सोने के गेडुआ गंगाजल पानी पद्मीनी पांव पखारी जी।
पांव पखारी चरणोदक लिन्हें अति बड़ भाग्य हमारी जी।
सोरही गाय के गोबर मंगायी मोतियन चौका पुरायी जी।
सोरही गाय के दूध मंगायो तुरत ही खीर बनायी जी।
जेवन बैठेले कुंअर कन्हैया परोसों कृष्ण जी के थारी जी।
दाल ही भात मैदा के रोटी उस पर घीव चभोरी जी।
परोसन लागेली राधे रूक्मीणी सखि सब पारे गारी की हां जी।
गारी के बदला हम गारी देवों गारी है प्रेम प्यारी जी।
जौ रउआ हइं तीन लोक के ठाकुर काहे के अइली ससुरारी जी।
बहिनी तुम्हारी रानी सुभद्रा अर्जुन संग सिधारी जी।

फुआ तुम्हारी कुन्ती रानी बिना ब्याह ही पुत्र जन्माई जी ।
भौजी तुम्हारी द्रौपदी देई रानी पांच पुरूष एक नारी जी ।
मौसी तुम्हारी यशोदा रानी मथुरा से आयी उढ़हारी जी ।
जेंइ जुगुती जब अंचवन किन्हा मांगेले पान सुपारी जी ।
गोड़ के घुघुर अधिक शोभे बिछीअन की झंझकारी जी ।
बांह पातरि बाजु बन्द शोभे कंगन की छबि न्यारी जी ।
गले के तिलड़ी अधिक बिराजे बेसर नांक बिराजे जी ।
नैना के काजर अधिक बिराजे टिकुली मांग बिराजे जी ।
दस अंगूरी दल मुंद्री शोभे मोतियन मांग भरायी जी ।
इतना पहिर जब राधे निकली मिलि गये कुंज बिहारी जी ।
हंसि हंसि पूछे मातु यशोदा कैसे ललन ससुरारी जी ।
साली से सरहज अधिक प्यारी सासु गंगाजल पानी जी ।
काइ मैं कहीं माता आपन ससुरारी जंहबो दिअवली तोहके गारी जी ।
गारी के अमनख जनि करु बेटा गारी है प्रेम प्यारी जी ।
मड़वा के गारी भंवरा गुंजरे बिछीअन की झनकारी जी ।
दस ही मास बेटा यही कोखि रखलों और दस दूध पिलायी जी ।
कबहूं ना कइल मोर बड़ाई जी ।
एक ही रात बेटा गईल ससुरारी सासु के इतना बड़ाई जी ।
तोहार किरिया अम्मा नन्द बाबा किरिया अबना जाइबो ससुरारीजी ।
अइसन बोली जनि बोलहु कृष्ण जी नित्य आवहु नित्य जाहु जी ।
सूरदास प्रभु आश चरण की हरी के चरण बलिहारी जी ।

२७६

उजे बिरी परल शिव कुस के ज वे मोहन के मन भावै रे ।
राधिका जेवनार बनाइओ रुकमिनी प्रसाद बनाइओ ।
उजे पात परल शिव पुरइन के जवे मोहन के मन भावै राधिका
जेवनार बनाइओ ।
उजे भात परल शिव चउनल के मोहन के मन भावै रे
रधिका जेवनार बनाइओ ।

उजे दाल परल शिव बुट के जवे मोहन के मन भावै रे रधिका
जेवनार बनाइश्रो।
उजे तरकारी परल शिव परोर के जवे मोहन के मन भावै रे।
उजे घीव परल शिव ढ़ार से जवे मोहन के मन भावै रे।
उजे दही परल शिव छेव से जवे मोहन के मन भावै रे।
रसिका जेवनार बनाइश्रो रुकमिनी प्रसाद बनाइश्रो।

२७७

जबहिं गोपाल चले मधुवन को,
घर आंगन न सोहाए जी।
मुरली बजावत धेनु चरावत, बसहिं जमुना जी के तीरे जी॥
नाव-नाव गोपी चढ़ी आइलि,
कृष्ण गरुड़ चढ़ि आये जी।
उतरे परे जमुना जी के तीरे, द्वादश तिलक चढ़ाए जी।
चारि पैर सुखपाल के फुदना, बिच में घुघर लगाये जी।
शीश मुकुट पैरहू पैजनिया, गरमें मोति के माला जी।
सुरभि गाय के गोबर मंगाइला, पातहि माड़ो छवाये जी।
कंचन कलश गगांजल पानी, गजमोति चौका पुराइ जी।
तखन कृष्ण पहिने आये, कंदन चौक बैठाई जी!
तेहि चढ़ि बैसेलें कृष्ण कन्हैया, चंवर डोले अधिकाइ जी॥
आरे जखन चलत हरि तजि ब्रज मथुरा,
रोपल लता एक आश
नित दिन नीर छीटी कयल कतेक नवपात।
किछु दिन बितलय फुल विकसित भेल
दिशि दिशि सौरभ छाय॥
फुलब लता जड़ि फुलक समय नहि
उपारब थिक।
दुत उधव कहु अबे ब्रज बनिता
ककर करद अवलंब।

कहथि रमानंद किछु दिन धीर धरु,
हरि पुनि बसत कदम्ब ॥

२७८

पुनि जेवनार भई बहु भांति हे ।
पठय जनक बोलाई बराती जी ।
परत पावड़े बसन अनूपा हे ।
सुतन समेत गमन किये भूप जी ।
सादर सब के पांव पखारे हे ।
यथा योग्य पीढ़न बैठारे हे ।
धोये जनक अवधपति चरण हे ।
शील सनेह जाहि नहिं वरणा हे ।
बहुरि रामपद पंकज धोये हे ।
जे हर हृदय कमल मह मोहे जी ।
आसन उचित सबहिं नृप दिन्हें ।
बोली पुरत पुकारि सब लिन्हें ।
साद लगे परन पनवारे हे ।
बसहा भीरल पलान हे, कर धैय लेल डोरी ।
पनथ चड़ल शिव जात हे ॥
व्याकुल भेलि गौरी सांझ परल वन कुंज हे ।
गणपति छ थिन कोरा ।
बातो न बुझे कुबोल हे, उत भंगी भोला ।
आक धतूर कर कपूर हे, गले भांगक झोरा
ओढ़न बाघ के छाल हे,
गले रुद्र की माला ॥
भनहिं विद्यापति सुनहु मनाईन,
यहे छथिन त्रीभुवन नाथ हे ।

२७६

जवहिं बिदा भय कृष्ण कन्हैया, लै वृषभानु दुलारी जो ।
जिन्ह २ कृष्ण के बदन निहारे, जन्म कोटि भल पाये जी ॥

तबहिं पहुंचे गोकुल माहिं, आरती उतारे महतारी जी।
तबहिं प्रभु सिंहासन बैठे, सखियां सब देखन आईं जी॥
हंसि २ पूछैं मातु यशोदा, कैसो ललन ससुरारी जी।
बोलन लागे कृष्ण गोपाला, सुनु मातु बचन हमारी जी॥
साली सरहज अधिक पेयारी, सासु गंगाजल पानी जी।
नवहिं मास पुत्र कोखि में राखल, कबहुँ न कइले बड़ाई जी।
तुम्हारी दोहाई नन्द बबा के अब न जाइब ससुरारी जी।
हमको तुमको नन्द बबा को देहिं सखि सब गारी जी॥
जुग २ जियो पुत तोरो ससुरारी, नित आवहु नित जावहु जी।
गारी के अनरस जनु करु पुतो, गारी है प्रेम पियारी जी॥
सब सखियन मिली मधुवन चलेलि, कृष्ण भये चौभारी जी।
डेग चार सब अपनी करके, अपने भवन सिधारी जी॥
सूरदास प्रभु धनि यह गोपिन, जिन्ह यह गारी गाई जी।
प्रम प्रीति से गारी गावत, परमानन्द सुख पाई जी॥

२८०

गाय के दूध की खीर बनाये,
परसि कंचन की थारी जी।
जेवन बैठे कृष्ण कन्हैया,
देति सखी सब गारी जी।
सब सखिया मिलि कोहबर ले गई,
नाम न जानो कैसी गारी जी।
माई के नाम जो कहिय यशोदा,
बहिन के नाम सुभद्रा जी।
नाम जो धरिये सखियन सब मिलि,
देहिं ललन जी के गारी जी॥
जब रे कन्हैया जी अंचवन कीन्हा,
पान देई बैठाये। जी॥
गाय के दूध को खीर बनाये,

पर कंचन के थारी जी।
जेवन बैठे कृष्ण कन्हैया,
देत सखी सब गारी जी।

२८१

दाल भात मैदा की रोटी तापर घीव चभोरी जी,
नाना भांति बनी तरकारी कृष्ण बड़े रस भोगी जी।
जेवन बैठे कृष्ण गोपाला देहीं सखी सब गारी जी,
माइ तुम्हारी जो कहिय यशोदा मथुरा से आइ उढ़ारी जी,
बाप तुम्हरे जो कहि नन्द जी घर घर मांगे दहारी जी,
बहिनी तुम्हारी कहिय सुभद्रा अर्जुन संग सिधारी जी।
फुफू तुम्हारी जो कहिय कुन्ती देई सोहै पांच भतारो जी,
मड़वा की गारी भंवरा बीच गुंजरे बिछियन की झंझकारी जी।
बाजूबन्द कंगन भले सोहे मोतियन मांग सम्भारो जी,
इतना पहिन के चलली राधा मिलि गये कुंज बिहारी जी।

२८२

जेवन बैठे कृष्ण कन्हैया देहिं सखी सब गारी जी॥
कैसे देउं गोपालहि गारी, दुइ बाप एक महतारी जी।
हमतो तीन लोक के ठाकुर, हमको कैसी गारी जी।
जो तुम तीनो लोक के ठाकुर, काहे आये ससुरारी जी॥
जो तुम गारी देहु सब सखिया, हम लेबों पटुका पसारी जी।
ऐसी गारी काहें को कहिये गारी है प्रेम पियारी जी।
ओरियन चारों को पत्तल पड़ि गये, रचना रही सुखकारी जी॥
रचना अधिक २ के पीढ़न, बैठारे सब भाई जी।

२८३

कंचन थार मृदुल सोहारी, परसी विविध मिठाई जी॥
रुचि अनुरुप भूप सुत जेंवत, पवन डोलावे सासु जी।
सारि हमारि है अनि गेवहारी, नित उठी पान लगावे जी।

सरहजि हमारी अति बेवहारी, नित उठि पलंग बिछावे जी।
भनहिं विद्यापति ठहकन गावे सुन्दरि फूल छिरिआवे जी।।

२८४

चरण कमल बलिहारी सखि, रघुनाथ कुमर के।
दसरथ सहित जनक नृप बैसल, सारद चरण पखारे।।
रतन जड़ित मनि कनक कटोरी षटरस भोग लगाये।
चारु भाय मिलि भोजन बैसला, होय परस्पर गारी।
तिन सौय साठि माय रघुवर के एक पुरुष केर नारी।
सत्य सुकृत कौन विधी निबहे बरष दिवस के पारी।।
तखन कहल दसरथ जी के पुरोहित, सुनहु जनकजी के नारी।
गारी कोउ ना देहु रामलला के बोलहु वचन सँभारी।।
नहिं मानत तो लेहु परीक्षा, राखहु अपनी अटारी।
तुलसीदास सो छबि रघुवर को, हरति गात निहारी।।

२८५

ऊंच निवास को प्रेम नगरिया तर यमुना बहिजाय जी।
पांच पात के पत्तल मंगावल सोने के खरीका लगाये जी।।
सोने के गेडुआ गंगाजल पानी वृषभान चरण पखारी जी।
चरण पखारि चरणोदक उन्हे अति बड़ भाग हमारी जी।।
सब सखिया मिली देखन आईं कइसन ललन बनि आई जी।
सुभग स्वरूप कमलदल दृह लोचन अंखिया दुई रतनारी जी।।
मांथे मुकुट पिताम्बर शोभे गले बैजन्त्री के माला जी।
अति सुकुमार यसोदानन्दन पम्दीनी चंवर डुलावे जी।।

अबटौनी

अबटौनी

२८६

कवन दादा कोल्हुआ गड़वले ए गड़वले,
कवन दादी परीछे ली तेल अहो रस अबटन।
बोलाइए दादा कवन दादा को सुख देखन को,
दाम खरचन को सो बेटा बइठले अबटन।
बोलाइए दादी कवन दादी को अबटन लावन को,
तेल लावन को सो बेटा बइठले अबटन।
दुलरुआ बइठले अबटन पनखउआ बइठले अबटन॥

२८७

पर्वत ऊपर तेलीया नारायण ए,
पेरी देहु तेलीया करुआ तेल।
दादा मोरा सरीसो उपराजे,
ए दादी मोरा तेलवा बेसाहे।
हमरा कवन दुलहा अंगवा के पातर,
ना सहे करुआ तेल ए ना सहे बाबू करुआ तेल।

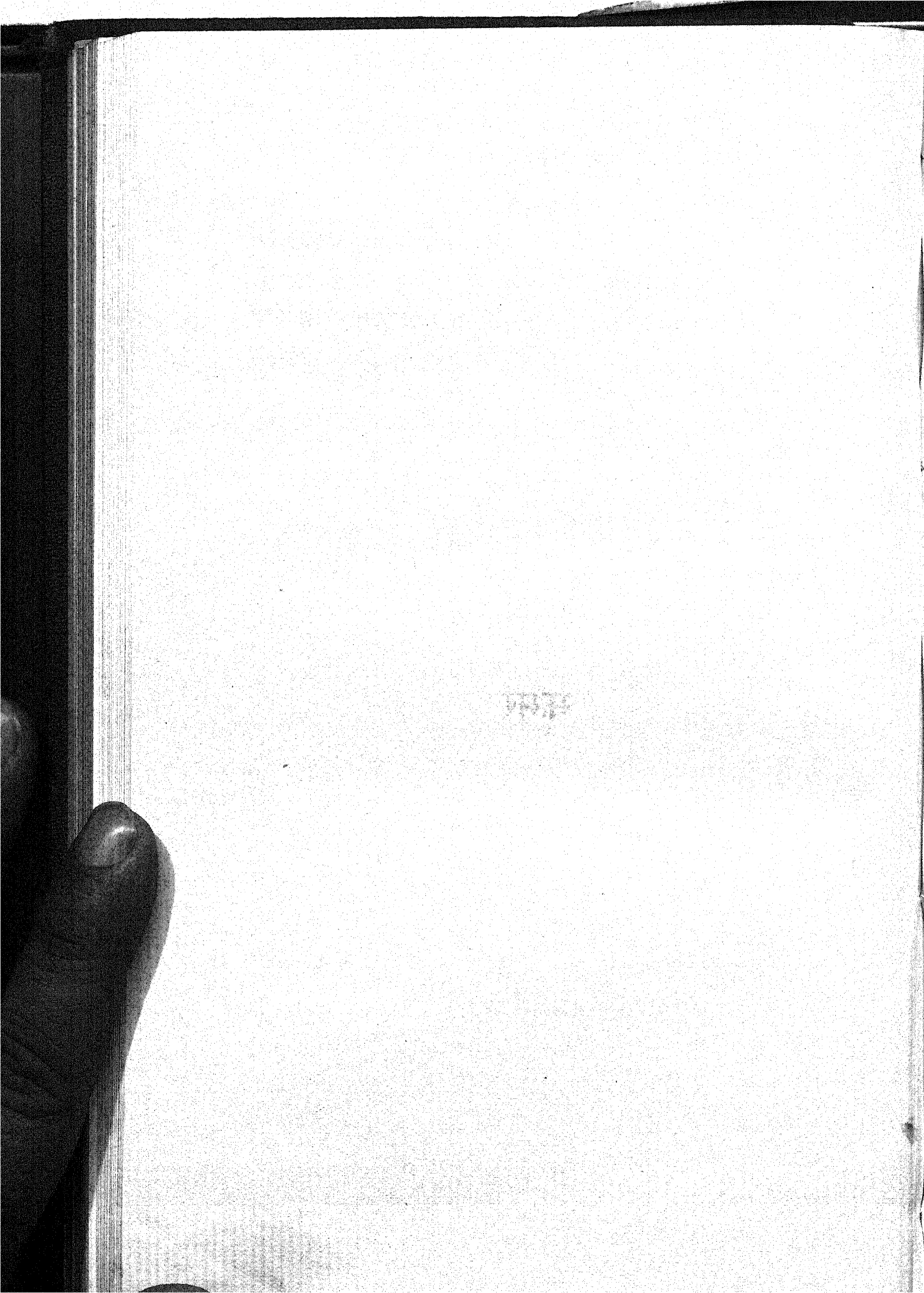
२८८

सोने क कटोरवा में केसर घोरीला, लाईला कवन दुलहा अंग हो।
बीप्र वेद भने ला मंगल गावे बृजनारी हो॥
अम्मा कवन देई चीरे मुख पोंछे ली, फुआ आंजेली दुनो आंख रे।
भाभी बेनीया डोलावेली मंगल गावे बृजनारी हो॥
चाची कवन देई चीरे मुख पोछेली, दीदी आंजेली दुनो आंख हो।
मामी बेनीया डोलावेली मंगल गावे बृजनारी हो॥
सोने के कटोरवा में केसर घोरीला, लाईला कवन दुलहा अंग हो॥
वीप्र बेद जे भने ले मंगल गावे बृजनारी हो।

२८६

राई सरसो के तेल अवरु फुलेल,
सो बेटा बईठल अबटन दुलरुआ बइठले अबटन।
लावे अम्मा सोहागीनी हाथे कंगना डोलहि नैना घुमाई,
दुलरुआ बईठल अबटन सो बेटा बईठले अबटन॥

झूमर



झूमर

२६०

कलकत्ता शहर बदनाम नएना ना माने हो।
अम्मा के भेजे लिख लिख पतीआ जोड़ू के भेजे सलाम।
कलकत्ता शहर बदनाम नएना ना माने हो।
अम्मा के भेजे पांच रुपैआ जोड़ू के पुरे पचास।
कलकत्ता शहर बदनाम नएना ना माने हो॥

२६१

सेज चढ़त मोर पाएल बाजे,
सासु ननद पही ठैआं ना सतावो सैयां।
अबहीं ऊमर लरकैयां ना सतावो सैयां।
धैर्य धरो रस होने दो बालम,
अपने परब तोरे पैआं ना सतावो सैयां।
अबही ऊमर कोमलइआ ना सतावो सैयां॥

२६२

ना हम गोरी ना हम शांवली दीआ लेके देख लो मेरे राजा।
ना हम लम्बी ना हम नाटी गज लेके नाप लो मेरो राजा॥

२६३

बारह बजे के करार सांवला ना आये।
सोने के थाली में जेवना परोसलों,
जेवना लिये हम कब से खड़ी सांवला ना आये।
बारह बजे के करार सांवला ना आये।
बारह बज गये, सोलह बज गये,
बज गये सारी राति सांवला ना आये।
बारह बजे के करार सांवला ना आये

२६४

रौला उतरे वोही बाग में रे।
कवना बहाने हम जाईब वोही बाग में रे।

कुल्ह फूल दे ले छितराई वोही बाग में रे।
कवना बहाने हम जाईब वोही बाग में रे।
पनेरीन बहाने जाईब वोही बाग में रे
कुल्ह पान देले छितराई वोही बाग में रे।
रौला उतरे वोही बाग में रे॥

२६५

मिसिया लगावे गोरी मिसिया।
मिसिया, लगाय मुसकाना पड़ी गोरी,
तुमको सजन घर जाना पड़ी प्यारी।
चोलीया पहिन गोरी चोलीया,
हाथ खोल के बन्द दिखाना पड़ी।
लहंगा पहिन गोरी लहंगा,
लहंगा पहिन के झुकना परी गोरी।
सेजीया लगाव गोरी सेजीया।
सेजीया लगा दुख सहना पड़ी।
प्यारी तुमको सजन घर जाना पड़ी।

२६६

मेरे राजा गुलावे के फूल मैं धनी चम्पा कली।
सोने के थाली में जेवन परोसों जेवना गुलावे के फूल।
मेरे राजा गुलावे के फूल मैं धनी चम्पा कली॥

२६७

डोरी डाल दो महल चल आवो रसीया।
अब रे रसीया दुअरवन आवे भूक रहे सरकारी कुत्ते।
डोरी डाल दो महल चल आवो रसीया।
अब रे रसीया अगनवन आवे काट रहे सरकारी बिछीआ।
डोरी डाल दो महल चल आवो रसीया।
अब रे रसीया सेजड़ीअन आवे काट रहे सरकारी चुटियाँ।
डोरी डाल दो महल चल आवो रसीया।

२६८

कोई बहींया पकड़ लिये जाए, ए धनीश्रा का करी हो।

थाना में जईहों दारोगा से कहीहों, इन्सपेक्टर से कहीहों समुझाय।

ए धनीया का करीहों कोई बहींया पकड़ लिये जाए।

चौकी में जईहों सीपाही से कहीहों, जमेदार से कहीहों समुझाय।

ए धनीया का करीहों कोई बहींया पकड़ लिये जाए।

कलक्टरी में जईहों, कलक्टर से कहीहों, मजीस्टर से कहीहों समुझाई।

ए धनीया का करीहों कोई बहींया पकड़ लिये जाए॥

२६६

बालू रेत पर बंगला छवाद विदेशी हो वालमा।

बंगला जब शोभे रे जब लाली पलंगीया होय रे। विदेशी०

लाली पलंगीया जब शोभे रे जब दूनो बेकतीश्रा होय रे। विदेशी०

दूनो बेकतीश्रा जब शोभे रे जब गोदी होरीलवा होय रे। विदेशी०

गोदे होरीलवा जब शोभे रे जब काशी में मुड़ना होय रे। विदेशी०

काशी में मुड़ना शोभे रे जब छोटकी ननदीश्रा होय रे। विदेशी०

छोटकी ननदीश्रा जब शोभे रे जब गांठी रुपैश्रा होय रे। विदेशी०

बालू रेत पर बंगला छवा दे विदेशी हो वालमा॥

३००

मोटर गाड़ी रे चलावे सारी रतियां।

सोने के थारी में जेवना परोसलों,।

जेई लेहु रे मोटर वाला रसीआ।
सोने के गेडुआ गंगाजल पानी,
पी लेहु रे मोटर वाला रसीआ॥

३०१

बिन रोशनी पलंगीया पर ना जईहों यार।
टिकवा तोरा खूब शोभे, है मोतीआ मजेदार।
भागलपूर से रंडी आवे गोरखपूर से यार।
विन रोशनी पलंगीया पर ना जईहों यार।

३०२

सोने की थरीया में जेवना परोसलों,
जेवना ना जेवे धनी रोई रोइ अंखियां लाल भई।
हमतो जनली गींरी हमके जेवईबू,
उलटा मनावन हमको पड़ी।
धनी रोई रोई अंखियां लाल भई॥

३०३

लहर मारे हो लहर मारे, जैसे गंगा में यमुना लहर मारे।
जैसे बजरीया से लाये हरदीया, तैसे कमरीया में छाये दरदिया।
लहर मारे हो लहर मारे जैसे गंगा में यमुना लहर मारे।
तोर मोर प्रीत जगत जाने जैसे गंगा में जमुना लहर मारे।
जैसे बजरीया से लाये धनींया, बनीया हरामी पीछे लागे।
जैसे गंगा में यमुना लहर मारे।

३०४

सोने की थारी में जेवना परोसलों।
जेवना ना जेवे लगावे मीसीआ।
दर्पन से गोरी लगावे मीसीआ।
सोने के गडुआ गंगाजल पानी,
पनीआ ना पीये लगावे मीसीया,
दर्पनवा से गोरी लगावे मीसीआ।

३०५

क्यों गहो मोरी बांह बांका ।
दो दो चुड़ी जैतुनिया शोभे, चुड़िया भर भर बांह । बांका ० ॥
अंगुली के धरत कलाई धरे, वालम फेरे कलीन पर हाथ ।
बांका० ॥
छोड़े को हो तो छोड़ दिये जाय, नाहीं त हो जईबों वदनाम ।
बांका० ॥

३०६

कलकत्ता तू जन जा राजा हमार दिल कैसे लगी ।
ओही कलकत्ता में रंडी बसतु हैं, मोजरा करिहें दिन राति ।
हमार दिल कैसे लगी० ।
ओही कलकत्ता में मलहोरीआ वसतु हैं, गजला लगैहें दिन रात ।
हमार दिल कैसे लगी० ।
ओही कलकत्ता में तमोलिया वसतु हैं , बीरवा लगैहें दिन राति
हमार दिल कैसे लगी० ।

टापा

टापा

३०७

सासु ननद दिन रात के बैरी,
उनको अलग किए जाना सजन तुम जाना विदेशवा जी।
हमको धीरज दिए जाना सजन जब जाना विदेशवा जी।
छोटका देवरवा दिन रात के प्यारा,
उसको भी साथ लिये जाना सजन जब जाना विदेशवा जी।
हमको धीरज दिये जाना सजन जब जाना विदेशवा जी।
छोटकी ननद दिन रात के प्यारी।
उसका गवन किये जाना सजन जब जाना विदेसवा जी।
हमको भी साथ लिये जाना सजन जब जाना विदेशवा जी॥

३०८

चम्पा की कलियाँ फूलही ना पवलों
भले जान तोड़ूगीं चम्पा की कलीयां।
चम्पा की कलियां तुरहीं ना पवलों,
भले जान फाट गई मेरी चदरीया।
उहां से गइलों दर्जी दुकनियां,
भले जान सी दो ना मेरी चदरीया।
कैसे के सीवों मैं तेरी चदरीया,
भले जान आवो ना मेरी सेजरीया।
कैसे के आऊँ मैं तेरी सेजड़ीया,
भले जान तोरा ले मोरा बोसनीयां

३०९

करैला ले चलो धीरे धीरे।
काला मरद संग ना सोवो, वदन पर काला जम जाता रे।
करैला ले चलो धीरे धीरे।
मोटा मरद के संग नाहीं सोवों, वदन पर बलगम आजाता रे।

करैला ले चलो धीरे धीरे।
गोरा मरद संग नाहीं सोवों, वदन पर गोराई आजाती रे।
करैला ले चलो धीरे धीरे।
पतला मरद संग हम बलु सोवों, वदन पर खुशबू आजाती रे।
करैला ले चलो धीरे धीरे॥

३१०

झक झोर मत प्यारे कमर पतली,
कमर पतली हो कमर पतली। झक०॥
अँगुरी पकड़ लिये गट्टा पकड़ लिये
छतिया धरत मोरा प्रान निकले। झक ०॥

सोहर

सोहर

३११

मन के दुःखित नन्द रानी त दर्दे ब्याकुल हो।
ललना खन रे बाहर खन भीतर खन गोज ओबर ए॥
दुअरा से अइले कौन बाबू, धनिया मुंहवा चितवेले ए।
सुन्दरी के मुंहवा चितवेले ए, ऐ सुन्दर काहे राउर ओठवा सुखइले
त काहे मन बेदील ए॥
लाज शर्म केरी बतिया, कहत लाज लागेला ए।
ऐ प्रभुजी उठत में देहिया घुरुमेला, होरीला के लक्षण ए॥

३१२

कहवां ही के तुहूं ग्वालिन कहंवाहीं दही वेचे हो।
ए ग्वालिन गले गज मुक्ता के हार त ओढ़ेलू पीताम्बर हो॥
मथुरा के हईं हम ग्वालिन गोखुला में दधी बेचे हो।
ए ग्वालिन गले गज मुक्ता के हार त ओढ़ेली पीताम्बर हो॥
दधीआ जे दीहली कन्हैया घरे अवरु कन्हैया घरे हो।
हे ललना बरबस बहीआं मोर ममोरे मटुकीआ सीर फोड़े हो॥
बोरहन देबे गइलों यशोदा घरे अवरु से यशोदा घरे हो।
ए यशोदा वरज ना अपना कन्हैया मटुकीआ सिर फोरेला हो॥
केतनो वरजलों वरज नाही माने कहलीआ नाहीं मानेला हो।
ए ग्वालिन सेनुरा के बन्हल सनेहीआ छोड़ित मोह लागेला हो॥
छोड़ देहु सिरवा के सेन्दुरवा नएनवा के काजल हो।
ए छोड़ि देहु दांतवा के बीरीआ कन्हैआ मोरा नाहीं जैहे हो॥
नाहीं छोड़वो दांतवा के मीशीआ नएनवा के काजल हो।
ए यशोदा नाहीं छोड़वो सिरवा के सेन्दुरवा मोहइवो तोरे
कान्धर हो॥

३१३

अंगना बहरइत चेरिया औरी लौंड़िया हो,
ए चेरिया झारी के जाजीम बिछाव सभे लोग बैठसु हो।

केहु के उठवले नाही उठबी बैठवले नाहीं बैठबी हो,
बहिनी तनी एक राम के देखाव, देखवी घरे जाइवी हो।
अइसन बोली जनि बोलहु बहिनी सुमित्रा रानी हो,
बहिनी बर्ष के राम होइहें त अंगना निकालबी हो।
सब लोग देखीन हो ॥
अइसन बोली जन बोलहु बहिनी कौशिल्या रानी हो,
बहिनी बारह बर्ष राम होइहें त बन के सिधारी जैइहें हो।
इतना बचन जब सुनली कौशिल्या रानी हो,
ललना गोड़े मुड़ी ताने ली चदरिया सुतेली दुख निंदरी हो।
हंसि हंसि बोले राजा दशरथ सुनहु कौशिल्या रानी हो,
रानी छुटेला बझीनीया के नाम बलइआ राम बने जइहें हो।

३१४

माघ के बहुआ असावती, मर्म नांही जानेली हो।
हे ललना जब रे कातिक निअरइले, बहुआ अलसाइली हो।
आवहु धनिया सुलक्षणी, मोर जड़ रोपनी हो।
हे धनिया कौन बरण केरा साध, से होरे कुछ मांगहु हो।
पांच पदार्थ मोरा घरे, एकहु ना मन भावे हो।
हे राजा मोरा रे हबसवा के साध, हबस लेइ आवहु हो।
ना मोरा बाबा के जोतल, नांही जे बोअल हो।
हे ललना अइसन, नारी गवांर त हावुस मांगेली हो।
अगिला ही घोड़वा कौन भैया, पछीला कौन भैया हो।
हे ललना आलर बछेड़वा कौन लाल हावुस चोरावले हो।
एक मुठा काटेले दूसर मूठा, औरी तीसर मूठा हो।
ललना आइ परेला रखवारवा हावुस लागी बांधेला हो।
केकर हउव तुहु नाती, त केकर बेटा हउव हो।
हे ललना कौनी रनिअवा के कंत त हावुस चोरावेले हो।
हावूस लेइ के अइले, आंगन बीच ठाढ़ भइले हो।
रानी झारी लेइय मुंह धोव त हावूस भोजनियां कर हो।

३१५

सुतल राजा उठ बैठले मने मने झंखेले हो।
ललना हमरो समय ब्यतीत भइले संतती नहीं भइलन हो।
मोरा पिछुअरवा तू विप्र बेगही चली आवहु हो।
हे बिप्र सोची देहु दिन सुदिनवां संतती कहिया होखीहन हो।
पूर्व के चन्दवा पछीम जैहे आदित छपित होखीहें हो।
राजा रकटी रकटी जिअरा जइहें संतत नांही होखीहन हो।
मोरा पिछुअरवा साइस भैया बेगही चली आवहु हो।
हे भैया घोड़ा पीठी कसना लहसिया त गुरू जी द्वारे जइबों हो।
एक बने गइलों दूसर बने, और तीसर बने हो।
हे ललना जाइ परेले ओही नगर जहां रे बसे गुरुजी हो।
अंगना बहरइत चेरिया त हे चेरिया गुरुजी को देहुना बुलायी
त गुरुजी से भेंट करीबो हो।
क्या तोरा अन्न धन थोड़ भइले लक्ष्मी बिमुख भइली हो।
हे राजा कौन संकट पड़ेला सुतल जगाइला हो।
नांहीं मोरा अन्न धन थोड़ भइले लक्ष्मी बिमुख भइली हो।
हे गुरूजी हमरो त समय ब्यतीत भइले संतती नांही पाइला हो।
झोरी में से कढ़लन जड़िया राजा ही हाथे दिहलन हो।
हे राजा जे तोहरी प्रान प्यारी सेकरा के पिआवहु हो।
थोड़े थोड़े पीअली कौशिल्या रानी थोड़े थोड़े सुमित्रा रानी हो।
हे राजा सिलिया धोइ पीयेली कैकई रानी तिनों रानी
गर्भसेनी हो।
कौशिल्या के भइले राजा रामचन्द्र सुमित्रा के लक्ष्मण हो।
हे ललना कैकई के भरत भुआल तीनों घरे सोहर हो।
सउरी से बोलेली कौशिल्या रानी सुनीं राजा दशरथ हो।
हे राजा सेर जोखि सोनवा लुटाव पसेरी जोखि मोतिया हो।
हे राजा सउसे अयोध्या लुटाइबो त राम जन्म ले ले हो।
सउरी से बोलेली कैकई रानी सुनहु राजा दशरथ हो।

हे राजा जानि बुझी अवध लुटाइवी आखीर राम बने जइहें हो।
इतना बचन राजा सुनले सुनहीं नहीं पावेले हो गोड़े मुड़े तानेले
चदरिया सोवेले दुख निद्रा हो।
हंसी २ बोलेली कौशिल्या रानी सुनीं राजा दशरथ हो।
हे राजा छुटेला बझीनीआं के नाम बलइया राम बने जइहें हो।

३१६

घर के कठिया भइले सकचून उठहू ननदो घरे जाऊ हो।
कहां बाड़े भइआ हमार भेंटी घर जाइवी हो।
भैया तोहार गइले कचहरियां, औरी दरबरिया हो।
भैया के जनमल भतीजवा भेंटी जाई घर जाइवी हो।
अमवा के साध ईमिलिया बलइया मोरे चीखे जा।
ये ललना भैया के जनमल भतीजवा बलइया जाव भेटन हो।

३१७

सरग उड़ेले खेम करनी चीरईआहु ए चिरई तोहरी बोली
सुठनुन त देवता आनन्देले हो।
गया में आनन्देले गजाधर, प्रयाग बेनी माधव हो।
चीरई मथुरा आनन्दले कन्हैया देवकी जी के बालक हो।
गया में नेवतु गजाधर प्रयाग बेनी माधो हो।
ए चीरई मथुरा में नेवतु कन्हैया यशोदा जी के बालक हो॥
गया से अइले गजाधर प्रयाग बेनी माधव हो।
ए चीरई मथुरा से अइले कन्हैआ देवकी जी के बालक हो॥
मचीआ बैठल तु यशोदा रानी कृष्ण एक यश कीया हो।
अम्मा नाथे हैं काली वो नाग बोही रे जल भीतर हो॥
मचीया बैठली कवन देई कवन बाबू यश कीया हो॥
अम्मा जीते हैं लाल झण्डुलवा वोही रे गजवोवर हो॥

३१८

काजर की कजरवटी काजर भल पारीला हो।
करीला होरीलवा की आंखी बधइया लेबो कंगन हो।

बलु हम मांग मुड़इबो केदली बन जाइवी हो।
ए ललना भइल होरीलवा मैं तजबो कंगन नांही देइबी हो।
कान के देवो काने तरीवन औरी नाक वेसर हो।
ए ललना कंगना में हीरा जड़ावल, कंगन नांही देइवी हो।
सभवा बैठल तुहु ससुर बहु से अरज करे हो।
ए बहुआ देइ घाल हाथ के कंगनवा, धिया ससुरइतीनो हो।
बलु हम मांग मुड़ाइबि केदली बने जाइवि हो।
ए ललना भइल होरीला हम तेजवो कंगन नांही देइवी हो।
घोड़वा चड़ल तू कौन लाल धनी से अरज करे हो।
धनी देई घाल हाथे के कंगनवा बहिनी ससुरइतीनो हो।
देबी मैं कान के तरीवन नाक के बेसर हो।
ए राजा एक नांही देवहु कंगनवा कंगन मोरा हीरा के हो।
चुप रहु चुप रहु बहीनी, जनी रोयी मरहु हो।
हम करबो दूसर ब्याह कंगन हम देइबी हो।
झांपी में से कढ़ली कंगनवा, डेहरी फेंकी दिहली हो।
ए राजा अब हम देवहुं कंगनवा त जनी रउआ रूसहु हो।
ल मोरी ननदो कंगनवा, सवती बनि के रहहु हो।
हे ननद कंगना पहिर दुरी जाहु बहुरी जनी आवहु हो।

३१९

स्वंग पताले की चिल्हीया, झरोखवनी बोलेले हो।
हे चिल्हीया पसवा खेलत राजा होखीहें महलिया बुलावहु हो।
पसवा खेलत तुहुँ बीरन, औरी से बीरन हो।
हे भैया तोरी धनी बेदने ब्याकुल महलिया बुलाहट हो।
पसवा लड़वलन बर तर औरू बबूर तर हो।
हे राजा झपसी पैठेले गजओवरी, कहहु धनी कुशल हो।
डांड़ मोरा बथेला गहागही केश मोरा भुंइया लोटे हो।
हे राजा धरती भइली अँधियार, कौन कहीं कुशल हो।
मचिया बैठली तुहु अम्मा तू हऊ सिर साहेब हो।

हे अम्मा आज मोरी धनी अलसइलो महलिया दिअरा केइ बारे हो।

बबुआ हो तू हव बबुआ हव बबुआ वंश रोपन हो।

हे बबुआ ओही तुरहिनिया के बोल कलेज मोरा सालेला हो।

अम्मा हो तू त अम्मा तू हऊ सिर साहेब हो।

हे अम्मा गोदिया में लीह तू नतिया त बतिया बिसरि जइहें हो।

फांड़ भरी लेंली तिल चाउर आदित मनावेली हो।

हे आदित हम पर होखींना दयाल गठरिया खुली भुंइया लोटे हो।

आदित मनावही ना पवलो आदित भइले प्रसन्न हो।

हे ललना बाजे लागल अनद बधाव महलिया उठे सोहर हो।

३२०

यशोदा के जन्मे ललना हो चल चल झुलायी पलना हो।

कोई सखि गावे कोइ सखि बजावे कोइ झुलावे रस पालना हो।

चार सखि गावे चार बजावे अनेक झुलावे रस पालना हो।

३२१

वायु बहेले पुरबइया त सिकियो ना डोलेले हो।

हे राजा अंगने में डासी सुख सेजिया हमही रउरा निंद सोइबी हो

बोलिया त ए राजा बोलिला बोलत लजाइला हो।

हे राजा बगिया तू काहे ना लगवल टिकोरवा हम चिखतु हो।

बोलिया त ए रानी बोलिला बोलत लजाइला हो।

हे रानी बेटवा तू काहें ना बिअइलू सोहर हम सुनतहु हो।

अमवा त हउए मानुस फल औरी मनुस फल हो।

हे राजा पुतवा त हउए दीनानाथ के गोसइयां दुख बुझसु हो।

अंगना बहरइत चेरिया त औरी लौड़िआहु हो।

हे चेरिया आपन बालक मोंहि देहु मोरा राजा सुनीहें सोहर हो।

जऊ राजा मारसु गरीआवसु देशवा से निकालसु हो।

हे रानी बाड़ा दुखित के होरीलवा, होरीलवा नाहीं देइबी हो ।
राम रसोइयां तुहु गोतिनी सर्व गुण आगरी हो ।
हे गोतिनी आपन बालक मोहिं देहु मोरा राजा सुनीहे सोहर हो ।
नुनवा उधार तेल पांइच बिधी व्योहार चले हो ।
हे गोतिनी कोखिया के कैसन उधार नउजी सुनहि सोहर हो ।
हंकड़हु गांव के रा बिप्र बेगही चलि आवहु हो ।
हे विप्र मोरा आगे पोथिया बिचार मोरा राजा सुनी हे सोहर हो ।
पूर्ब के चन्दवा पश्चीम जैहें सूर्य छपित होखोहे हो ।
हे रानो लजचो लजवी जिअरा रही हे सोहरवा नांहीं सुनोहनी हो ।
फांड़े बांधी लेली तिल चाउर आदित मनाअेलो हो ।
हे आदित हम पर होखोना दयाल मोरा मेहना छुड़ावहु हो ।
आदित मनवहीना पवलो आदित भइले प्रसन्न हो ।
ललना बाजे लागल अनद बधाव महल उठे सोहर हो ।
अंगना बहरइत चेरिया त औरी लौंड़ियाहु हो ।
हे चेरिया आंगन में डासहु पलंगिया मोरा राजा सुनी हें सोहर हो ।
हंकड़हु गांव केरा बिप्र वेगही चली आवहु हो ।
विप्र राउर वोलिया सालेला कलेजवा कैसे के गोड़वा लागवी हो ।

३२२

छोटही मुट के पिपरिया देखत बड़ा सुन्दर हो ।
हे सासु छोट उमर के बलमुआ देखत बाड़ा सुन्दर हो ।
हे सासु कोठवा में खिड़ीकी कटइतों जेवत राजा देखतऊ हो ।
सासु बोलिया बोलही के रहली ननद उठ वोलेली हो ।
अम्मा ऐसी रंगीली भौजइया जेवत भैया देखेले हो ।
मचिआँ बैठली तुहु सासु सर्ब गुण आगरी हो ।
हे सासु ननद के भेजो ना ससुरवा पतीत मोरा खोअेली हो ।
झांपी में से कढ़लो लुगरिया आंगन वीच फेंकेलो हो ।
हे सासु ननद के भेजोना ससुरवा पतीत मोरा खोवेली हो ।
वावा के करबों कुटवनी त अम्मा के पिसवनीहु हो ।

हे अम्मा भौजी के करबो रसोइया चेरिया बन के रहबो हो ।
ससुरा के करबों कुटवनी त भसुरा के पिसवनीहु हो ।
हे अम्मा देवरा के करबों रसोइया रानी बन के रहबी हो ।

३२३

सुतल रहलों अटरियाँ एक चित सरिआवउ हो ।
हे ललना भुरु भुरु बहेला बेयरिया, निन्दीओ नहीं आवेला हो ॥
डाड़ मोरा बथेला गहागही, ओदर चिल्हीकी मारे हो ।
ललना लम्वी लम्वी केश मोरा भुंइया लोटे, ओठवा ले पसिनवा चले हो ॥
एही अवसरवा पिया के पइतहु हो, जुल्फीआ धरी उखरतहु हो ।
ए ललना दांतवे हबकी जिअरा लिहीतो, दर्दवा आधा बांटसु हो ॥
घरी रात गइली पहर राती, औरी पिछल राती हो ।
ललना आधे राती होरीला हो जन्मले, महलिया उठे सोहर हो ॥
सासु जे उठलीनी गवइत, ननद बजवइत हो ।
ललना गोतीनो उठेलो विषमादल, गोतिअवा घरे सोहर हो ॥
सासु के डसबों मचीअवा, त ननद चटइयाहु हो ।
ललना गोतिनी के डासबो पलंगिया, हमही गोतिनी पांइच हो ॥
सासु के जतबोरे करूआ तेल, ननद तीसो तेल हो ।
ललना गोतिनो के जतबो फुलेल तेल, हमही गोतिनो पांइच हो ॥
सासु लुटावेली मोहरिया ननद रुपैयाहु हो ।
हे ललना गोतिनी लुटावे धन कोदइ त लाजे मैं मरी गइलो हो ।
सासु के रखवों रे बरीस दिन, ननदो रे छवही मास हो ।
हे ललना गोतिनी रहसु चाहे जासु, त अब जीव टुटेला हो ॥

३२४

वरीसहु ए मेघवा वरीसहु हो ।
हो मोरे मेघवा नान्हे के रे मीलतुआ वलमुआरे कहां भीगल होईहन हो ॥
झमकी के चढ़लीं अटारीया त पिया के सेजड़ीआउ हो ।

जैसे भइलों खीड़कीन ठाढ़ त राजा फुलवरीया रे मालीनीया संगे विहसेले हो ।
अँगना बहरईत चेरीआ त सुनहु वचन मोरा हो ।
ए चेरीआ मलोनी के पकड़ी ले आवहु त रनीआ बोलावेलो हो ॥
उहवां से चेरीआ उठी गईली फुलवरीया बीचे ठाढ़ भईली ।
मालीन तोहरा के पड़ेला हुँकार रानी बोलावेली हो ॥
उइवां से मालीनि उठी गइली ए अगनवा बीचे ठाढ़ भइलो हो ।
हो मोरी रानी काहें के परेला हुँकार त काहें के बोलावेलु हो !
मैं तो से पुछीला मालीनि बगीआ के मालीन हो ।
मालीन कईसे कईसे राजा मोर भोरवलो कवन रंग राखेलु हो ॥

३२५

कहंवा के एक नाएक हो ललना, कइवां के जगलो पतुरीआ भोरवली मोर नाएक हो ।
चोट्ठीया जे लिखले कवन बावा, ईहो चीट्ठीया बाबु हाथे हो ।
बाबु छोड़ी देहु जगलीं पतुरीआ धरमवा मोर राखहु हो ।
छुटी जइहें भाई और मतरीआ जंगलीआ नाहीं छुटीहनी हो,
बाबा जगली के होइहे नन्द लाल त देखत सोहावन हो ।

३२६

गोड़े मुड़े तानेले चदरिया, सोवेले गज ओबर हो ।
प्रभु अम्मा के दिहीना बुलायी, त दर्दहीं व्याकुल हो ।
हमरे बुलवले अम्मा नहीं अइहें, हम ना बुलाइबी हो ।
ए धनिया तोहरो जे बोलिया बिरहिया, त अम्मा के करेज साले हो ।
मचियाँ बैठल तुहुँ अम्मा, सर्व गुण आगरी हो ।
अम्मा मोरी बहु दर्दहिं ब्याकुल, तोहके बुलावेली हो ।
सावन के सवनइया त भादो केरा बुन्द पड़े हो,
ए बबुआ आंगन भइ गइले किचका, तहम नांहीं जाइबी हो ।
ओढ़ी लेहु साला दुशाला उहो,
ए अम्मा चढ़िलेहु हमरो हि कांधे, त धनियाँ ब्याकुल हो ।

एक गोड़ दिहलों मैं भीतर, दुसरे ही बाहर हो ।
ए प्रभु जी अम्मा के दिहीना भगायी, त रामा मोरे सांझे भइले हो ।
भल कइलू ए बहुआ भल कइलु बेटवा बिअइलू
ए बहुआ सुतल नगर जगवलू मुदइया नांही सोवेला हो ।

३२७

कौना मासे गंगा बढ़ी अइली सेवरवा दही गइलन हो ।
ललना कौना मासे हरी मोर अइहे कहबी दुख आपन हो ।
सावन मासे गंगा बढ़ी अइहें सेवरवा दही जइहेंउ हो ।
ए ललना अगहन मासे हरी मोरा अइहें कहब दुख आपन हो ।
बारहो बर्ष पर हरी मोरा अइले आंगन बीच सोयी गइलेउ हो ।
ललना सेजिया बैठल मूर्गा बोलेला बिहान होइ गइलन हो ।
ललना बारहो वर्ष के सनेहिया जुटही नाहीं पवलीउ हो ।
जोरही नांही पवली बिहान होइ गइल हो ।
एही अवसर मूर्गा पइतीं त पर पंखा तोड़ीतीउ हो ।
डैना धरी ममोर दोहीती मुरुगा जान मरती उहो ।
ललना सेजिया बैठल मुर्गा बोले बिहान होइ गइल हो ।
काहे के पर पंखा तोड़बू डैना धरी ममोरबू हो ।
ललना रामचन्द्र केरा मूर्गवा आधी रात बोलेला
बिहान होइ गइल हो ।

३२८

माघही मास के मलामल जडइआ मोरा लागेला हो ।
राजा अपनी रजईआ मोही ओढ़ाव जड़ईआ मोही लागेला हो ॥
रजईआ त हउए मोरा बाबा के अवरू मोरा भैआ के हो ।
रानी तोहरो वो हउवे हमार देहीआँ छपकी आकर सोरह हो ॥
हमरा नैहर सोननी केरा मोतीअन ओरी चुबे हो ।
राजा सातही भैआ के बहीनीआ रजईआ नाहीं पाईला हो ।
तोहरा जे नइहरवा माटीअ के फुसवनी ओरी चुवे हो ।
रानी सातो भइआ घसगढ़वा रजईआ कहां पावेलु हो ॥

मोरा पीछुअरवाँ हजमवा वेगे चली आवहु हो ।
भईआ हाली वेग जाहु नैहरव रजईआ वेग आनहु हो ॥
बाबा से खबरी जनईह त भईआ से अरज करीह हो ।
भईआ सात भैआ केरी वहीनी रजईआ नाहीं पाईला हो ॥
आगा आगा से आवेला रजईआ त पाछे सोठउराउ हो।
राजा ताहो पाछे आवे वीरन भईआ त देखत सोहावन हो॥
अंगना वहरईत चेरीआ त औरी लउड़ीआ हु हो ।
चेरीआ राजा आगे खबरो जनाव रजईआ अब ओढ़सु हो ॥
हमरो जे नइहरा माटीआ केरा फुसवनी वोरी चुवे हो ।
राजा सातो भइआ हवे घसगढ़वा रजईआ कत आवेला हो ॥
तोहरो जे नइहरा सोनवन मोतीअन केरा वोरी चुवे हो ।
रनीआँ सातो भईआ हवे सीर साहेब रजईआ भल आवेला) हो ॥

३२६

कोठवा उठवले राजा दशरथ अवरू राजा दशरथ हो ।
ए राजा विना रे वलारेजवा के कोठवा त मोरा नाहीं भावेला हो ॥
पोखरा खनावे राजा दशरथ होउजे राजा दशरथ हो ।
ए राजा विना रे मन्दिलवा के पोखरा त मोरा नाहीं भावेला हो ॥
बगीया लगवले राजा दशरथ हो ए राजा दशरथ हो ।
राजा विना रे कोयल के बगीया हो त मोरा नाहीं भावेला हो।
सेजीआ डसवले राजा दशरथ हो अरे राजा दशरथ हो ।
ए राजा विना रे बालकवा के सेजीया त मोरा नाहीं भावेला हो ।

३३०

एक त मैं पान अईसन पातर फुलवा अईसन सुन्दर हो।
ए ललना पीआ मोरा जाले मधुवनवा मालीनि सगें वींहसे ले हो ॥
मीलहु सखीआ सलेहर अवरु सलेहर हो ।
ए सखिया मीलीजुली चलु पिया मन्दिल त पिया के मन्दिल देखे हो।
एक वने गईली दुसरे बने अवरु तीअरे वने हो।

ए ललना झलकेला पीआ के मन्दीलवा त मालिन सगें विहँसे ले हो ।
अरे अरे मालीन विटुउवा सरबे-गुन आगर हो ।
ए मालिनी कईसे कईसे रजवा भोरवलु कवन रसे लावेलु हो ॥
पानवाँ के सेजीआ डसवलोंह फुलवा छीतरवलीह हो ।
ए सुन्दर सारी रात वेनीआ डोलवली नयन फेर राखेला हो ॥

३३१

आठ बर्ष के उमिरिया त नवें गवन गइलो हो ।
बहिनि बारह बर्ष के उमिरिया त सैंया परदेश गइले हो ।
क हि गइलें कोठवा उठवइह त छप्पर छवइहउ हो ।
धनी गोदीआ बालक जन्मइइ तबहीं हम आइबी हो ।
इतना बचन सुनि रनियाँ आंगन बीच ठाढ़ भइली हो ।
बहिनी दुअरे से अइले लहुरा देवर त काहे भाजी धुमील हो ।
देवर हो मोरा देवर सुनहु बिपत्ति मोरी हो ।
देवर राउर भैया देइ गइले भार ओही मन बेदील हो ।
कही गइले कोठवा उठइह त छप्पर छवावहु हो ।
धनी गोदिया बालक जन्मइह तबही हम आइबी हो ।
भौजी हो तू त भौजी तुहुँ सुलच्छणि हो ।
भौजी धरहु पतुरिया के भेष त भैया लगे चलि जाहु हो ।
आठ ही दिन भौजी रहीह त नवे विदइया मंगीह हो ।
भौजी साठ मोहर तुहु तेजीह त अँगूठी के चीन्हा मांगीह ।
आठही दिन भौजी रहली त नवें विदइया मंगली हो ।
भौजी साठ मोहर के त तेजली अंगूठी के जे चिन्ह लेली हो ।
सबरे सभा जब बैठेला साहेब बतिआवेले हो ।
भैया अस बौरहीया पतुरिया अंगुठो के चिन्ह मांगे हो ।
बारहो बर्ष पर लौटे आंगन बीच ठाढ़ भइले हो ।
धनी केकर बालक लिहलू गोद हम के बतावहु हो ।
हाथ में से कढ़ली अंगूठीया आंगन बीच फेंकेली हो ।
साहेब चिन्ही लेहु अपनी अंगूठीया लच्छण मोहि लावहु हो ।

३३२

हरी मोरे अइले कलकतवा से औरू दरभंगवा से हो।
ललना लेइ अइले प्रेम चुनरिया त धनी के मनाईवी हो।
मोरा पिछुअरवा बढ़इआ बेगही चली आवहु हो।
ए ललना गढ़ि देहु सांकर खटोलवा त दुनों प्रानी सोइवी हो।
एक ओरी सुतेली सुन्दरी धनी एक ओर विदेशी छैला हो।
ए ललना बंहिया लफावे परदेशी छैला सुन्दरी धनी रूसी
गइली हो।
ए ललना मुंहवा में लवलनी पान त औरू गुलाबहु रे।
ए ललना हंसी के लगावले गले बहिया त सुन्दरि धनी मानी
गइली हो।
चिट्ठीया जे लिखेली सुन्दरी धनी देहुँ जे बिदेशी छैला ए।
ए ललना आजु मोरा बाबु केरी छठिया घरेहु वलि आवसु रे।
कहंवा से कपड़ा मंगाइबी कंहवा से दर्जीहु रे।
ए ललना बेंवती बेंवती कुरता सिआइबी त बाबू पहिराइवी रे।
कंहवा से सोनवा मंगाइवी कंहवा से सोनरा उरे।
ए ललना ठोकी ठोकी घुघुरू लगाइबी त बाबू पहिनाइबी रे।
ठुमुकि ठुमुकी बाबू चलीहें त दोनों प्राणी देखबी रे।

३३३

सोरही गैया के दुधवा त खीरवा बनाइला हो।
हे ललना आजु के जेवना विष भइले त बलमुआ रूसी गइले
त राजा रूसि गइले हो।
पार पड़ोसिन गोतिनी तुहूं मोरा बहिनीआ लगबू हो।
हे गोतिनी आपन सलहिया मोहि देहु त बलमुआ देखी अइतों
राजा देखी अइतो हो।
मथवा के लेहु छितनियां त हथवा के बढ़नियाहु हो।
हे गोतिनी हेलीनी के भेष चलिजाहु राजा के देखी आवहु हो।
पहीले बहरीह हथसरवा त घोड़ा घोड़सरवाहु हो।

हे गोतिनी तब रे बहरीह राज बैठक राजा देखी अइह
बलमुआ देखी अइहहु हे।
कांख तरे लिहली छितनियां त हाथे बढ़नियाहु हो।
आ हेलीनी के भेष चली गइली त राजा देखे गइली बलमुआ
देखे गइली हो।
पहीले बहरीली हथीसरवा आहो दुसरे घोड़सरवाहु हो।
आहे हेलीनी तब रे बहरली राजा बैठक राजा मुसुकइलन
बलमुआ मुसुकइलन हो।
तुहुँ त हव रजवा मुलकवा के मालीक हो हे राजा हम
अपराधी हेलीनीया त काहे मुसुकइलहु हो।
जीरवा अइसन तोर फुफुतो दिउलिया अइसन मंगियाहु हो
हे हेलीनी पातर तोर कमरिया उहेरे देखि मुसुकालों हो।

३३४

गोरी बिटिउआ अंग पातरी केवड़िया धइले ठुनुकेली हो।
ए ललना इतना दर्द मोरा अवहेला केहु नाहीं जागेला हो।
ए ललना जागे मोरा बाबा के री चेरिया त उठी दिअरा
बरावेली हो।
भुलु मैं ए धनी भुलु त हमें ना जगावेल हो।
ए धनी हो जगती तो मइआ के जगइतहु हो बहिनिया के
पुकारतहु हो।
काइरे करीहें रउरी मइया त औरी बहिनियाहु हो।
ए पिया हो जेकर दरद सेहो अगवेला खेलावे के तैयार
होइहें हो।

३३५

जोड़वा सवारो दरजी पुता घोड़वा सइस पुता हो।
धनीआ मोजवन घुघुरु लगाव त हम परदेशे जइबों हो॥
जब हम रहलीं वारी भोरी तवना विदेशे गईले हो।
राजा जब हम रहलीं गरभ से त रउरा विदेशे जाईला हो।

बोलीया त ए धनी बोले लु हमे जुड़वावेलु हो।
धनीआ कवन बरन केरा साध तो मोही समझावहु हो।
सारा पदारथ मोरा घरे एकहुना भावेउ हो।
राजा चिल्हवा मछरीआ के साध त मोहीं के अनावहु हो॥
एक जाल लवले दुसर जाल औरु तीसर जाल हो।
राजा बाझी गईले चल्हवा मछरीआ तो मोरा रनीया के भोजन हो ॥
सुतल रानीआ जगवलन जांघे बइठवलन हो।
रानीआ आनी कलश मुंह धोवहु मछरीआ करु भोजन हो॥
अन्ह करु अन्ह करु माछर मोरा नाहीं भावेउ हो।
राजा मरलों पजरीआ के पीरा त डगरीन बुलावहु हो॥
आधी रात गईली पहर रात होरीला जनम लेले हो।
ललना बाजे लागल अनदे वधाव महलीआ उठे सोहर हो॥

३३६

प्रथम गणेश पद नन्दन देवता मनाइला हो।
ललना जव हमरा होखे नन्दलाल त मंगल गाइबी हो॥
दुसर मास जब लागे त चित्त फरिआइल हो।
ललना पान के बीड़ा नांही भावेला सोवल भावेला हो।
तीसर मास जब आइल सासु से मिनती करे हो।
ललना हम से रसोइया नांही होखी ननद दुख दारूण हो॥
चौथ मास जब लागेला ननदो हंसी बोलेली हो।
ललना हम लेबों हाथ के कंगनवा होरीलवा खेलाइबी हो॥
पांच ही मास जब लागेला स्वामी से अरज करे हो।
ललना सुतबो ना सेजिया अब मैं त बेनिया डुलावहु हो॥
छव ही मास जब लागेला सासु निरेखेली हो।
ललना अगीला पैर केने परेला होरीला के लक्षण हो।
सात ही मास जब लागेला स्वामी से अरज करे हो।
ललना गर्मी त सहलो न जाय त बेनिया डोलावहु हो॥

आठ ही मास जब लागेला आठो अंग भारी भइले हो।
ललना खने खने चीरवा खरकी परे छणे छणे पहिरवी हो॥
नवही मास जब लागेला ननदी हंसी बोलेले हो।
ललना कब तोरा होइहें नन्दलाल त मोतिया लुटाइबो हो॥
दस ही मास जब लागेला होरीला जन्म लेले हो।
ललना राजा दशरथ घर मंगल सुनत सोहावन हो॥
कौशिल्या के राम जन्मेले सुमित्रा के लक्ष्मण हो ललना कैकेई के
भरत भुआल तीनों घरे सोहर हो।
मंगल गाइब सुनाइबी परम पद पाइबी हो ललना तुलसी दास
पद गावे परम पद पावेरले हो।

३३७

कौल करार जब पुजले देवकी गृह आइल रे।
ललना एक ही मास जब बितले दूसर निअराइल रे।
दूसर मास जब बितले तीसर निअराइल रे।
ललना चौथा मास जब बितले देवकी पिअराइली रे।
चउथ मास जब बितले पांचवे निअराइल रे।
ललना छव ही मास जब बितले देवकी पिअराइली रे।
छव ही मास जब बितले सातवें निअराइल रे।
ललना आठ ही मास जब बितले देवकी अंग भारी भइले रे।
आठ ही मास जब बितल रे नवहिं निअराइल रे।
ललना नव ही मास जब बितले देवकी वेदनाइल रे।
घरी रात गइली पहर रात औरी पहर रात रे।
ललना जामि गइले त्रिभुवन नाथ अन्धेरा घर अंजोर भइले रे।
छुट गइले हाथ के हथकड़ी तो गोड़वा के गोड़तरी करे।
ललना खुलि गइले वजर किवाड़ पहरू सब सोइ गइले रे।
भादव रैन घनेरी जन्म जुग रोहिणीउ रे।
ललना जन्मेले त्रिभुअन नाथ अनाथ के पालक रे।
जन्म लिहले जदुनाथ त बन्धन छुटेलेउ रे।

ए ललना खुली गइले कुलीस कपाट पहरू सब सोयी गइले रे।
शंख चक्र गदा पद्म चक्र सुदर्शन रे।
ए ललना गले बैजन्ती के माल श्रवण शोभे कुण्डल रे।
से देखी देवकी डेरानी औरी सकुचानी
ए बाबुल धरना मनुजअवतार त मोहि जुड़ावहु रे।
भादो रैन घनेरी त पथो नाहीं सुझेला रे।
ललना गोदिया लिहले घनश्याम त भइलै पुर बाहर रे।
से देखी जमुना पुन फेंकली हे ललना ठाढ़ भइले वासुदेव।
मन ही मनाओं झखे कैसे के पार उतरबी रे।
से देखी हरी मुसुकइलेन औरू मुसुकइलन रे।
ए ललना लटका देले आपन चरणवा यमुना भइली थाह रे।
पार भइले वासुदेव त नन्द गृही पहुंचेले रे
हे ललना बाजे लागल आनन्द बधाव महल उठे सोहर रे
सूरदास सोहर गावेले गाइ के सुनावेले रे।
हे ललना जुग जुग होखे कल्याण सदा सुख पावेले रे।

३३८

कहंवा ही कृष्ण जी के जन्म भए हो जन्म भए हो
कहंवा ही बाजेला बाधाव कहां उठे सोहर हो।
मथुरा ही कृष्ण जी के जन्म भए अहो गोकुल बाजेला बधाव नन्द ही घर सोहर हो।
जन्महु ए बाबु जन्महु मोही जुड़ावहु हो बाबु तोरी मइआ दर्द ब्याकुल नैना दुनो नीर ढ़रे हो।
जन्मव ए माएर जन्मव तोहीं जुड़ावाइब बाबा वंस रोपव हो
माएर भईलहीं लुगवे सुतइबु अरे फटीवो लावेलु हो
जन्महु ए बाबु जन्महु बाबा वंस रोपहु मइया जुड़ावहु हो
बाबु सोरही के दुधे नहवईवों पीताम्बर पहीरइवो सीहासन बैठाइब बाबु कह बोलाईव हो ॥
बाबु के मथवा लुटुरीया बहुत नीक लागे बहुत छवी छाजेला हो।

बाबु उर वैजन्त्री के माल त गोकुला वीराजेला हो ।
बाबु के छोटे छोटे पंउआ पैजनीआ भल शोभे सो पैजनीया
भले शोभेला हो ।
बाबु कमरे करधनी जड़ावत गोकुला बीराजेला हो ।
बाबु के बड़ अंखीया कजरवा भल शोभे कजरवा भल शोभेला हो
बाबु फुआ कुन्ती देई रानी त गोदीया सोहावन हो ॥

मुन्डन

मुन्डन

३३६

सोने के खड़ाउआं कवन भइआ बहीन बहीन करे हो।
कहां गैली बहीनी कवन देई झालर परीछहु हो।
क्या बहीनी पहीरेलु नेत साड़ी कीया तुहुँ रातुल हो?
नाहीं भैया पहीरीला नेत साड़ी नाहीं हमरातुल हो।
भैया पीअर वस्त्र हम पहीरव झालर परीछव हो।

३४०

पांच ही पान के बीड़वा त लवंग डोभल हो।
नऊआ सगरे नेवत देई आव ललन जी के मुन्डन हो।
नउआ नेवतहु कुल परीवार ललन जी के मुण्डन हो।
गया नेवतो गजाधर और नेवतो प्रयाग हो।
काशी नेवतो विश्वनाथ ललन जी के मुन्डन हो।

३४१

मचीया वैठल सासु त भुईआ कवन बहु उघटा पुरान कर हो।
सासु अस गंभैतिन ननदीआ आजुवो ना आवेली हो।
सासु मानीक अस मोरा लड्डु तो फोर २ खाइली हो।
सासु अस गंभैतिन ननदीआ नेवत नाही आवेली हो।
दुअरा ही घोड़ा हेहनइले बादल घहरइल हो।
खीरकी ही डड़ीआ झलकली ननद रानी आवेली हो।
कीया भौजी भेजलु तु नउआ त कीया रे भतीजवाहु हो।
भौजी कीया तुहु भइआ पठवलू गर्भ मोरा उघटेलु हो।
नउआ भेजेले मैं दस वेर ब्रह्मन पचास वेर हो।
जीजी सोरहौ शृंगार सहोदर मोरा से हो फिर आवेले हो।

३४२

अंगना में ठाढ़ी कवनी फुआ देव मनावेली हो।
जनी देव गरीजहु जनी देव बरीसहु जनी झर लावहु हो।
आज भतीजवा के मुण्डन हम झालर परीछव हो।

३४३

अरे अरे बाबा कवन लाल सिर छत्र चढ़ावहु हो।
अरे अरे दादी कवन देई सिर आंचल डालहु हो।
आज ललन जी के मुण्डन फुआ लट परिछहु हो।
परिछव ए बाबू परिछव परिछी देखाइव हो।
पांच मोहर एक चीर भतीजवा नेछावर हो।

३४४

चौका ही बैठले कवन बाबू दादी गोहरावेले हो।
दादी के जनमल फुआ वाड़ी परिछ मोरा झालर हो।
दादी के जनमल कवन फुआ फुआ झालर परिछहु हो।
आज हमार मुण्डन नेग रउरा मांगहु हो।
लेबो मैं नाके के वेसर काने के तरीवन हो।
लेबो मैं हाथ के कंगनवा त झालर परिछवी हो।

३४५

अरे २ स्वामी कवन राजा कहल कुछ मानहु हो।
बारह बर्ष के लाल भये तुहु मुण्डन करावहु हो।
अरे २ धनीया कवन देई कहल कुछ मानहु हो।
चाहेला घीव गुर गेहुँ ब्राह्मन भोजन हो।
चाहेला धोती से पोथी मोतीया गठवन्धन हो।

चैता

चैता

३४६

सब सखी झारे लम्बी केशीआ हो रामा।
जमुना किनारे सब सखी०
केशीआ सवारे जुरवा वन्धावे
लाले लाले मोतिआ लगावे हो रामा। जमुना किनारे०
जमुना किनरवा कन्हैआ रखवारवा
मांगे वाला रे जोबनवा हो रामा। जमुना किनारे०
राधे गले जुही के हारवा कृष्ण गले पहीनावे हो रामा।
जमुना०

३४७

पीआ गेले कौना देश कोएलीया कुहुकत बन में।
एक तो कोएलीया दूसरे सौतिया तीसरे पीआ परदेश।
कोएलीया०
एक तो बैरन मोरी सासु ननदीआ दूसरे पीआ परदेश।
कोयलीया०

माता के गीत

[illegible]

माता के गीत

३४८

आज सुदिन दिन मैया अईली अंगना
भवानी अइली अंगना।
चनन पीसइआ पोतावो घर अंगना।
चनने मइआ के पांवे रूनु वाजे अंगना।
रूनु भुनु नाचेली गावेली अंगना।
केथीन के मईआ के खाट खटोलवा।
केथीन के लागल चारो पउआ।
सोना ही के मइआ के खाट खटोलवा।
रुपे के लगली चारो पउआ।

३४६

एक किअरिया में दवना मड़ुआ दूसरे किअरिया में धूप।
तीसरे किअरिया में ठाढ़ी सितल मइआ।
धड़ीए धड़ीए नव रूप चलु रे बभीनिया, पुतर भीखी मांगे
पुत्र बिनु कायरा अन्हार।
चल ए सजन लोग पुत्र भीखी मांगे पुत्र बिनु कायरा अन्हार।
पुत्र ना देबु मइया जोगिनी होइवो से पुत्र बिनु कायरा अन्हार।
चलु रे बभिनिया पुत्र भीखी मांगे।

३५०

देवी के मांगे टीका शोभे मोतिया के ललकारी हे भवानी।
लट खोल दे भवानी तोरा लट में काला नाग बसे।
देवी के नाके बेसरी शोभे,झुलनी के ललकारी हे भवानी।
लट खोल दे भवानी तोरा लट में काला नाग बसे।
देवी के गले हसुली शोभे जुगनू के ललकारी हे भवानी।
लट खोल दे भवानी तोरा लट में काला नाग बसे।
देवी के बांह बजुआ शोभे पहुँची के ललकारी हे भवानी।
लट खोल दे भवानी तोरा लट में कालानाग बसे।

३५१

मइआ के दुआरे हराहर पीपर चलु दरशन कर आईं ।
माया मोहनी भवानी शीतली मइया कालीका भवानी ।
देवी के दुआरे अंधरा पुकारे ।
दीहीं नैन मोहनी भवानी घर जाईं अपना ।
भवानी देवी के दुआरे कोढ़िया पुकारे ।
दीहीं काया घर जाईं अपना ।
देवी के दुआरे बझनी पुकारे ।
दीहीं पूतर घर जाईं अपना ॥

३५२

भवानी का डेरा कहां है ?
चन्द्रबदन मृगलोचनी का डेरा कहां है ?
भवानी का डेरा कहां है ?
सोने की चउकी महुआ रतन जड़ी है ।
सातो बहीनी के आनी बइठाहूं ।
भवानी का डेरा कहां है ?
लाल धजा फहरानी ।
महरानी का डेरा कहां है ?
सोने के झारी गंगाजल पानी ।
मइया के पैरा पखारूं ।
भवानी का डेरा कहां है ?
चन्द्रबदन मृगलोचनी ।
भवानी का डेरा कहां है ?

३५३

माई मोरा आगई अगनवां नीहुर के पइयां लागों ।
सोने की चउकी मइया रतना जड़ी है ।
सातो बहीनी के आनी बइठाहूं नीहुर के पईयां लागों ।
सोने के थारी में रख द छोहाड़ा ।

देवी के आनीं जेवावहूं नीहूर के पइयां लागों ।
सोने के भारी गंगाजल पानी ।
सातो बहिनीआं के पानी पीआवहूं नीहुर के पइआं लागों ।
सोने के दीअरा कपूरा के बाती ।
सीतल के आरती उतारू नीहूर के पइयाँ लागों ।

कज़ली

कज़ली

३५४

नकिया पहिन लवँगिया जनिया जिअरा घायल कइलू ना ।
शान बुझवलू जिआ तरसवलू पागल कइलू ना (टेक)
दिनवा कहलु अइवों प्यारे रतिया राह तकवलू ना (टेक)
कहे सियाराम बहुत धन खइलू मोहि के पागल कइलू ना ।
नकिया पहिन लवँगिया जनिया जिअरा घायल कइलू ना ।

३५५

सजनी टूट गयी मोरी चुड़िया
सैंया सेजरिया पर तोड़ी ना ।
चुड़िया तेरे मैके से आइल
क्या भेजा यार ना (सजनी०)
ना चुड़िया मोरे मैके से आइल
ना भेजा यार ।
ना चुड़िया ननदोइया ने भेजा
छोटकी ननदी के हाथ ना ।
सजनी टूट गयी मोरी चुड़िया
सैंया सेजरिया पर तोड़ीना ।

३५६

मोरवा बोले बार बार पपिहा करेला पूकार ।
नहीं आये दिलदार घेरी आई बादरा ।
बादरा गरजे बार बार बिजुली चमके अपार ।
नहीं आये दिलदार घेरी आई बादरा ।
नहीं आये दिलदार जीआ डरपे हमार घेरी आई बादरा ।

३५७

मुरली वाले हो कन्हैया मोरा जीअरा लेले जाय ।

लौका लौके विजुली तड़पे रही रही जीश्रा घबराय।
मुरली वाले हो कन्हैया मोरा जीश्रा लेले जाय।
बदरा गरजे पानी बरसे रही रही जीश्रा तरसाय।
मुरली वाले हो कन्हैया मोरा जीश्रा लेले जाय।

३५८

सावन खेलो ना कजलीया ए भदउश्रा कीचकील हो॥
रीमी झीमी खोलना केवड़िया हम विदेशवा जइबो ना ॥ १॥
जाहु तुंहु ए पीश्रा विदेशवा जइब ना, हमारा भइश्रा के बोला द हम नैहरवा जैबो ना ॥ २॥
जाहु तुंहु ए धनी नैहरवा जइबुना, जेतना लागल वा रुपैया वोतना देके जइह ना ॥ ३॥
जाहु तुंहु ए पीश्रा रुपैया लेवना, जैशन बावा घरवा रहलीं वैसन करके जइह ना ॥ ४॥
जाहु तुंहु ए पीश्रा विदेशवा जइबना, अपना हाथ के रूमलिया हमके देके जइह ना ॥ ५॥
जब जब ए पीश्रा मनवा परव ना, तोहरा हाथवा के रूमलिया देखि धीरजवा धरबो ना ॥ ६॥

३५९

अइले सावन के महिनवा पिश्रा विना मोहि ना सुहाय।
रीमी झीमी रीमी झीमी बुन्द पड़तु हैं, रही रही जीया अकुलाय।
अइले सावन के महिनवा पिश्रा बिना मोही ना सुहाय।
आप पिश्रा अति वीवश पड़े हैं, आप पिश्रा अतिवीवश पड़े हैं विदेशी अकुलाय।
अइले सावन के महीनवा पिश्रा बिना मोही ना सुहाय।
जब मोरे सैयां ऐहैं भवनवा, जब मोरे सैयां ऐहैं भवनवा मंगल काज संवार।
अइले सावन के महिनवा पिश्रा बिना मोही ना सुहाय।

विना मोरे सैयां निन्द न आवे, विना मोरे सैयां निन्द न आवै।
गुरू मुख चित घबड़ाय।
अइले सावन के महिनवा पिआ विना मोहि ना सुहाय।

३६०

सावन उमड़ी घुमड़ी घन बरसे तरसे जीया सखी री मोर।
मोर की बोली कटावन लागे मोर की बोली कटावन लागे
दादुर करे घनघोर।
सावन उमड़ी घुमड़ी घन बरसे तरसे जीया सखी री मोर।
पिऊ पिऊ करि के पपीहरा बोले झींगुर की झनकोर।
सावन उमड़ी घुमड़ी घन बरसे तरसे जीया सखी री मोर।
ताल तलैया नदी आदी सब उमड़ी चली चहुँ ओर।
सावन उमड़ी घुमड़ी घन बरसे तरसे जीया सखी री मोर।
रीमी झीमी बुन्द बहत चहुआई नहिं आये चित चोर।
सावन उमड़ी घुमड़ी घन बरसे तरसे जीया सखी री मोर।

३६१

सूरतिया तोरी प्यारी सी संवलिया
मांग मोतिन से संवारी लट नागिन सी है कारी
अंखिया है रतनारी रे संवलिया।
जिन्हे ताकी एक बारी मारी नैना की कटारी
गजब करती जादू डारी रे संवलिया।
ओढ़े पंचरंगी है साड़ी अंगिया सोहे बूटेदारी
झूम झूम पग धारी रे संवलिया
सूरतिया तोरी प्यारी रे संवलिया।

३६२

तुमसे लागल बा नजरिया मोरी प्यारी सखिया
तिरछी भौं कमान को तान जान नैनों से मारी शान

घायल घुमत बजरिया मोरी प्यारी सखिया ।
जोवना नारंगी सन गोल देखकर जिया भया डवांडोल
झमकत चलत डगरिया मोरी प्यारी सखिया ।
बभी थी देख दिवाना शान जान तू पूरा कर अरमान
रसी रसी मारी गुजरिया मोरी प्यारी सखिया ।

३६३

हमरा छोटा सा संइयां अबहीं ना सयान बाय
निपट नादान बाय ना ।
अबतो चढ़ी जवानी जोर कैसे राखूं दिल बटोर ।
राजा छतिया पर जोबनवा ऐसे उघार बाय निपट नादान बाय ना ।
चुन चुन कलिया सेज लगाऊं छोटे दुलहा को सुलाउँ
उस दम के कलेजा जैसे लागे बान बाय निपट नादान बाय ना ।
कबहुँ मोर संग ना सोवे बैठ पलंग पर रोवे
गोरिआ देखत बलमुआ जैसे भुखान बाय निपट नादान बाय ना ।
ऐसे बालम निपट अनारी अपने बलमा से मैं हारी
जैसे बोझ के नीचे राजा मोर दवान बाय निपट नादान बाय ना ।
कबतक ताकूं बैठ के रहिया इन कर आइ जमाना कहिया
अब बलमू पर लागत मोर ध्यान बाय निपट नादान बाय ना ।

बरसाती



बरसाती

३६४

आधी राति सावन में भीसी सईआं संग खेलों पचीसी ना
सोने के थारी में जेवना परोसलो जेवना जेवे ना
आधी राति सावन के भीसी सईआं संग खेलों पचीसी ना।

३६५

जनीआ कइलु करार बैठक में रतिया कहां गंववलु ना
सोने के थारी में जेवना परोसलो जेवना जेवे ना
जनीआ कईलु करार बैठक में रतिया कहां गवंवलु ना।

३६६

झूला झूले राधे प्यारी संग में लिये बिहारी ना
सोने के थारी में जेवना परोसलो जेवना ना जेवे ना
झूला झूले राधे प्यारी संग में लिये बिहारी ना।

३६७

सखी हो राम लक्षमण सीता रानी कवना घने बाग गईले ना
सोने के थारी में जेवना परोसलो जेवना न जेवे ना
सखि हो राम लक्षमण सीता रानी कवना घने बाग गईले ना।

जतसार

जतसार

३६८

अबही उमिरिया मोरी बारी हो कैसे आंऊ रउआ सेज
बाबा न अन्हारी दिन सोच न हमारी न्यारी
अब छुट जइहें बाप महतारी हो।
हमरी उमरिया जैसे नेनुआ के भतिया बाटे
आरे वैसे नवे मोरी करीहइया हो
लचकी जइहें करीहइया हो कैसे आंऊ रउआ सेज।

३६९

मोरे पिछुअरवा मिरीई के गछिया, मिरीई फुलेले कचनार
फुलवा में लोढ़ी लोढ़ी रसवा चुवबली रसवा से चुनरी रंगवली
चुनरी भइले चटकार।
चुनरी पहिरी हम चलली बजरिया सूनवे मिरीई रे बटिया
रोकेला सरकार
मोरे पिछुअरवा बटोही हित भैया हमरो सन्देश लेले जा।
मोरे सन्देशवा प्रभु आगे कहीह तोरे धनी रोके सरकार।
इतना बचन प्रभु सुनहीना पवले घोड़ा पीठी भइले असवार
घोड़वा त बांधे प्रभु लंवगी के गछिया नइ नइ करेलन सलाम।
तोरी धनी ए भैया गरभी गुमरिया बटिया चलेली अठिलात।

३७०

मोरा पिछुअरवा कदम गाछ रे सखवा,
ताही पर छैला सेजीया डसावे ये सजनी॥
माल भर अवटन कटोरवा भर तेलवा
मिसाही चलेली रुकमीन गोड़वा ये सजनी॥
गोड़वा मीसली बहीयां मिसली मुंहवा
मीसत गुणका टपकल ये सजनी॥

कीया तोर रजउ माई याद परली
कीया तोरा सहोदर जेठ भाई ये सजनी ॥
नाहीं मोरा रुकमीन माई मन परली ।
नाहीं हो सहोदर जेठ भाई ये सजनी ॥
मोरा मन परली मालीनी बीटीया ।
जीनका संग खेलली जुआ सार ये सजनी ॥
धाइ तुहु नउवा, धाइ तुहु वरीया ।
मालीनी बीटीया पकड़ के ल्यावइ ये सजनी ॥
मालीन बीटीया अइली दुआर ठाढ़ भइली ।
कीया रानी के परेला हंकार ये सजनी ॥
मोही तोसे पुछीला मालीनी छोकड़ीया ।
कैसे २ राजवा भोरवलु ये सजनी ॥
फूल तोरे गइली मैं बाबा की रे बगीया ।
तोहरे राजा रोरीया से मरलन ये सजनी ॥
तोहरे राजवा त हंसले व हमहूं विहंसली ।
ऐसे ऐसे रजवा भोरवली ये सजनी ॥

३७१

देहू देहू सासु डाल भर गेहूंआ,
हम ना पीसव केइ से पीसाइव ये सजनी ।
हर हर जांतवा चले भर भर पिसना गिरे ।
अब गाई गाई गीतीया सवेरे ओरवाइव ये सजनी ॥
अब सफा से चुहानी जाइब, अब रची रची के रोटी पकाइब ।
अब छोठका से कहके संइया के बोलाइब ये सजनी ॥
कहे ले भिखारी नाई, पूरी तरकारी मलाई ।
बेनीया डोलाके संइया के पवाइब ये सजनी ॥

३७२

सेर भर गेहूंआ हो रामा गइलौं जतसरिया हो रामा ।
जुअवा धरी कामीनी रोवेली जतसरिया जी ।

जांतवा ना चले हो रामा मकरियो ना डोले हो ।
जंतवा धरी कामिनी रोवेली जतसरिया जी ।
बाट के चलत बठोहिया हित भैया हो ।
हमरो सन्देशवा लेले जइतौ रे जी ।
हमरो सन्देशवा हो रामा पिअवा से कहीह ।
तोरी धनी रोवेली ओही जतसरिया जी ।
पासवा खेलत तुहु राजा बढ़इता हो ।
तोरी धनी रोवेली ओही जतसरिया रे जी ।
पसवा लुढ़कले हो रामा बेल रे बबुर तर ।
झपसी पइसेले जतसरिया रे जी ।
जांत ले उठवले हो पिअवा जांघ ले बैठवले ।
आपन रूमलिया मुंहवा पोछेलें रे जी ।
अपनी रूमलिया राजा ले जइब कचहरिया ।
हमरी अंचरवा मुंहवा पोछब रे जी ।

रोपनी सोहनी का गीत

रोपनी सोहनी का गीत

३७३

रहलो मैं बाबा घरे परलो मैं कोइरी घरे,
बैंगन बिरउआ नहीं चिन्हलो ए बालम।
बैंगन बिरउआ के लम्बा लम्बा पतवा,
फूलवा फुलेला कछनारवा ए बालम।
वोही फूलवा के मैं झूमक बनवलों,
देवरा निरेखे मोर झूमकवा ए बालम।
निहुरल निहुरल मैं अंगना बहरलों,
देवरा निरेखे मोर झुमकवा ए बालम।

३७४

हमहु तो जइबो पूर्वी बनीजीआ,
तोहरा के काइ लेइ आइब रजल धनिआ।
अपना के लीह प्रभु चढ़ने के घोड़वा,
हमरा के पूर्वी छिटिआ ले अइह रजल बनिआ।
अपना के लेवो धनी छुड़िया कटरिया
तोहरा के पूर्वी बंगालिन रजल धनिया।
तुहु त ले अइह प्रभु छुड़िया कटरिया,
हमरा के पूर्वी बंगालिन चौकठ नाहीं हेले देवु रजल बनिया।
यदि तुहु ए धनी चाकठ नहीं हेले देवु
द्वारही कोठवा उठइवो रजल धनिया।
यदि तुहु ए प्रभु कोठवा उठइबो।
कोठवा के नेइया ढ़हवाइबी रजल बनियां
यदि तुहु ए धनी नेइया ढ़हवइवू,
परती पर तम्बूआ तनबइबो रजल धनिया।
यदि तुहु ए बालम तम्बूआ तनइब,
तम्बूआ के रस्सीआ कटाइबी रजल बनिया।

यदि तुहु ए धनी तम्बूआ के रस्सीआ कटइबू,
बबूरा पर खोंतवा लगइबो रजल धनिया।
यदि तुहु ए बालम बबूरा पर खोंतवा लगइब,
खोंतवा में अगिया लगइबो रजल बनिया।
यदि तुहु ए धनी खोंतवा में अगिया लगइबू,
होई जइबो जल के मछलिया रजल धनिया।
यदि तुहु ए प्रभु होइब जल के मछलिया,
जाल लगाइ टान लेबो रजल बनिया।
यदि तुहु ए धनी जलवा लगइबू,
होइ जइबो स्वर्ग के मेड़रिया रजल धनिया।
यदि तुहु ए प्रभु होइब स्वर्ग के मेड़रिया वनिआ,
रस्सीया लगाइ खिचवइवी रजल वनिया।

३७५

पूरब देशवा से अइले नेटुअवा कौन सांवर गोदना गोदइहन।
घर में से निकलेली पतरी त्रीअवा हम सांवर गोदना गोदाइबी।
हरी के लाल बांह भर गोदलें केहुनी भर गोदलें।
छतिया गोदलें अनमोल मोरे हरी के लाल।
क्या लेवे नेटुआ से संउआ से कोदइया मोरे हरी के लाल।
क्या लेवे नन्दो जवान हरी के लाल।
हर जोतेलें कुदारी मोरे हरी के लाल।
ओरी तर बइठे मन मारि मोरे हरी के लाल।
सब कोई लउके अलकत से झलकत।
छोटकी बहिनिया कहां बा हो मोरे हरी के लाल।
पूर्व से आंधी अइली पच्छिम से पानी अइले मोरे हरी के लाल।
तोरी बहिनिया गइली उधिआय मोरे हरी के लाल।
पीसहु धनिया रे नीरहुली सतुआ।
बहिना खोजन हम जाइबी मोरे हरी के लाल।
एक बने गइले दुसर बने गइले मोरे हरी के लाल।

तीसर बनवा नेटुआ के साथ मोरे हरी के लाल।
लेहुना नेटुअवा रे डाल भर सोनवा मोरे हरी के लाल,
मोरी बहिना देहु ना लौटाय मोरे हरी के लाल।
अगिया लगाइबी डाल भर सोनवा मोरे हरी के लाल
ना देबो बहिना तोहार मोरे हरी के लाल
संग लागल खइली पीठी लागल सुतली मोरे हरी के लाल,
अब कइसन बहिनी तोहार मोरे हरी के लाल।
संग लागल खइलीं पीठी लागल सुतलीं मोरे हरी के लाल,
अब भइली बिअहल हमार मोरे हरी के लाल।
तोर धनी गोदना गोदवली मोरे हरी के लाल,
उहे दिहली गोदना के दाम मोरे हरी के लाल।

३७६

नदिया के तिरवा रे हरियर घसिया,
गैया चरेली अनेक रे मुरलिया।
चरी चुरी गैया घर लौटली दुधवा बहेला छछकार,
केइ रे दुहीहन केइ जमइहें केइ गोतिन जोरन डलीहें?
ससुर दुहीहन सासु जमइहन गोतिन जोरन डलीहें,
अपने त बेचे सासु अयड़ा से गोयरा,
हमके भेजावे यमुना पार रे मुरलिया।
एक बने गइलों दुसर बने गइलों,
तीसर बने कान्हा बटवरवा रे मुरलिया।
जात यमुन ठेहुन भर पनीया,
आवत यमुन अब धार रे मुरलिया।

३७७

बोवलो मैं गेहूंआ उपज गइले भेखरी,
डड़वा बैठी प्रभु झंखेलन रे दैया।
का तुहु ए प्रभु डड़वा बैठी रउरा झंखीला रे दैया,
आरे अंकरी बदली गेहूंआ पीसबी रे दैया।

पीसत कुटत मोरी धनी दुबरइली,
हम जइबो चेरिया लेआवन रे जीव।
चेरिया ले आवन गइले प्रभु सवती ले अइलन।
सभवा बैठलन तुहु सासु बढ़इतीनी,
सासु नेवती कइसे घुमनी रे जीव।
तुहु ए बहुआ लाली दुड़िया,
छीपा भर खीर बिचवा महुरवा के गांठ।
खात पिअत कपरा घूमल जाइ,
सूतेली गज वोबर रे जीव।
हर जोती अइले कुदारी वोरिया तर,
बैठे मन मारी रे जीव।
सब के त देवो अम्मा अलकत झलकत
पूर्वी बंगालिन के का देबो।
पूर्वी बंगालिन राउर गरभी गुमनिया,
जाई सुतेली गजबोबर रे जीव।
एतना बचन पुता सुनहीना पवले,
बन पैसी काटेले छीटकिलिया रे जीव।
एक छिटकिली मरले दूसर छिटकिली मरले,
तवोना घुमेली करवटिया रे जीव।

